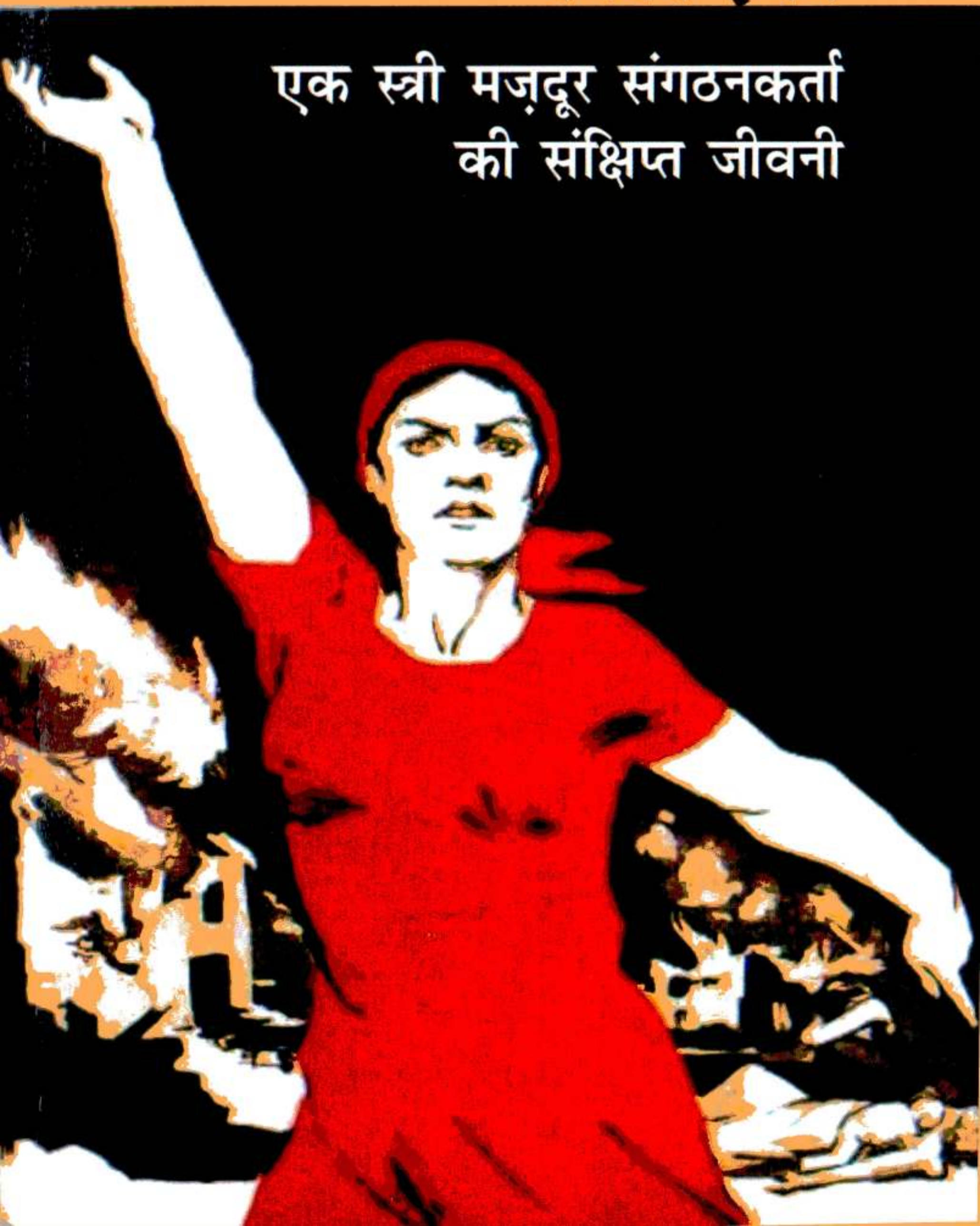
अदम्य बोल्शेविक नताशा

एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी



अदम्य बोल्शेविक नताशा

एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी

एल. काताशेवा

अनुवाद : विजयप्रकाश सिंह

राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN 978-93-80303-20-8

मूल्य : ₹30.00

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2010

प्रकाशक : **राहुल फ़ाउण्डेशन**
69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण : **रामबाबू**

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

Adamya Bolshevik Natasha *by* ***L. Katasheva***

प्रकाशकीय

कोई भी सामाजिक बदलाव आधी आबादी की भागीदारी के बिना सम्भव नहीं हो सकता। रूस की अक्टूबर क्रान्ति में भी बड़ी संख्या में स्त्रियों ने हिस्सा लिया था और बहादुरी, सूझबूझ और कुर्बानी की हज़ारों मिसालें क़ायम की थीं। क्रान्ति के हर मोर्चे पर स्त्रियों ने पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया था।

क्रान्ति के लिए मज़दूरों को संगठित, शिक्षित और प्रशिक्षित करने के लिए जिन हज़ारों बोल्शेविक कार्यकर्ताओं ने बरसों तक बेहद कठिन हालात में, ज़बरदस्त कुर्बानियों से भरा जीवन जीते हुए काम किया, उनमें बहुत बड़ी संख्या में स्त्री बोल्शेविक कार्यकर्ता भी थीं। ऐसी ही एक मज़दूर संगठनकर्ता थीं नताशा कोंकोर्दिया समोइलोवा। छात्र जीवन से ही वह मज़दूरों के बीच काम करने लगी थीं और अपनी आख़िरी साँस तक क्रान्ति के लिए काम करती रहीं। क्रान्ति के ठीक बाद के वर्षों में मज़दूरों के राज को उखाड़ फेंकने की साज़िशों में लगे प्रतिक्रियावादियों की कोशिशों से जूझते हुए मज़दूरों के बीच क्रान्तिकारी प्रचार के कामों के दौरान हैजे से उनकी मौत हो गयी।

नताशा समोइलोवा अद्वितीय निःस्वार्थ भावना वाली पार्टी कार्यकर्ता थीं। वे एक बढ़िया, व्यावहारिक वक्ता थीं और मज़दूर औरतों का दिल जीतना जानती थीं। वे बिल्कुल सादी पोशाक पहनती थीं और सरल व्यवहार करती थीं, किन्तु निर्णयों का कार्यान्वयन पूरी निष्ठा के साथ करती थीं – खुद के साथ और दूसरों के साथ भी पूरी सख़्ती बरतते हुए। उनकी यह संक्षिप्त जीवनी उनके छोटे मगर सक्रियताओं से भरे जीवन की घटनाओं के साथ ही उस दौर में रूस में मज़दूर आन्दोलन की कठिनाइयों, चुनौतियों और व्यावहारिक कार्यों की झलक भी पेश करती है। हमें विश्वास है कि आम पाठक को भी

यह रोचक और प्रेरक लगेगी और मज़दूरों तथा मज़दूर कार्यकर्ताओं को इससे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

मज़दूर अख़बार 'नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक बिगुल' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित इस अनुवाद को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करते समय हमने इसमें किंचित संशोधन किये हैं।

– राहुल फ़ाउण्डेशन

1.1.2010

अदम्य बोल्शेविक नताशा

स्कूल और कॉलेज के दिन

पेशेवर क्रान्तिकारी बोल्शेविक कांकोर्दिया निकोलायेव्ना ग्रोमोवा-समोइलोवा हमारी पार्टी से उस समय जुड़ीं जब लेनिन के नेतृत्व में पुराने बोल्शेविकों की बुनियादी क़तारें ढाली जा रही थीं। कम्युनिज़्म के इतिहास में उनका नाम एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दर्ज रहेगा जिसने इस लेनिनवादी सिद्धान्त पर कुशलता से अमल किया कि सर्वहारा के सबसे पिछड़े तबके को लड़ाकों की क़तार में शामिल करना, सर्वहारा स्त्रियों को सक्रिय संघर्ष से जोड़ना आवश्यक है।

कॉमरेड समोइलोवा एक पादरी की बेटी थीं, और हालाँकि उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि सर्वहारा के अन्तरराष्ट्रीय और धर्मविरोधी विचारों के प्रतिकूल थी, इसके बावजूद वह साइबेरिया के इर्कुत्स्क, जहाँ उनका जन्म हुआ था, के रूसी जीवन के स्पष्ट अन्तरविरोधों से प्रभावित हुए बिना न रह सकीं।

हाईस्कूल के दौरान ही, कॉमरेड समोइलोवा युवा क्रान्तिकारियों के एक समूह के सम्पर्क में आ गयीं। हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए सेण्ट पीटर्सबर्ग गयीं। वह फ़ौरन उन 'राजद्रोही' छात्रों की जमात में शामिल हो गयीं जिनसे ज़ारशाही बड़े हिंसक ढंग से निपट रही थी।

वह क्रान्तिकारी उभार के उस दौर में सेण्ट पीटर्सबर्ग पहुँची थीं जब मज़दूर तबका क्रान्तिकारी संघर्ष (1896 की सेण्ट पीटर्सबर्ग की हड़तालें) के मंच पर पहली बार सामान्य से अधिक ऊर्जा के साथ उभरा था, जब ज़ारशाही सरकार ने क्रान्तिकारी छात्रों की मार्क्सवादी विचारधारा के रूप में अकस्मात् एक नये दुश्मन की शिनाख़्त की थी।

कॉमरेड समोइलोवा खुद को आम युवा आन्दोलन से अलग नहीं रख सकीं।

जिज्ञासु चेतना और दृढ़ चरित्र की धनी कॉमरेड समोइलोवा तत्काल ही योद्धाओं की क़तार में शामिल हो गयीं।

पीटर और पॉल के क़िले में हुई एक भयावह घटना के बाद 1897 में सारे छात्र क्रोध से भड़क उठे थे। एक राजनीतिक क़ैदी एम. एफ. वेत्रोवा ने एक लैम्प के मिट्टी के तेल से अपने कपड़े गीले करके आग लगा ली और बुरी तरह जल जाने से उनकी दर्दनाक मौत हो गयी। सशस्त्र पुलिस द्वारा सभी घटनाओं के बारे में इसी प्रकार की कहानी बतायी जाती थी, लेकिन विदेशों में यह चर्चा थी कि दुर्व्यवहार के बाद वेत्रोवा को ज़िन्दा जला दिया गया था। इस भयावह घटना ने समोइलोवा पर गहरा प्रभाव डाला। छात्राओं ने इसके विरोध में प्रदर्शन करने और सभी विश्वविद्यालयों के तमाम छात्रों को जगाने का संकल्प किया। एक व्याख्यान कक्ष में बैठक बुलायी गयी। एक "समझदार" छात्रा ने विरोध प्रदर्शन आयोजित करने के ख़िलाफ़ भाषण दिया। तत्काल एक दूसरी छात्रा, जिसके बारे में कुछ ही लोग जानते थे और जो तब तक उतनी नामचीन नहीं थी, फौरन मंच पर आयी। विरोध प्रदर्शन का आह्वान करते हुए उसने ऊँचे और उत्तेजित स्वर में बोलना शुरू किया। वह समोइलोवा थीं। उनके जोशीले भाषण ने श्रोताओं को उद्वेलित कर दिया। सबने विरोध प्रदर्शन के पक्ष में वोट दिया।

समोइलोवा की जुझारू भावना ने स्वयं को अभिव्यक्त कर दिया था। अपने जीवन में पहली बार वह सार्वजनिक तौर पर बोली थीं, जो खुद उनके लिए भी अनपेक्षित था।

उस पहले भाषण ने उनका भावी जीवन तय कर दिया। उन्होंने पूँजीवादी विज्ञान के "गम्भीर अध्ययन" को त्याग दिया जिसे विश्वविद्यालयों के ज़ारशाही समर्थक प्राध्यापकों ने मृत और जीवन से काटकर अलग कर दिया था।

सरकार ने 1901 में इस आशय का क़ानून पारित किया कि गड़बड़ी करने वाले छात्रों को अनिवार्य भर्ती के तहत फ़ौरन सेना में भर्ती किया जाये। उस विशाल देश में जहाँ शिक्षित लोग अज्ञान और अशिक्षा के सागर में बूँद की तरह थे, इस क़ानून ने छात्रों के मन में गुस्से की आग भड़का दी। प्रतिरोध करने वालों में समोइलोवा भी शामिल थीं।

नतीजतन उनके कमरे पर छापा मारा गया, गिरफ़्तार करके उन्हें जेल भेजा गया और विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया।

"फरवरी 16, 1901 को सेण्ट पीटर्सबर्ग में छात्र आन्दोलन जारी रखने के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए छात्रा फ़ोकिना के कमरे में आयोजित प्रतिनिधियों की एक बैठक से समोइलोवा को गिरफ़्तार कर लिया गया। समोइलेवा के कमरे

की तलाशी के दौरान क्रावचिंस्की का प्रतिबन्धित उपन्यास 'आन्द्रे कुझुखोव,' चेर्नीशेव्स्की का उपन्यास 'क्या करें?' और एक रिवॉल्वर मिला।"

आरोप लगाये जाने पर समोइलेवा ने स्वीकार किया कि वह फ़ोकिना के कमरे में इसलिए नहीं गयी थीं कि उससे परिचित थीं बल्कि इसलिए गयी थीं कि उन्हें पता था कि छात्र वहाँ जमा होते थे। उस बैठक में उन्होंने छात्र आन्दोलन को जनता और प्रेस से पर्याप्त समर्थन न मिलने पर चर्चा की। उन्हें वे किताबें एक छात्रा से मिली थीं और रिवॉल्वर वह साइबेरिया से ले आयी थीं जहाँ उन्होंने उसे सुरक्षा के लिए रखा था। उन पर लगाये गये आरोप तीन महीने बाद ख़ारिज हो गये, इस दौरान समोइलेवा को हिरासत में रखा गया; लेकिन उन्हें विश्वविद्यालय छोड़ना पड़ा।

तीन महीने की इस प्रारम्भिक क़ैद ने समोइलेवा को यह देखने का मौक़ा दिया कि ज़ारशाही की असलियत क्या थी, और इसमें सन्देह नहीं कि इस अनुभव ने क्रान्ति के लिए अपना जीवन समर्पित करने के उनके फ़ैसले को और भी मज़बूत किया। उन्होंने विदेश जाने और अलग और अपेक्षाकृत अधिक मुक्त परिस्थितियों में अपना अध्ययन जारी रखने का निश्चय किया, जिसमें इतना भयंकर व्यवधान पड़ गया था।

अक्तूबर 11, 1902 को वह पेरिस के लिए रवाना हुईं। पेरिस में 'फ्री रशियन स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज़' नाम का एक स्कूल था। उसका संचालन बुर्जुआ उदारवादी प्राध्यापकों का एक समूह करता था, जिनके उदार विचारों की वजह से रूसी विश्वविद्यालयों में उनके पढ़ाने पर पाबन्दी लगा दी गयी थी। रूसी विश्वविद्यालयों में ठहराव आ जाने के बाद ज्ञान के भूखे नौजवानों के झुण्ड इस स्कूल में पहुँचते थे।

उन दिनों लेनिन का अख़बार *ईस्क्रा* (*चिंगारी*) पेरिस से प्रकाशित होता था और लेनिन एवं इस अख़बार के उनके सहकर्मी उन सबसे ज़हीन युवाओं को उदारवादी प्राध्यापकों के प्रभाव से निकालने के लिए व्यग्र थे, जिन्होंने ज़ारशाही का दमन झेला था और उससे बचने के लिए पेरिस आ गये थे। लिहाज़ा वे भी इस स्कूल में लेक्चर देते थे और उसका उपयोग रूस में क्रान्तिकारी सामाजिक-जनवादी मज़दूर समुदाय में काम करने हेतु प्रचारकों के प्रशिक्षण के छोटे-छोटे कोर्स चलाने के लिए करते थे।

समोइलेवा इन कोर्सों से जुड़ीं और उनकी उत्साही छात्रा बन गयीं। इस तरह उन्हें मार्क्सवादी अध्ययन के स्कूल में पढ़ने और स्वयं लेनिन के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में सैद्धान्तिक प्रशिक्षण पाने का सुअवसर मिल गया।

पहली रूसी क्रान्ति के दौरान व्यावहारिक कार्य

(त्वेर, एकातेरिनोस्लाव, ओदेस्सा, बाकू, मास्को और अन्य कस्बे)

समोइलोवा को व्यावहारिक काम का पहला अनुभव त्वेर में मिला जहाँ वह 1903 की गर्मियों में आरएसडीएलपी (रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी) के दूसरे अधिवेशन से कुछ ही दिन पहले पेरिस से लौटने के बाद सीधे पहुँचीं थीं। (*आजकल सामाजिक-जनवादी शब्द का अर्थ नकली कम्युनिस्ट होता है, लेकिन उन दिनों सच्चे कम्युनिस्ट सामाजिक-जनवादी ही कहलाते थे। – अनु.*)

समोइलोवा के त्वेर पहुँचने से कुछ ही दिन पहले आरएसडीएलपी की त्वेर कमेटी पर छापा मारकर उसके ज़्यादातर सदस्यों को गिरफ़्तार कर लिया गया था। इस तरह समोइलोवा का आगमन सही समय पर हुआ। वह कमज़ोर पड़ गये सामाजिक-जनवादी संगठन को मज़बूत करने आयी थीं, जो विदेश से *ईस्क्रा* द्वारा भेजे जाने वाले निर्देशों के तहत संघर्ष चला रहा था।

गिरफ़्तारी से किसी तरह बच गये कॉमरेडों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, और जल्द ही वह कमेटी की सदस्य चुन ली गयीं। समोइलोवा ने पहली मुलाक़ात में त्वेर कमेटी की सदस्य कॉमरेड कुदेल्ली पर जो छाप छोड़ी वह उसका वर्णन इस तरह करती हैं :

"वह नौजवान लड़की थीं," वह कहती हैं, "लम्बी, छोटी-भूरी चमकीली आँखों और चमकदार, धूप से सँवलाई रंगत वाली। उनका चेहरा-मोहरा असमान था और उनकी हल्की तिरछी भौहें उनको किसी हद तक मंगोलियाई या चीनी शक्ल-सूरत प्रदान करती थीं। कुल मिलाकर वह एक हँसमुख और मिलनसार व्यक्ति का प्रभाव छोड़ती थीं। उनको देखना आनन्ददायी होता था। उन्हें देखकर लगता था कि जैसे वह हमेशा सेवा के लिए प्रस्तुत हों, अपने काम में दिलोजान से लग जाने के लिए तैयार हों।"

ज़ारशाही रूस में भूमिगत रहकर काम करने वाले क्रान्तिकारियों के रिवाज़ के मुताबिक कॉमरेड समोइलोवा ने अपनी पहचान छिपाने के लिए एक छद्म नाम रख लिया। कॉमरेड उन्हें "नताशा" कहने लगे और अपने गुप्त क्रान्तिकारी काम की पूरी अवधि के दौरान वह इसी नाम से जानी जाती रहीं। (*भूमिगत जीवनकाल की चर्चा करते समय हम समोइलोवा को "नताशा" ही कहेंगे।*)

वह प्रचार-कार्य का महत्त्व समझती थीं क्योंकि पेरिस की सामाजिक-जनवादी कक्षाओं में उन्हें उसका प्रशिक्षण मिला था और इसलिए भी कि त्वेर कमेटी के कामों में प्रचार-कार्य सबसे लचर था।

त्वेर कमेटी के सदस्य की हैसियत से उन्होंने कमेटी की रणनीतिक और सांगठनिक दिशा तय करने में भागीदारी की जिसे कि गिरफ्तारियों के बाद नये सिरे से संगठित किये जाने की जरूरत थी। यहाँ उन्होंने फ़ौरन साबित कर दिखाया कि उन्हें *ईस्क्रा* की सांगठनिक योजनाओं में महारत हासिल है, कि वह "दोस्तों के आहत होने" की परवाह किये बिना लगातार ऐसी रणनीतियाँ अपनाने में सक्षम हैं जिन्हें वह सही समझती हैं।

हालाँकि उन्हें कोई अनुभव नहीं था और वह पहली बार व्यावहारिक काम कर रही थीं लेकिन उन्होंने त्वेर कमेटी के कामकाज की ख़ामियों को समझ लिया – उसकी बिखरी प्रकृति, निरन्तरता के अभाव, और उन दूसरी ख़ामियों को जिनका ज़िक्र लेनिन के *ईस्क्रा* ने किया था।

नताशा के त्वेर आने के कुछ ही दिनों बाद दूसरे अधिवेशन में, जिसका आयोजन 1903 में विदेश में हुआ, आरएसडीएलपी बोल्शेविक और मेंशेविक, दो धड़ों में बँट गयी। विभाजन की ख़बर मिलने पर आरएसडीएलपी की त्वेर कमेटी और पूरा संगठन लेनिन के नेतृत्व का अनुसरण करने वाले क्रान्तिकारी मार्क्सवादी धड़े में शामिल हो गया और उसके बाद से स्वयं को बोल्शेविक कहने लगा। नताशा भी बोल्शेविकों के साथ जुड़ गयीं।

लेकिन उन्हें जल्द ही त्वेर छोड़ना पड़ा। उन्होंने अपने प्रचार-कार्य को अभी बढ़ाना शुरू ही किया था कि जाड़े का मौसम आ गया; और सर्दियों के मौसम में जंगलों में बैठकें आयोजित नहीं की जा सकती थीं और उनके सामने यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि अपनी बैठकें वे कहाँ किया करें। चूँकि मज़दूरों के साथ बहुत ही कम सम्पर्क था इसलिए जो भी कमरा दे सकता था उन्हें उसे स्वीकार करना पड़ता था। उनके समूह में घुस आये एक ग़द्दार ने सशस्त्र पुलिस को उनके बारे में बता दिया और नताशा को भूमिगत हो जाना पड़ा। संयोग से मज़दूरों ने उस ग़द्दार को मार डाला।

उनके भूमिगत रहकर काम करने की अगली जगह एकातेरिनोस्लाव (अब द्नीप्रोपेत्रोव्स्क) थी। यहाँ के हालात त्वेर से बिलकुल अलग थे। त्वेर उत्तरी रूस के कपड़ा उद्योग क्षेत्र में स्थित था जहाँ दक्षिण के खान और धातुकर्म उद्योग, एकातेरिनोस्लोव जिसका केन्द्र था, के मुक़ाबले मज़दूरों का अधिक शोषण होता था। उत्तरी कपड़ा उद्योग क्षेत्र में मज़दूरी सबसे कम थी और चौदह-सोलह घण्टे काम करना पड़ता था। और त्वेर के संगठन समेत समूची नॉर्दर्न वर्कर्स यूनियन लेनिन और *ईस्क्रा* की बनायी हुई नीतियों पर अमल करती थी।

दूसरी ओर, दक्षिण में विदेशी पूँजी की बदौलत पूँजीवादी विकास अधिक हुआ था, लोहा और इस्पात उद्योग बहुत विकसित था। वहाँ के मज़दूरों की स्थिति उत्तर के कपड़ा उद्योग के मज़दूरों से काफ़ी बेहतर थी। ऐसे में यहाँ स्थिति अधिक जटिल थी और मेंशेविक प्रभाव भी अधिक था। ख़ास तौर से नब्बे के दशक की औद्योगिक तेज़ी के दौरान जब रेलमार्ग के द्रुत निर्माण की वजह से रेलों के बड़े-बड़े आर्डर पूरे किये जा रहे थे, दक्षिण के सर्वहारा की स्थिति उत्तर के कपड़ा उद्योग मज़दूरों के मुक़ाबले काफ़ी अच्छी थी – उन्हें वेतन अधिक मिलता था, काम के घण्टे कम थे, वग़ैरह।

लेकिन नताशा के पहुँचने के कुछ ही दिन पहले इस जिले के मज़दूरों ने रूसी मज़दूर आन्दोलन के इतिहास में एक गौरवशाली पन्ना जोड़ा था। उन्होंने लाल झण्डे के साथ "ज़ारशाही मुर्दाबाद," "काम के घण्टे आठ करो" – जैसे नारे लगाते हुए सिलसिलेवार कई हड़तालें और प्रदर्शन किये थे। पुलिस और सेना के साथ कई झड़पें हुई थीं जिनमें कितने ही लोग मारे गये थे और घायल हुए थे और जेलें क़ैदियों से भर गयी थीं जिनके साथ बर्बर दुर्व्यवहार किया गया।

"अदम्य बोल्शेविक" नताशा

आम तौर पर हालात कठिन थे और हालाँकि बड़े कारख़ानों के मज़दूर बोल्शेविकों के साथ सहानुभूति रखते थे लेकिन शहरी ज़िलों में मेंशेविकों की भरमार थी। इन कठिन हालात में नताशा ने स्वयं को अदम्य बोल्शेविक साबित किया और अन्तिम साँस तक वैसी ही बनी रहीं। जब नताशा एकातेरिनोस्लाव में काम कर रही थीं उस वक़्त एकातेरिनोस्लाव कमेटी के सदस्य रहे कॉमरेड एगोरोव थे जो उनकी गतिविधियों का इस प्रकार ब्योरा देते हैं :

"मैं सांगठनिक काम करता था जबकि नताशा प्रचार और क़स्बे में सम्पर्क का काम करती थीं। कठिन वक़्त था वह। हम शाम के वक़्त सांगठनिक और प्रचार-कार्य करते थे जबकि रात में, जब हम थके होते थे, हम प्रायः बैठकर पर्चे तैयार करते थे। नताशा मुझे उकसाती रहतीं। मैं प्रायः थकान से चूर होकर सर हिलाता रहता और मेरे दिमाग में कोई विचार ही न आता। उसके बाद अपना ओवरकोट फ़र्श पर बिछाकर मैं उस पर लेट जाता। सुबह नताशा मुझे जगातीं और फिर से काम के लिए तैयार करतीं। इन कामों के अलावा हमें मेंशेविकों से भी लड़ना पड़ता था जो संगठन को अपने हाथ में कर लेना चाहते थे। यह कठिन और अड़ियल लड़ाई थी क्योंकि कमेटी में कुछ ढुलमुल तत्त्व थे जो मेंशेविकों के

सम्पर्क में थे। उनकी रणनीति यह थी कि एकातेरिनोस्लोव में जो भी मेंशेविक आ जाये उसे मज़दूर संगठनों में घुसा दिया जाये। नाताशा और मुझे इन हमलों को नाकाम करके मज़दूर संगठनों पर अपना प्रभाव बनाये रखना था। फ़ैक्टरी वाले जिलों में अपना प्रभाव बनाये रखने के लिए हमें अपना पूरा ज़ोर लगाना पड़ा, लेकिन हम कामयाब रहे। नताशा ने मज़दूर समूहों के बीच अपनी गतिविधियाँ चलाने में अपनी सारी ऊर्जा और ताक़त झोंक दी। हमारी हर शाम इस काम के लिए समर्पित थी। इसके अलावा हमें एक छापाख़ाना और मुद्रित सामग्री के वितरण के लिए तकनीकी मशीनरी का भी बन्दोबस्त करना था। मुझे याद है कि कॉमरेडों की अनुभवहीनता के चलते छपी सामग्री की पहली खेप का नुकसान हो गया था और हमें घोर निराशा हुई थी। सच है कि वह हमारा सारा साहित्य नहीं था लेकिन हज़ारों प्रतियाँ बेकार हो गयी थीं। लेकिन हमारी जीत यह थी कि उसी दिन, सशस्त्र पुलिसकर्मियों को धता बताकर फ़ैक्ट्रियों में बड़ी तादाद में बचे हुए पर्चे बाँट दिये गये। पर्चों की वह खेप दुर्घटनावश हमारे हाथ से निकल गयी थी। हुआ यह था कि चौकसी कर रहे एक पुलिसकर्मी ने पर्चों को अन्दर लाते देख लिया और उसे सन्देह हुआ कि वह चोरी का माल है और पुलिस ने घर पर छापा मार दिया।

"एकातेरिनोस्लोव में नताशा अपने निजी पासपोर्ट पर रह रही थीं। त्वेर वाले मामले पर पुलिस विभाग की ओर से जारी सरकुलर से उनके बारे में जानकारी पाकर सशस्त्र पुलिस उनके पीछे लग गयी। मैंने उनसे एक गैर-क़ानूनी पासपोर्ट बनवा लेने का अनुरोध किया और तक़रीबन उन्हें राज़ी कर लिया लेकिन तब तक काफ़ी विलम्ब हो चुका था। उन्हें गिरफ़्तार करके त्वेर ले जाया गया जहाँ उनके ख़िलाफ़ त्वेर और एकातेरिनोस्लोव के मामलों में आरोप लगाये गये। उनकी गिरफ़्तारी संगठन के लिए भारी आघात थी हालाँकि वह इकलौती कॉमरेड थीं जिन्हें गिरफ़्तार किया गया था। मुझे राजनीतिक पुलिस की रणनीति का अनुभव था और मैंने ताड़ लिया था कि वे उनका पीछा कर रहे हैं। लेकिन लम्बे समय तक वह यही सोचती रहीं कि मैं ज़रूरत से ज़्यादा सन्देह कर रहा हूँ। जब उन्हें यकीन आया तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी।

"मैंने एकातेरिनोस्लोव में आख़िरी बार उन्हें पुलिस थाने की हवालात के सीखचों के पीछे देखा। हवालात की खिड़की सड़क की तरफ खुलती थी और किसी ने मुझसे कहा कि मुझे उनसे मिलने की अनुमति माँगनी चाहिए। मैंने सोचा कि मैं इसका लाभ उठाऊँगा और अलविदा कहने जाऊँगा लेकिन जैसे ही मुझ पर उनकी नज़र पड़ी वह इतनी तेजी से अपना हाथ और सर हिलाने लगीं कि मुझे

लगा कि मेरे लिए भी ख़तरा मँडरा रहा है और मुझे एकातेरिनोस्लोव से दूर चले जाना चाहिए। मैंने अपना सारा काम एक बोल्शेविक कॉमरेड के हवाले करके वैसा ही किया।"

नताशा चौदह महीने त्वेर की जेल में रहीं। उनकी बहन के लम्बे और लगातार आवेदनों के बाद मास्को के पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के आदेश पर मार्च 1905 में एक हज़ार रूबल की ज़मानत पर उन्हें रिहा किया गया, जिसने उन्हें पुलिस की देखरेख में रहने के लिए अपनी पसन्द के कस्बे के चुनाव की अनुमति दी थी।

नताशा ने अपना क्रान्तिकारी काम जारी रखने के लिए दक्षिण में लौटने का फ़ैसला लिया। पहले वह बड़े बन्दरगाह और नौपोत निर्माण केन्द्र निकोलेयेव गयीं। लेकिन चूँकि उनकी निगरानी हो रही थी और जहाँ कहीं भी जातीं उसके बारे में पुलिस को सूचना देनी होती थी इसलिए वह भूमिगत काम नहीं कर सकीं। जल्द ही उन्होंने चोरी-छिपे नेकोलेयेव छोड़ दिया और ओदेस्सा चली गयीं।

जिन चौदह महीनों तक वह क़ैद में रहीं उस दौरान रूस का पूरी तरह कायाकल्प हो चुका था। देश में चारों तरफ क्रान्तिकारी उथल-पुथल मची हुई थी। जैसा कि लेनिन ने कहा, आश्चर्यजनक तेज़ी से घटनाएँ घटित हो रही थीं। लेकिन देश के शेष हिस्सों के मुक़ाबले दक्षिण कुछ पीछे था, और ओदेस्सा के सर्वहारा वर्ग ने जून की हड़ताल (जून 13-25, 1905) के इकलौते वाक़ये को छोड़कर सेण्ट पीटर्सबर्ग के सर्वहारा वर्ग के वीरोचित उदाहरण का अनुसरण नहीं किया।

ओदेस्सा का सामाजिक-जनवादी संगठन, जैसा कि नताशा ने जल्द ही भाँप लिया, लेनिन के बताये रास्ते पर नहीं चल रहा था।

ओदेस्सा कमेटी के सारे बोल्शेविक, जो पार्टी के तीसरे अधिवेशन के प्रस्तावों पर चर्चा और उनके अध्ययन के लिए जमा हुए थे, गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिये गये। उससे ऐन पहले गुप्त छापाखाना ढूँढ़ा और ज़ब्त कर लिया गया था। महज कुछ गिने-चुने, अलग-थलग पड़े जुझारू बोल्शेविक ही बचे रह गये थे, जो हाल ही में ओदेस्सा पहुँचे थे और जिन्हें पार्टी संगठन के लोगों से ठीक से सम्पर्क करने का समय नहीं मिल सका था। इन्हीं बोल्शेविकों में नताशा भी थीं।

इस तरह क्रान्तिकारी सामाजिक-जनवादियों का नेतृत्व बहुत कमज़ोर था। जो कुछ बचा रह गया था उनमें थी, मेंशेविक कमेटी, बुन्द, कुछ छिट-पुट बोल्शेविक और चन्द बिचौलिये। (बुन्द यानी यहूदी लेबर लीग, जो मेंशेविक जैसा संगठन था, और यहूदी सांस्कृतिक स्वायत्तता, और यहूदी मज़दूरों के एक अलग संगठन की स्थापना को अपने कार्यक्रम में सबसे अधिक महत्त्व देता था।) जब

ऐतिहासिक दिन शुरू हुए तो नताशा को काम करने का वक़्त ही नहीं मिला था। पहली मई से हड़तालें शुरू हुईं और लगभग पूरे महीने चलती रहीं। मज़दूरों की भावनाएँ इतनी उत्तेजित थीं कि एक मामूली झटका भी बड़ा और फ़ैसलाकुन आन्दोलन खड़ा कर सकता था।

जून के प्रारम्भ में जब मज़दूरों के चुने हुए प्रतिनिधि गिरफ़्तार किये गये तो जनता ने उनकी रिहाई की माँग की और जनदबाव में अधिकारियों को उन्हें रिहा करना पड़ा। मज़दूर *मार्सेइएज़* गीत गाते हुए अपने रिहा हुए कॉमरेडों को घर ले गये।

एक मामूली-सी घटना ने बारूद की नली में होने वाली कौंध की तरह जनता की दबी हुई ऊर्जा को निर्बन्ध कर दिया और उसी पल से ओदेस्सा के प्रसिद्ध 'जून के दिनों' का आरम्भ हुआ। 13 जून को *कज़्ज़ाकों* ने हान फ़ैक्टरी पर शान्तिपूर्ण और निहत्थे मज़दूरों पर हमला बोलकर गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने दो मज़दूरों की हत्या कर दी और कइयों को घायल कर दिया। आसपास के इलाकों के लोगों ने हड़तालें शुरू कर दीं और उसके बाद सारा क़स्बा उसमें शामिल हो गया। पुलिस और सेना के साथ टकराव हुए। मज़दूरों ने मोर्चाबन्दी कर दी और सड़कों पर रक्तरंजित लड़ाई शुरू हो गयी। मज़दूरों ने सामाजिक-जनवादियों से खुद को हथियार मुहैया कराने का अनुरोध किया। सेना आ गयी। उनके पीछे से महाविपत्तियाँ आयीं, फ़ैक्टरियों के भोंपू बज उठे, ज़बरदस्त भीड़ नेसिप की ओर, रेलवे के तटबन्ध की ओर बढ़ी, जहाँ मज़दूरों ने एक ट्रेन रोक रखी थी, यात्रियों को गाड़ी से उतारकर उन्होंने इंजन की भाप निकाल दी। कज़्ज़ाक आये, लेकिन जब उन्होंने एक भारी भीड़ देखी, कृतसंकल्प और अवज्ञाकारी भीड़, तो उन्होंने हाथ लहराये और पलटकर वापस चले गये। रेलवे के पुल के पास इतनी बड़ी सभा हुई कि उससे बड़ी सभा इससे पहले रूस में कभी देखी नहीं गयी थी। सामाजिक-जनवादी वक्ताओं के उत्तेजक भाषणों ने मज़दूरों की भावनाओं को और भी भड़का दिया, उनकी वर्गीय चेतना को जगाकर उनकी एकजुटता को और भी मज़बूत कर दिया।

अगले दिन, जून 14 को ओदेस्सा के सारे मज़दूर हड़ताल पर चले गये। शहर अजीब-सा दिखने लगा। स्टोर, कार्यशालाएँ और दफ़्तर सभी बन्द थे। एक भी फ़ैक्टरी, एक भी वर्कशॉप नहीं खुली थी। सड़कों पर ट्रामकारें रोक दी गयी थीं। बहुतों को उलट दिया गया था और गाड़ियों और दूसरी चीज़ों के साथ उनका भी बैरिकेड के रूप में प्रयोग किया जा रहा था। नौजवानों ने भी इसमें भाग लिया और आन्दोलनकारियों के रूप में भाषण दिये।

सेना और पुलिस के साथ हर जगह टकराव हो रहे थे। कज़्ज़ाकों की तलवारों और पुलिस की गोलियों ने मज़दूरों का ख़ून बहाया। गुस्साये मज़दूरों ने हथियारों के लिए चीख़-पुकार मचायी लेकिन हथियार नदारद थे... ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई रास्ता ही नहीं बचा था... उसके बाद अचानक 14 जून की शाम क्रान्ति का लाल परचम लहराते पहले क्रान्तिकारी युद्धपोत को ओदेस्सा के बन्दरगाह में आते देखकर वे सुखद आश्चर्य से भर गये।

बाज़ी पलट गयी थी। पुलिस ने तत्काल बन्दरगाह खाली कर दिया। उल्लास से भरी उत्तेजित भीड़ पोतेमकिन की अगवानी के लिए लपकी।

युद्धपोत पोतेमकिन में उसी तरह का विद्रोह भड़क उठा था जैसा मज़दूरों के बीच भड़का था। नाविकों के बीच पहले ही सामाजिक-जनवादी आन्दोलन चलाया गया था लेकिन उसके विद्रोह की शुरुआत पूरी तरह अनपेक्षित थी।

पोत की कमान सँभालने के लिए युद्धपोत पर तीस नाविकों की एक क्रान्तिकारी कमेटी का गठन किया गया। कमेटी ने बिना समय गँवाये कस्बे के मज़दूर संगठनों से सम्पर्क किया। एक साझा अधिवेशन बुलाया गया लेकिन उसमें मेंशेविक प्रभाव, अनिश्चय और ढुलमुलपन अपना असर दिखाने लगा। और बेशक़ीमती पल हाथ से निकल गये। हमला करने की बजाय – उस इकलौते रास्ते का सहारा लेने के बजाय – मार्क्सवाद हमें जिसकी शिक्षा देता है – काले सागर के स्क्वॉड्रन में दूसरे पोतों के आने का इन्तज़ार करने का फ़ैसला लिया गया।

चार बजे, युद्धपोत पर बैठक के बाद, सामाजिक-जनवादी संगठनों के प्रतिनिधि सागर तट पर आये और हथियारों और नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहे मज़दूरों के सामने घोषणा की कि नाविक किनारे पर नहीं आयेंगे और यह भी कि वे चाहें तो अपने-अपने घर लौट सकते हैं।

रात उतर आयी। और उसी के साथ प्रतिरोध, उकसावा और अपराध शुरू हो गया।

क़स्बे में पुलिस ने योजनाबद्ध ढंग से क़त्लेआम शुरू कर दिया। उन्होंने शराबख़ाने खोल दिये, "ब्लैक हण्ड्रेड" नाम के प्रतिक्रियावादी गिरोह के सदस्यों ने छककर शराब पी, गोदामों में आग लगा दी, उन्हें तहस-नहस कर डाला, घरों में आग लगा दी। कस्बे को आगज़नी, नरसंहार और तबाही के हवाले कर दिया गया।

नताशा ने जो उस समय ओदेस्सा में ही थीं, इस सबको बहुत ही गहराई से महसूस किया। वह अभी-अभी जेल से निकलकर आयी थीं। उन्हें सेण्ट पीटर्सबर्ग

में पढ़ाई के दिनों में देखी ज़ारशाही की क्रूरता, जीवन पर लगी कठोर पाबन्दियाँ याद आयीं जहाँ प्रदर्शनकारी छात्रों के किसी समूह के दिखते ही कज़्ज़ाक उन पर चाबुक फटकारते, गोलियाँ बरसाते थे।

अब नताशा ने चट्टानी एकजुटता वाली पार्टी के लिए संघर्ष के लेनिनवादी *ईस्क्रा* के आह्वान का मतलब बड़ी ही शिद्दत से महसूस किया जिसके बिना सर्वहारा की जीत नामुमकिन होती है। लेनिन का "पहले अलग करो और फिर एकजुट हो" का नारा उनकी गतिविधियों का मार्गदर्शक सितारा बन गया, जिसका आशय था कि बोल्शेविकों को पहले निर्णायक रूप से मेंशेविकों से अलग हो जाने दो और फिर उनके साथ संगठित कार्रवाई के सवाल पर चर्चा करो।

नताशा ने मेंशेविक और बोल्शेविक रणनीति की व्याख्या पर सबसे ज़्यादा बल देते हुए ओदेस्सा में प्रचार-कार्य जारी रखा। लेकिन बोल्शेविक संगठन के मज़बूत होने और कुछ सांगठनिक सफलताओं के बावजूद बाद के घटनाक्रमों ने साबित किया कि नेतागण क्रान्तिकारी विकास को पीछे धकेल रहे हैं - जैसे अक्तूबर 1905 की घटनाओं में जब समूचे रूस में नये क्रान्तिकारी फैले हुए थे, मेंशेविक और बुन्दवादी ज़्यादा संगठित थे और नतीजतन बोल्शेविकों में बहुत से लोग समझौते और एकीकरण की प्रवृत्ति से ग्रस्त थे।

"अदम्य बोल्शेविक" नताशा, ओदेस्सा में उन्हें इसी नाम से जाना जाता था, खुद पर काबू न रख सकीं। वह घटनाक्रमों के केन्द्र में रहने और सही बोल्शेविक रणनीति सीखने के लिए मास्को चली गयीं। वह ऐन सशस्त्र विद्रोह की रात मास्को पहुँची। वह उसके दमन तक वहीं रुकीं और उसके बाद ओदेस्सा लौट गयीं।

इन तमाम नाटकीय और ऐतिहासिक घटनाक्रमों ने उन पर गहरा प्रभाव डाला। नताशा को लगा कि वह महज़ प्रचार-कार्य को जारी रखने के लिए ओदेस्सा में रुकी नहीं रह सकतीं। उन्होंने खुद ही रोस्तोव-ऑन-दोन जाने का फ़ैसला किया। वहाँ भी सशस्त्र विद्रोह हुआ था। वह जानती थीं कि अब उनके सामने नये कार्यभार उपस्थित थे, रोस्तोव के सर्वहारा के लिए संघर्ष के हालिया रूपों के अनुभवों से सीखने और उनमें महारत हासिल करने का काम, सेना तैयार करने और उसको संगठित करने का काम ताकि नये विद्रोह को हथियारबन्द किया जा सके और सही ढंग से संगठित किया जा सके।

ओदेस्सा छोड़ने के नताशा के फ़ैसले ने खुद उन्हें भी काफ़ी तकलीफ़ दी। मज़दूर उनके वहाँ से चले जाने का ग़लत अर्थ न निकालें, इसके लिए उन्होंने ओदेस्सा के

सामाजिक-जनवादी संगठन के ग़लत रणकौशलों पर स्पष्ट और मुखर बयान दिया। उनका पत्र इस प्रकार था :

"मैं ओदेस्सा कमेटी के सदस्यों (बोल्शेविकों) के समक्ष बयान देती हूँ कि निम्न कारणों से स्थानीय संयुक्त संगठन में बने रहना मुझे सम्भव नहीं जान पड़ता :

"पहली बात तो यह कि रणकौशलात्मक सवालों पर बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच की असहमतियाँ अभी भी इतनी गम्भीर हैं कि इस समय एकता करना समझौते के रास्ते पर क़दम बढ़ाना है और एकमात्र सच्चे क्रान्तिकारी रणकौशलों से किनारा करने के समान है, जिसे बोल्शेविक अभी तक अपनाते आये हैं, और जिसने उन्हें वामपन्थी और सही अर्थों में आरएसडीएलपी (रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी) का क्रान्तिकारी धड़ा बनाये रखा है।

"महत्त्वपूर्ण मसलों पर असहमत होते हुए एकता करना सिर्फ़ यान्त्रिक ही होगा और स्थानीय परिस्थितियों में व्यावहारिक तौर पर इसका नतीजा बोल्शेविकों पर मेंशेविकों का वर्चस्व होगा, जबकि मौजूदा हालात में वर्चस्व के लिए सैद्धान्तिक लड़ाई निश्चित रूप से निरर्थक होगी और सिर्फ़ नये मतभेद, टकराव और नये विभाजन का कारण बनेगी। यह एकता काम को और भी असंगठित करेगी और चीज़ों को सुधारने में कोई मदद नहीं करेगी। मैं यह भी मानती हूँ कि यहाँ जो एकता हुई है वह पार्टी अनुशासन की सभी धारणाओं का बुनियादी तौर पर उल्लंघन करती है, जिसका बोल्शेविकों ने मेंशेविकों की पार्टी विरोधी और विघटनकारी प्रवृत्तियों के ख़िलाफ़ अपने संघर्ष में हमेशा ही ज़ोरदार बचाव किया है।

"मैं बाहरी ज़िलों की एक बैठक में बोलने वालों में से उस एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हूँ जिसने घोषणा की थी कि 'हमें तीसरी कांग्रेस की कागज़ी घोषणा पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है,' मुझे लगता है कि स्थानीय संगठन को पूरी पार्टी (यानी बोल्शेविकों) की सहमति के बिना मेंशेविकों के साथ एकता जैसा महत्त्वपूर्ण फ़ैसला लेने का कोई अधिकार नहीं है, और इस मामले में एकमात्र उचित और विश्वसनीय रास्ता पार्टी के तमाम कार्यकर्त्ताओं की चौथी कांग्रेस बुलाना है।

"एकता के रास्ते पर समझ में न आने वाली हड़बड़ी से आगे बढ़ रहे ओदेस्सा के संगठन ने केन्द्रीय कमेटी या बोल्शेविकों की दूसरी कमेटियों को सूचित करना भी ज़रूरी नहीं समझा। उसने सेण्ट पीटर्सबर्ग और मास्को की कमेटियों के उस उदाहरण की भी सिरे से अवहेलना की जिन्होंने सिर्फ़ संघीय

लाइन पर ही एकता को सम्भव माना था।

"इस तरह स्थानीय संगठन को स्थापित केन्द्रों और पार्टी की सीमाओं से बाहर रखकर, एकता ने पार्टी सम्बन्धों में और भी अफ़रातफ़री पैदा कर दी है, ख़ासकर तब जबकि हम मानकर चलें कि चौथी कांग्रेस ने पार्टी के दोनों धड़ों के बीच सिर्फ़ संघीय आधार पर ही एकता का निर्णय किया था। तब ओदेस्सा का संगठन, एकता करने वाले संगठन के तौर पर, किसी भी पार्टी से बाहर होगा।

"संक्षेप में मैं कहूँगी कि जिन लोगों के नेतृत्व में मैंने कई महीने काम किया है, अब तक जिन्हें मैं गम्भीर राजनीतिक सिद्धान्तों वाले भरोसेमन्द नेता मानती थी, वे हालात का सामना करने में अक्षम साबित हुए हैं। ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षण में जब बाहरी ज़िलों के अपेक्षाकृत कम विश्वसनीय हिस्से एकता का रुझान दर्शा रहे थे, उन ढुलमुल कॉमरेडों को प्रभावित करने के नज़रिये से बातचीत करने के बजाय वे बहाव के साथ बह गये और अपनी असंगति से उन सिद्धान्तों को नीचा दिखाया, जिनका पहले मैं उन्हें पैरोकार मानती थी।

"वही दिग्गज जो हफ़्ते भर पहले तक एकता की बात भी नहीं सुनना चाहते थे, किसी जादू के ज़ोर से उन्होंने एकता का पक्ष लेना शुरू कर दिया, और यह कहते हुए उसका औचित्य सिद्ध करने लगे कि जब बाहरी ज़िले एकता चाहते हैं तो संघ का आग्रह करना अटपटा जान पड़ता है। यह सच है कि उनमें से कुछ ने दावा किया कि सिद्धान्ततः वे संघ के पक्ष में हैं, लेकिन बाहरी ज़िलों की बैठकों में उन्होंने एकता के सवाल का कोई विरोध नहीं किया, और हमारे नेताओं ने पार्टी में हुए पिछले विभाजन के बारे में लोकरंजक शब्दावली, जैसेकि उसे 'सिर्फ़ नेताओं ने उकसाया था,' कि वह एकता में बाधा डालने की इच्छा रखने वाले 'मुट्ठीभर' बुद्धिजीवियों का काम था, का जवाब सिर्फ़ शर्मनाक और आपराधिक चुप्पी से दिया।

"इस तरह की सैद्धान्तिक अस्थिरता ने स्थानीय नेतृत्व में मेरा सारा विश्वास हिलाकर रख दिया और उपर्युक्त कारणों के साथ मिलकर इसने मुझे ओदेस्सा का संगठन छोड़ने पर विवश कर दिया।"

लेकिन "प्रचारक नताशा" की यह आपत्ति अपना लक्ष्य पूरा न कर सकी। वह डाकपेटी में पत्र डाल ही रही थीं कि उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। उन्हें रोस्तोव जेल में डाल दिया गया और उनका पत्र ज़ारशाही के एजेण्टों के हाथ लग गया (1917 की क्रान्ति ने ओखराना [राजनीतिक पुलिस] के धूल भरे अभिलेखागार से निकालकर इसे सार्वजनिक किया)।

एक बार फिर उन्हें महीनों तक जेल में रहना पड़ा और फिर उन्हें निर्वासित

कर दिया गया – इस बार बिना कोई मौका दिये, उन्हें पुलिस की निगरानी में उत्तरी रूस के वोलोग्दा में भेज दिया गया।

लेकिन क्रान्ति अभी ख़त्म नहीं हुई थी। नताशा फिर से काम करने के लिए बेचैन थीं और जल्दी ही वह वोलोग्दा की पुलिस की निगरानी से निकल भागने में कामयाब रहीं।

वह ग़ैर-क़ानूनी ढंग से मास्को जाकर रहने लगीं। बेशक इसके साथ तमाम क़िस्म की भौतिक और क़ानूनी परेशानियाँ जुड़ी हुई थीं।

इस अवधि की नताशा की गतिविधियों का ब्योरा कॉमरेड बोब्रोव्स्काया इस तरह देती हैं :

"क्षेत्रीय कमेटी की एक सदस्य कांकोर्दिया समोइलोवा थीं जिन्हें हम 'नताशा' के नाम से पुकारते थे। अभी कुछ ही समय पहले उनकी मृत्यु हुई है। उत्कट क्रान्तिकारी नताशा एक दिन मितिषी के जंगलों में जनसभा में जुझारू भाषण देतीं, दूसरे दिन गोलुत्विनो में सांगठनिक बैठक बुलातीं, उसके अगले दिन कोलोमैन वर्क्स के प्रतिनिधियों के साथ सम्मेलन में बैठतीं, वहाँ से वह श्चेल्कोवो, कुन्त्सेवो, पुश्किनो जातीं; हर जगह उनकी व्यग्रता से प्रतीक्षा की जाती थी, हर जगह वह सोये हुए विचारों को जगाती थीं, हर जगह वह बेचैन इच्छाओं को झकझोरती थीं, मास्को के उपनगरों की बिखरी हुई सर्वहारा जनता को, जो 1905 की हार से धीरे-धीरे उबर रही थी, मज़बूत सांगठनिक डोर से बाँधती थीं। अपना दौरा पूरा करके भूखी और थकी-माँदी नताशा मास्को लौटती थीं और उनकी रिपोर्टें मेहनतकश जनता के जीवन और उसकी ऊष्मा से ओतप्रोत होती थीं... सुरक्षा की दृष्टि से मैंने और नताशा ने एक-दूसरे से दूर ही रहने का समझौता किया, हालाँकि यह आसान नहीं था, क्योंकि हम बहुत गहरी दोस्त थीं, और उनकी मृत्यु तक हमारी गहरी दोस्ती क़ायम रही।

"एक रात बारह बजे वह मेरे आवास पर आयीं और बोलीं कि वह अपना समझौता तोड़ने पर विवश हैं, क्योंकि जिन तीन पार्टी हमदर्दों के यहाँ उन्होंने ठहरने का अनुरोध किया उन सभी ने विनम्रतापूर्वक इन्कार कर दिया था और वे सड़क पर आ गयी थीं। उस रात हम दोनों बहुत कम सोयीं लेकिन हमने हमदर्दों और खुद अपना ख़ूब मज़ाक़ बनाया। और कुछ किया भी नहीं जा सकता था, क्योंकि उस सँकरी और टूटी चारपाई पर हम दोनों का सो पाना मुमकिन नहीं था।"

यह 1906 की बात है जब नताशा मास्को के ज़िला पार्टी संगठन में काम कर रही थीं। लेकिन वह वहाँ ज़्यादा देर तक काम नहीं कर सकीं क्योंकि पुलिस

के जासूसों ने परछाईं की तरह उनका पीछा करना शुरू कर दिया था। उन्हें लग गया कि यह मास्को में उनके पार्टी कार्य का अन्त था, और गिरफ़्तारी और जेल से बचने के लिए उन्हें कहीं और जाना होगा।

उन्होंने बेसिन में लुगान्स्क का क़स्बा चुना।

1906 के आख़िरी महीनों में संयुक्त पार्टी में गहन गुटबाज़ी का समय था (आरएसडीएलपी की एकता कांग्रेस 1906 में स्टॉकहोम में हुई थी)।

लुगान्स्क दोनेत्स इलाक़े के "मेंशेविक समुद्र" में एक छोटा बोल्शेविक द्वीप था। दूसरी दूमा के चुनाव क़रीब आ रहे थे और वहाँ बोल्शेविक क़तारों को सुदृढ़ करना ज़रूरी था, न सिर्फ़ लुगान्स्क को बनाये रखने के लिए और वहाँ सही ढंग से चुनाव प्रचार अभियान चलाने के लिए, बल्कि अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए भी। प्रोफ़ेसर पिंकेविच, जो उन दिनों लुगान्स्क में काम कर रहे थे, उस समय का इस प्रकार वर्णन करते हैं :

"हम दिसम्बर के मध्य में लुगान्स्क पहुँचे और निर्धारित जगह पर गये, कॉमरेड रोस्लोव्स्की (एक छोटे स्थानीय अख़बार 'दोनेत्स्की कोलोकोल'* के सम्पादक) के ठिकाने पर, और कुछ घण्टों के बाद हम दो पेशेवर क्रान्तिकारियों, कॉमरेड अन्तोन और नताशा के साथ बात कर रहे थे।

"मुझे दो कमरों का छोटा और साधारण-सा अपार्टमेण्ट याद आता है। मुझे नताशा का सजीव, गुलाबी और प्रफुल्लित चेहरा, और अन्तोन (ए. ए. समोइलोव – नताशा के पति) का बड़ा काला और घुँघराले बालों वाला सिर याद आता है। मुझे दोनों की याद है – ख़ुश और जीवन्त, पार्टी के रणकौशलों के बारे में हम पर सवालों की बौछार करते हुए और इस या उस पार्टी कॉमरेड के बारे में पूछते हुए। उनके बहुत-से सवाल थे – दूमा के लिए चुनाव प्रचार, चुनावी समझौतों के प्रश्न पर, लन्दन की पार्टी कांग्रेस, जारी होने वाले नारों, सेण्ट पीटर्सबर्ग में चलने वाली गुटबाज़ी, इत्यादि मसलों पर।

"बोल्शेविक कार्यकर्त्ताओं की सक्रिय भागीदारी सहित असाधारण प्रसन्नता और जीवन्तता के साथ जमकर काम किया गया। दुर्भाग्य से मुझे उन सबके नाम याद नहीं हैं। कमेटियों ने काफ़ी सक्रियता दिखायी। कई बार हार्टमैन फ़ैक्टरी में ही या उसके गेट पर, रेलवे की कार्यशालाओं में, कारतूस कारख़ाने में सभाएँ आयोजित हुईं। लेकिन मुख्य ठिकाना बेशक हार्टमैन फ़ैक्टरी ही थी, जहाँ सभी कॉमरेडों के मज़बूत सम्पर्क थे और वे बेहद लोकप्रिय थे, ख़ासकर वोरोशिलोव और फ़्रिडकिन।

---

* 'दोनेत्स की घण्टी'

"इस काम में भी नताशा लाजवाब थीं। उस समय वह बड़ी सभाओं में नहीं बोलती थीं – यह यूरिन का और मेरा दायित्व था, लेकिन वह कमेटी की जान और उसकी आत्मा थीं। बेहतरीन संगठनकर्ता, क्रान्ति के मक़सद के प्रति पूरी तरह निष्ठावान, मुखर और स्पष्टवादी, एक असाधारण, उच्च विचारों वाली और नेक इन्सान थीं। जो भी उनसे मिलता था उन्हें प्यार करने लगता था। वह अन्तोन की देखभाल करती थीं जो हम लोगों को हमेशा एक ऐसे बड़े बच्चे की तरह प्रतीत होता था जो मानो इस दुनिया के लिए न बना हो। वह हमारी देखभाल करती थीं, एक अध्ययन मण्डल चलाती थीं, और तकनीकी कार्यों का निर्देशन करती थीं, पूरे दिन सांगठनिक गतिविधियों में दौड़-भाग करती थीं और कभी शिकायत नहीं करती थीं। सर्वहारा की अन्तिम जीत में गहन आस्था की ज्वाला उनमें सदा जलती रहती थी। उनमें काम करने की ज़बरदस्त क्षमता थी और वह हमेशा ऊर्जा से लबरेज़ रहती थीं और इसी के साथ असाधारण शालीनता उनकी अनूठी पहचान थी।

"जब पार्टी कांग्रेस के लिए चुनाव का सवाल उठा (फ़रवरी 1907 में) और जब उम्मीदवार के रूप में पहली बार उनका नाम सामने आया, तो उन्होंने यह कहते हुए एकदम इन्कार कर दिया कि 'मक्सिम या यूरिन या मज़दूरों में से किसी को, जैसेकि वोलोद्या को, जाना चाहिए।' ज़ारशाही की सशस्त्र पुलिस ने यूरिन और मुझे गिरफ़्तार करके इस समस्या का समाधान कर दिया और लुगान्स्क समूह ने नताशा को वोलोद्या (वोरोशिलोव) के साथ कांग्रेस में भेजा।"

लन्दन की कांग्रेस में उन्होंने, 1902-1903 में जब वह पेरिस में रहती थीं उसके बाद, पहली बार लेनिन को फिर से देखा। अब वह बोल्शेविकों के नेता थे। उन्होंने लेनिन के विस्मयकारी भाषणों को सुना जिनमें उन्होंने मेंशेविक केन्द्रीय कमेटी की राजनीतिक लाइन की ध्वस्त कर देने वाली आलोचना की। ये मेंशेविक अब इस क़दर नीचे गिर गये थे कि यह नारा देने लगे थे कि मज़दूरों को कैडेट (संवैधानिक-जनवादी-उदार बुर्जुआओं की पार्टी) सरकार का समर्थन करना चाहिए, और यहाँ तक कि मुआवज़ा दिये बिना ज़मींदारों की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने की माँग अस्वीकार करने लगे थे। उन्होंने लेनिन का वह भाषण सुना जिसमें लेनिन ने यह सिद्धान्त दिया कि रूस में क्रान्ति की विजय सर्वहारा और किसानों के जनवादी अधिनायकत्व के रूप में होगी और यह कि सर्वहारा वर्ग क्रान्ति का नेता है। जैसाकि हम जानते हैं, नताशा हमारी पार्टी की बड़ी सिद्धान्तकार या रणनीतिकार नहीं थीं। वह व्यवहार के प्रति समर्पित थीं, और इसमें दो राय नहीं कि पाँचवीं कांग्रेस ने उन पर ज़बरदस्त प्रभाव डाला,

बोल्शेविज़्म की उनकी समझ को और गहरा किया और बाक़ी की पूरी ज़िन्दगी के लिए उन्हें एक अटल लेनिनवादी योद्धा बना दिया।

कांग्रेस में बोल्शेविकों की जीत हुई और नताशा जिस उत्साह से भरकर रूस वापस लौटीं उसकी कल्पना आसानी से की जा सकती है। वह हार्टमैन फ़ैक्टरी के मज़दूरों के पास लुगान्स्क वापस लौटने को उत्सुक थीं। वह प्रतिनिधि की हैसियत से उन्हें अपनी रिपोर्ट देने और क्रान्ति के उस काम को और भी उत्साह से आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक थीं जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर रखा था। इस बीच पुलिस विभाग सावधानी के साथ कांग्रेस की निगरानी कर रहा था। उसके विदेशी एजेण्ट साये की तरह प्रतिनिधियों के पीछे लगे थे और उनके असली नाम जानने और रूस लौटते समय सीमा पर उन्हें गिरफ़्तार करने का वे हरसम्भव प्रयास कर रहे थे। बहरहाल, नताशा सुरक्षित रूप से सीमा पार कर गयीं और अपनी निशानदेही छिपाने के लिए कुछ दिन खार्कोव में रुकी रहीं।

पुलिस से बचने के लिए खार्कोव में रहते हुए नताशा लुगान्स्क पार्टी संगठन के साथ पत्र-व्यवहार करती थीं, बेशक नाम बदलकर और अपने मित्रों के पते पर पत्र मँगाकर। वोरोशिलोव (वोलोद्या), जो तत्काल बाद लुगान्स्क लौट आये थे, ने नताशा को एक पत्र लिखा, जिसे ओखराना ने पकड़ लिया और उसका चित्र उतार लिया (एक प्रति पुलिस विभाग के रिकार्ड में रख ली गयी)। पत्र में उन्होंने लिखा :

"मेरी राय में आपका यहाँ आना अत्यन्त ख़तरनाक होगा, क्योंकि एकिम इवानोविच के घर पर छापा पड़ा है। उसने कहा है कि जो किताबें उसके घर से मिली हैं वे आपने उसे दी थीं। पुलिस आपके बारे में भूली नहीं है, जैसाकि मैं साबित कर सकता हूँ। हमारे घर पर हर समय निगरानी रखी जा रही है, हम सन्देह के दायरे में हैं, इसलिए आप तुरन्त पकड़ ली जायेंगी।"

लुगान्स्क न लौट पाने के कारण नताशा बुरी तरह निराश थीं। उन्हें मज़दूर वर्ग का दूसरा केन्द्र तलाशना पड़ा जहाँ जाकर वह अपना काम जारी रख सकें। वह कुछ समय के लिए मास्को गयीं और उसके बाद बाकू चली गयीं। वह तेल उद्योग का विशाल केन्द्र था। बाकू में डोन्बास और एकातेरिनोस्लाव के धातु उद्योग की तरह पूँजीवादी विकास के उच्चतर स्तर पर पहुँच चुका था। लेकिन तेल उद्योग के इस केन्द्र में, जो ज़ारशाही साम्राज्यवाद की महत्त्वपूर्ण नस था और मालिकों को ज़बरदस्त मुनाफ़ा देता था, उस सम्पदा का उत्पादन करने वाला सर्वहारा अत्यन्त दयनीय हालात में जी रहा था और यह भी तब जबकि बाकू के लिए क्रान्तिकारी

गतिविधियाँ कोई नयी चीज़ नहीं थीं और बाकू के सर्वहारा ने मज़दूर वर्ग के क्रान्तिकारी इतिहास में बहुत-से वीरतापूर्ण अध्याय जोड़े थे।

बाकू की एक विशेषता यह थी कि वहाँ सत्रह राष्ट्रीयताओं के मज़दूर थे, जो अलग-अलग भाषाएँ बालते थे। बोल्शेविकों और मेंशेविकों के अलावा वहाँ कई अन्य राष्ट्रीय पार्टियाँ भी थीं। मेहनतकश वर्ग के हितों के साथ मेंशेविकों के ग़द्दारी करने के कारण बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच का टकराव असाधारण रूप से तीखा हो गया था।

पार्टी कार्य और जीवन के हालात अत्यन्त जटिल और कठिन हो गये थे। तेल के क्षेत्र एक-दूसरे से और बाकू से बहुत दूर-दूर तक बिखरे हुए थे। मज़दूरों के अध्ययन मण्डल चलाने के लिए शाम के वक़्त पैदल चलने में ख़तरा रहता था। तेल के डेरिकों पर आग लगाने वालों की निगरानी के लिए पहरेदार लगे रहते थे। पूरा इलाक़ा अँधेरा और सुनसान था। किसी राहगीर को गोली या चाकू मार दिया जाना असामान्य घटना नहीं थी।

नताशा को कई बार बहुत ही कष्टदायी अनुभव हुए। रेल कर्मियों के ज़िले में चेर्नी गोरोडोक में मज़दूरों के एक अध्ययन मण्डल में जाते समय कुछ स्त्रियों ने गालियाँ देते हुए उनका पीछा किया : "तुम... तुम हमारे पतियों को हमसे छीन लेना चाहती हो! हम तुम्हें दिखा देंगी...!"

उस समय नताशा, और आम तौर पर पूरी पार्टी को, स्त्रियों द्वारा डाली जाने वाली बाधा का सामना करना पड़ रहा था। कुछ कॉमरेडों ने यह राय ज़ाहिर की है कि अनपढ़ स्त्रियों की इस और इसी तरह की अन्य मूर्खतापूर्ण घटनाओं ने नताशा को स्त्रियों के बीच काम करने के लिए प्रेरित किया, जिस क्षेत्र में वे एक महान राजनीतिक हस्ती बन गयीं। उनका नाम संगठनकर्ताओं की पहली क़तार में आता है – लाखों स्त्री मज़दूरों और किसान स्त्रियों के नेताओं में, जिन्होंने सत्ता के संघर्ष और समाजवाद के निर्माण में मज़दूर वर्ग की क़तारों को मज़बूती प्रदान की।

'प्राव्दा' में काम

प्रतिक्रियावाद का काला दौर शुरू हो गया। 1909 में, पहली मार्च को नताशा फिर गिरफ़्तार कर ली गयीं और लगभग साल भर के लिए जेल में डाल दी गयीं। लकिन ज़ारशाही के अधिकारियों ने उनके ख़िलाफ़ इतना लचर मामला बनाया था कि ज़ारशाही की अदालत ने ही उन्हें रिहा कर दिया। उन कठिन दिनों में नताशा सन्देह या झिझक से एकदम परे थीं। सेण्ट पीटर्सबर्ग के जीवन ने रूसी

क्रान्तिकारी आन्दोलन के द्रुत पुनर्जन्म में नताशा की अडिग आस्था की पुष्टि कर दी।

दिसम्बर 1912 में नताशा ने बोल्शेविकों के लड़ाकू दल में ज़िम्मेदारी का एक पद ग्रहण किया। वी. एम. मालोतोव की गिरफ़्तारी के बाद उन्होंने *प्राव्दा* के सम्पादक मण्डल में सचिव का पदभार सँभाला। *प्राव्दा* में काम करने वाले कॉमरेड इस पद पर उनकी गतिविधियों के बारे में इस प्रकार बताते हैं :

"कॉमरेड समोइलोवा हमारे सम्पादकीय दल से 1913 में जुड़ीं। वह सम्पादक मण्डल की सचिव थीं और अथक ऊर्जा से भरी कार्यकर्त्ता थीं। उन्होंने बहुत-से लेख लिखे जिनमें से कई बिना नाम के थे और अन्य छद्म नाम से लिखे गये थे। हालाँकि उनकी शैली एकरस थी लेकिन उनके लेख इस तरह लिखे गये होते थे कि आम पाठक क़तारों को आसानी से समझ में आ जाते थे और सर्वहारा के जीवन और संघर्ष में उठने वाले सवालों का जवाब देते थे।

लेकिन लेखन कार्य और सम्पादक मण्डल के काम में हाथ बँटाना *प्राव्दा* में कॉमरेड समोइलोवा के काम का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा नहीं था। उनके सचिव के काम से कहीं ज़्यादा महत्त्वपूर्ण था उनका लिपिकीय कार्य। उस समय मज़दूरों का अख़बार एकमात्र साधन था जिसमें फ़ैक्टरियों में काम करने वाले मज़दूरों की आवाज़ और उनकी भावनाएँ अभिव्यक्ति पाती थीं। सैकड़ों मज़दूर अख़बार में पत्र भेजते थे और स्वयं उसके सम्पादकीय कार्यालय में आते थे।

साधारण-सा सम्पादकीय कार्यालय मधुमक्खी के छत्ते की तरह था। वहाँ मज़दूरों का रेला-सा पहुँचता था : हड़ताली फ़ैक्टरियों के प्रतिनिधि, ट्रेड यूनियनों, बेनेफिट सोसाइटियों और मज़दूर क्लबों के प्रतिनिधि अपने काम और जीवन के हालात के बारे में बताने के लिए वहाँ आते थे। फ़ैक्टरियों में होने वाली मज़दूर सभाएँ "हमारे प्यारे *प्राव्दा*" के लिए छोटी-छोटी रक़में इकट्ठा करती थीं।

मज़दूर-कवि अपनी कविताओं की समीक्षा के लिए और यह जानने के लिए कि वे छपेंगी या नहीं, बेसब्री से इन्तज़ार करते थे। मज़दूर दादागीरी करने वाले किसी फ़ोरमैन, निदेशक या प्रबन्धक की शिकायत करने के लिए वहाँ इस तरह आते थे जैसे कि वह कोई शिकायत ब्यूरो हो या फिर मालिकों के ख़िलाफ़ मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा करने के बारे में सलाह लेने के लिए आते थे। वे अपनी पारिवारिक तकलीफ़ों और अपने पैतृक गाँवों के विवाद लेकर आते थे।

वे जानते थे कि वे अपने ही अख़बार में जा रहे हैं, जहाँ उनका स्वागत होगा, उनकी बात सुनी जायेगी और किसी न किसी तरह उनकी समस्या का समाधान किया जायेगा। यही कारण था कि हर दिन दफ़्तर में लोगों की भीड़ उमड़ आती

करने वाला पार्टी कॉमरेड हर बार जेल जाने लगता तो पार्टी में पर्याप्त सम्पादक ही नहीं बचते। ऊपर से हमारे सबसे अच्छे सम्पादक विदेशों में रहने को मजबूर थे।

अख़बार को बन्द होने से बचाने के मक़सद से असली सम्पादक को बचाने के लिए मज़दूर उनके स्थानापन्न के तौर पर अपनी सेवाएँ हाज़िर करते। अख़बार में उनका नाम दिया जाता था जबकि सम्पादन का काम दूसरे लोग करते थे। मेहनतकश वर्ग के पक्ष में छपा कोई साहसिक लेख उन्हें जेल भिजवा देता था।

बेशक इनमें से कुछ लोग विचलित हो जाते थे। नताशा अक्सर उनसे बात करतीं और उन्हें एक मज़दूर अख़बार की अहमियत समझातीं। बेशक, किसी को यह बताना सुखद नहीं होता था कि "हमारे लिखे लेख आपके जेल जाने का कारण बन सकते हैं।" मज़दूर अख़बार के लक्ष्य के प्रति उन्हें बड़ी हमदर्दी के साथ प्रेरणा देने की ज़रूरत होती थी। उनमें से कुछ को लम्बी क़ैद की सज़ा भी झेलनी पड़ती थी। नताशा ने यह दुष्कर काम कई महीने तक किया।

उन दिनों मेहनतकश जनता पर *प्राव्दा* का ज़बरदस्त प्रभाव था। उसने बोल्शेविक पाठकों की पूरी एक पीढ़ी को प्रशिक्षित किया जिन्होंने 1917 की क्रान्ति की शुरुआत में एक ठोस समूह का रूप धारण कर लिया था, वे एक भावना से ओतप्रोत थे और एक फ़ौलादी अनुशासन से आपस में जुड़े हुए थे। बहुत-से कॉमरेड *प्राव्दा* के काम में हिस्सा लिया करते थे। लेकिन नताशा का ओहदा ही इन सभी कामों की जान था। मेहनतकशों और क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं के बीच काम करते हुए वे आन्दोलन से पहली बार जुड़ने वाले मज़दूर समूहों का बड़ी सावधानीपूर्वक जायज़ा लेतीं और अख़बार में उनका पद उन्हें इन मज़दूरों से सम्पर्क करने और उनकी चेतना को बोल्शेविक धारा की तरफ़ मोड़ने के अनेक अवसर देता था।

स्त्री मज़दूरों के बीच काम और अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन की तैयारी

स्त्री मज़दूरों के साथ विशेष रूप से नताशा ने संगठनकर्ता का उत्कृष्ट गुण प्रदर्शित किया। उन्होंने रूस में पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस समारोह के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभायी। यह रोचक तथ्य है कि नताशा के *प्राव्दा* से जुड़ने के बाद अख़बार के दफ़्तर में स्त्रियों की आवाज़ाही बढ़ गयी थी। दफ़्तर के अपने छोटे-से कमरे में बैठ कर वह मेहनतकशों के आम आन्दोलन से स्त्रियों को जोड़ने की योजनाएँ बनाती रहती थीं।

रूस की स्त्री मज़दूरों को अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस की जानकारी 1913 में मिली और उस दिन से कमोबेश नियमित रूप से इसका आयोजन शुरू हुआ। स्त्री मज़दूरों ने दुनिया भर की अपनी जैसी दूसरी कॉमरेडों के साथ हमदर्दी महसूस की। उन्होंने यह समझना शुरू किया कि ग़रीबी और क़िल्लत से स्त्रियों को तभी छुटकारा मिल सकता था जब मेहनतकश वर्ग पूँजीपति वर्ग के ख़िलाफ़ अपने संघर्ष को निर्णायक जीत के मुकाम पर पहुँचाये। बहरहाल, हमें आन्दोलन पर हावी रहने के लिए मेंशेविकों से लड़ना था क्योंकि वे उसे पूँजीवादी पार्टियों के वर्चस्व के अधीन करने की कोशिश कर रहे थे।

समोइलोवा ने पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस का आयोजन करने के पार्टी के महती कार्य में अग्रणी भूमिका निभायी। स्त्री मज़दूरों ने इस दिन को अपने दिन, अपनी वर्गीय चेतना को जागृत करने और अन्तरराष्ट्रीय भाईचारे की समझ के स्तर तक अपने दायरे को बढ़ाने के लिए तय किये गये एक ख़ास दिन के रूप में स्वीकार किया। नताशा ने अपना सृजनात्मक प्रयास विशेष रूप से हमारे पार्टी निर्माण की इस शाखा को समर्पित किया।

क्रान्तिकारी काम के बरसों के अनुभव से सम्पन्न एक बोल्शेविक के तौर पर नताशा ने इस काम को बोल्शेविक ढंग से अंजाम दिया। इस काम के आयोजन की योजना पर विचार करते हुए उन्होंने इस मुद्दे पर सावधानी से काम किया। इस मामले पर *प्राव्दा* के कॉमरेडों से वे अक्सर सलाह लेतीं और काम को इस प्रकार संचालित करतीं ताकि वह क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष की मुख्यधारा को मज़बूत करे।

समोइलोवा अपने कॉमरेडों के साथ स्त्रियों की एक पत्रिका के प्रकाशन के सवाल पर अक्सर चर्चा किया करती थीं। इस समय रूस के मज़दूर आन्दोलन के आम तौर पर पुनर्जीवित होने का प्रमाण आन्दोलन में मज़दूर स्त्रियों की बढ़ती दिलचस्पी से भी मिल रहा था। उन्होंने यूनियनें बनायीं, हड़ताली आन्दोलनों में, बीमा आन्दोलनों में हिस्सा लिया, अख़बार में लिखा, मई दिवस के प्रदर्शनों में शामिल हुईं। स्त्री आन्दोलन पर पर्याप्त ध्यान दे पाना *प्राव्दा* के लिए असम्भव था। स्त्रियों की पत्रिका *वूमन वर्कर* का प्रकाशन समोइलोवा की चिर संचित अभिलाषा थी। आगे चलकर उनका यह सपना साकार हुआ, और कहा जा सकता है कि समोइलोवा को उनका असली कार्यक्षेत्र मिल गया; उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा को स्त्री आन्दोलन पर केन्द्रित कर दिया। और इस काम में स्त्रियों की उत्कृष्ट संगठनकर्ता और आन्दोलनकर्ता, जैसा कि समोइलोवा ने क्रान्ति के बाद अपने आप को सिद्ध किया, के रूप में विकास किया और आगे बढ़ीं।

प्राव्दा के गैर-क़ानूनी काम के दौरान और क्रान्ति के बाद स्त्री सम्मेलनों में जिन्होंने समोइलोवा को देखा था, उनके समक्ष स्पष्ट था कि समोइलोवा की असली रुचि इसी काम में थी, यही उनका मूल तत्त्व था।

स्त्री मज़दूरों के सवाल पर पार्टी के एक निर्णय पर पहुँचने के बाद नताशा पार्टी में पहले से ही शामिल स्त्री मज़दूरों के एक समूह और अनेक बोल्शेविक कॉमरेडों (एसएम पोज्नर, पीएफ कुन्देली और अन्य) के साथ पूरे उत्साह से स्त्री दिवस की तैयारियों में जुट गयीं।

जनवरी 1913 में उदार बुद्धिजीवियों के एक पूँजीवादी समूह ने स्त्रियों की शिक्षा पर एक अधिवेशन का आयोजन किया था जिसमें कुछ चुनिन्दा स्त्री कार्यकर्त्ताओं को ही शामिल होने की अनुमति दी गयी थी। इस अधिवेशन में मुख्य रूप से 'पुरुष वर्चस्व' के मुद्दे पर ही चर्चा की गयी। *प्राव्दा* ने इस सम्बन्ध में लिखा कि इस अधिवेशन में नहीं बल्कि *प्राव्दा* की ओर से आयोजित अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन से बड़े नतीजे सामने आयेंगे और स्त्रियों की असली आवाज़ सुनी जायेगी।

स्त्री मज़दूरों को सम्बोधित *प्राव्दा* का पहला लेख जुझारू मज़दूर वर्ग की क़तारों से जुड़ने, अन्तरराष्ट्रीय क्रान्तिकारी मज़दूर आन्दोलन के शक्तिशाली झंझावात का हिस्सा बनने के लिए रूसी स्त्रियों का भावनात्मक आह्वान था।

इस लेख के बाद *प्राव्दा* ने अपने लेखों में सिलसिलेवार मुहिम चलायी। अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के कामों और उसके आयोजन के तौर-तरीक़े पर लेखों की एक श्रृंखला छपी ताकि रूसी स्त्री मज़दूर इसे अपना दिन महसूस करें। लेकिन पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस को हमारी ताक़त का आकलन करने के एक अवसर के रूप में भी देखा गया।

इस उद्देश्य से *प्राव्दा* ने "स्त्रियों के काम" पर एक स्तम्भ चलाया। 'एक वैज्ञानिक सामाजिक ग्रन्थालय, स्त्री श्रम और स्त्री प्रश्न' शीर्षक से क़ाफ़ी सामग्री प्रकाशित की गयी। विभिन्न फ़ैक्टरियों और उद्योगों की विभिन्न शाखाओं में स्त्रियों की दशा पर *प्राव्दा* में एक प्रश्नावली छापी गयी। इसी तरह *प्राव्दा* ने बहुत-सी सोसाइटियों और मज़दूर संगठनों (सिलाई के पेशे से जुड़े मज़दूरों, कपड़ा उद्योग के मज़दूरों वग़ैरह) से स्त्री मज़दूरों की दशाओं की तफ्तीश और अध्ययन करने और अपने आँकड़े *प्राव्दा* को भेजने का अनुरोध किया। सारा ध्यान स्त्रियों की वर्ग स्थिति, उद्योग में उनकी स्थिति, वग़ैरह पर केन्द्रित था। जैसे-जैसे सामग्री आने लगी तो 'स्त्रियों के काम' वाला स्तम्भ और 'अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस' के लिए एक नया खण्ड *प्राव्दा* में और जल्दी-जल्दी छपने लगे।

पूँजीवादी हमले के ख़िलाफ़ विकसित हो रहे वर्ग संघर्ष ने, जो प्रतिक्रिया के इस दौर में तथाकथित तीन जून दूमा की संवैधानिक स्थितियों के अनुरूप बहुत ही सफलतापूर्वक ढाला गया था, स्त्रियों के स्तम्भ के लिए पर्याप्त स्पष्ट और ठोस सामग्री उपलब्ध करायी। कपड़ा मिलों में भी तालाबन्दियाँ होने लगीं। आने वाले संकट के चलते मज़दूरी में कटौती होने लगी, और स्त्रियों से अपमानजनक तरीक़े से "सड़कों पर जाकर अतिरिक्त कमाई करने" को कहा गया। लाफेर्मे फ़ैक्टरी की आठ सौ स्त्रियाँ हड़ताल पर चली गयीं।

समोइलोवा ने ये सारी सामग्रियाँ जमा की और "स्त्रियों के स्तम्भ" के अलावा बहुत-से लेख लिखे जो इस मुद्दे पर इस तरह ध्यान केन्द्रित करते थे जो स्त्रियों को दिलचस्प लगता था – हड़तालों के नतीजे और जीवनयापन के ख़र्च में हुई वृद्धि के ख़िलाफ़ संघर्ष में उनकी भूमिका, स्त्रियों से सम्बन्धित मुद्दों पर सरकारी खिलवाड़ और फ़ैक्टरियों में स्त्री फ़ैक्टरी निरीक्षकों की नियुक्ति सम्बन्धी विधेयक लाने की उसकी मंशा।

स्त्रियों को अपने संगठनों की ओर खींचने की नियोक्ताओं की कोशिशों ने नताशा को एक उत्तेजक लेख लिखने के लिए उकसाया जिसमें उन्होंने स्त्रियों को अपने वर्गीय संगठनों, यानी ट्रेड यूनियनों से जुड़ने का आह्वान किया।

साथ ही साथ पार्टी की भूमिगत स्त्री कार्यकर्त्ताओं द्वारा गुप्त रूप से तैयारी का ठोस काम अंजाम दिया जा रहा था। बहुत-सी स्त्रियाँ, जो बोल्शेविक पार्टी की कार्यकर्त्ता थीं, बैठकों, ट्रेड यूनियनों, क्लबों और विभिन्न मज़दूर समितियों से *प्राव्दा* द्वारा जुटायी सामग्रियों का इस्तेमाल रिपोर्टें तैयार करने और सक्रिय स्त्री मज़दूरों के बीच से (अलेक्सेयेवा, एक बुनकर, पावलोवा, इत्यादि) वक्ता तैयार करने के लिए करती थीं, जो पहले ही विख्यात हो चुकी थीं। नताशा इस काम में सक्रिय हिस्सेदारी करती थीं। इस तरह पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस पर स्त्री मज़दूरों ने सीधे फ़ैक्टरियों के जीवन से ली गयी ठोस सामग्री के आधार पर स्पष्ट और प्रभावशाली भाषण दिये। उन्होंने स्त्री मज़दूरों के शोषण की गहनता का खुलासा किया और बताया कि किस प्रकार स्त्री मज़दूर दोहरे उत्पीड़न की शिकार थीं और उन नाममात्र के अधिकारों से भी वंचित थीं जो पुरुष मज़दूरों को हासिल थे।

फरवरी 23 (नये कैलेण्डर के अनुसार मार्च 8) आ पहुँचा। *प्राव्दा* द्वारा चलाये गये आन्दोलन के कारण मज़दूर वर्ग के दुश्मन हरकत में आने को विवश हो गये थे। उदारवादियों के एक समूह, जो *विमेंस हेरल्ड* का प्रकाशन करता था, ने *प्राव्दा* के ख़िलाफ़ गाली-गलौच का अभियान छेड़ दिया और घोषणा की कि

पीपुल्स यूनिवर्सिटी भी स्त्री दिवस का आयोजन करेगी।

समोइलोवा ने इन नारीवादियों को अत्यन्त सारगर्भित उत्तर दिया और स्त्री मज़दूरों की ओर से विश्वासपूर्वक कहा कि उन्होंने अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन में भाग लेने का पक्का निश्चय कर लिया है। *विमेंस हेरल्ड* के हमले ने स्पष्ट कर दिया कि बोल्शेविकों ने स्त्री मज़दूरों की बहुतायत को संगठित करने की जो रणनीति अपनायी थी वह पूरी तरह क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के सिद्धान्तों और विचारधारा के अनुरूप थी।

पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के लिए नियत तारीख 23 फरवरी, 1913 को रविवार का दिन था। इस दिन सभा करने के लिए पुलिस की अनुमति लेने के मक़सद से (4 मार्च, 1906 के अन्तरिम नियमों के अनुसार) बैठकों को "*साइण्टिफ़िक मैटिनीज़*" का नाम देने का निश्चय किया गया।

यह दिन जैसे-जैसे क़रीब आता जा रहा था उसे लेकर पुरुष और स्त्री मज़दूरों की बढ़ती दिलचस्पी के बारे में जानने के लिए *प्राव्दा* के 1913 के अंक देखना शिक्षाप्रद होगा। सबसे पहले एक मज़दूर (या शायद कोई स्त्री मज़दूर जो अपना नाम देते हुए डरती है) स्त्री मज़दूरों की कठिन परिस्थितियों, कम वेतनमान, उस गुस्से के बारे में लिखता है जिसे एक अच्छी दिखने वाली स्त्री मजूदर को फ़ोरमैन के कारण भुगतना पड़ता है, इत्यादि। इसके कुछ दिन बाद उसी फ़ैक्टरी की एक स्त्री मज़दूर लिखती है (जाहिर है कि वह नताशा के दफ़्तर जा चुकी है)। पहले हम प्रतिरोध के शब्द पढ़ते हैं और उसके बाद हड़ताल की सूचना आती है।

स्त्री मज़दूरों के नये संस्तर लगातार शामिल किये जा रहे थे; पहले कपड़ा उद्योग के मज़दूर, उसके बाद सिलाई व्यापार के मज़दूर, धुलाई करने वाली स्त्रियाँ और कपड़ा बेचने वाली स्त्रियाँ, वग़ैरह।

लम्बे समय तक रबड़ उद्योग की स्त्री मज़दूर आन्दोलन से बाहर रहीं। हालाँकि, 1914 में ट्राइएंगल रबड़ फ़ैक्टरी और रबड़ उद्योग की दूसरी फ़ैक्टरियों में बड़े पैमाने पर विषाक्तता की कई घटनाओं ने न सिर्फ़ सेण्ट पीटर्सबर्ग बल्कि समूचे रूस के सर्वहारा को क्रोध से भर दिया।

सबसे पहले स्त्रियों को मज़दूर बीमा अधिनियम के तहत दुर्घटनाओं के लिए बीमा कराने के लिए प्रेरित किया गया। यह उन्हें संगठित करने का एक ज़रिया था। लेकिन स्त्रियों ने ऐसा करने से मना कर दिया और उन्होंने बीमा के फ़ार्म फाड़कर फेंक दिये। उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं किया कि उनकी स्थिति दूसरे उद्योगों की स्त्रियों से बेहतर थी बल्कि इसलिए कि धुएँ भरी फ़ैक्टरियों में ओवरटाइम करके वे प्रति दिन अस्सी कोपेक से एक रूबल तक कमा लेती थीं

जबकि कपड़ा उद्योग के मज़दूर ज़्यादा से ज़्यादा साठ कोपेक कमाते थे और औसत मज़दूरी बारह रूबल मासिक बनती थी। लेकिन अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन की सफलता ने उनका रवैया बदल दिया। पूँजी के इन गुलामों ने भी अपने मालिकों की फ़रमाबरदारी से इन्कार कर दिया। उन्होंने प्रतिरोध करना शुरू कर दिया और हड़ताल की धमकी देने लगीं। इससे प्रबन्धन हक्का-बक्का रह गया और खीझ उठा।

समोइलोवा ने भावुकता और गहन और निरन्तर बढ़ते उत्साह से देखा कि *प्राव्दा* की देखभाल और सरोकार की बदौलत एक नयी क्रान्तिकारी सेना तैयार हो रही थी, युगों से दबी-कुचली और गुलाम स्त्री मज़दूर जाग रही थीं :

खुशी और जीवन से भी वंचित,
लम्बे समय तक तुमने पहनीं
गुलामी की ज़ंजीरें,
लम्बे समय तक तुमने पराजय में
अपना सिर झुकाये रखा,
लम्बे समय तक तुम जीती रहीं
अज्ञान के अँधेरे में,
लम्बे समय तक तानाशाहों ने उड़ाया
तुम्हारा मज़ाक,
तुम्हारी कमजोरी से होकर निर्भय...

लेकिन तिलिस्म टूट चुका है।
जीवन की किताब में हम लिखेंगे
तुम्हारी विजय-गाथा।
साहस के साथ बढ़ो आगे, स्त्री मज़दूरों।
अपना मार्ग आलोकित कर दो
मुक्ति की मशाल से।

जान लो कि पुरुष मज़दूर देंगे तुम्हारा साथ,
इस कठिन और महान संघर्ष में।

— इल्या वोलोदिंस्की

(1913-14 के अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस को समर्पित एक सर्वहारा कविता। यह कविता

छापने की वजह से *वूमन वर्कर* पत्रिका को ज़ब्त कर लिया गया था (अंक 3, 1914)।)

प्राव्दा और समोइलोवा का काम अपेक्षाओं से कहीं बढ़कर सफल रहा। 23 फरवरी को, पुलिस को अचम्भित करते हुए "साइण्टिफ़िक मैटिनी" में सभी पेशों और उद्योगों से जुड़ी महिला मज़दूरों ने हिस्सा लिया, जो क्रान्तिकारी महिला मज़दूरों की एक विशाल सेना थी।

पुलिस बहुत परेशान थी, "एक बार फिर उनसे देर हो गयी!" पुलिस की घेराबन्दी के बावजूद प्रसन्नता और उत्साह से भरी भीड़ लगातार बढ़ती गयी। कलाश्निकोव एक्सचेंज के हॉल में भीड़ समा न सकी।

प्राव्दा ने उस दिन एक विशेष संस्करण छापा, जिसकी सामग्री अत्यन्त क्रान्तिकारी थी।

उसने अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस पर स्त्री मज़दूरों का स्वागत किया और जुझारू सर्वहारा की क़तारों से जुड़ने के लिए उन्हें बधाई दी। उसने इस दिन को एक प्रतीक के रूप में चिह्नित किया जब स्त्री मज़दूर उठकर समूचे मेहनतकश वर्ग के आम आन्दोलन के स्तर पर पहुँच गयी थीं। उसने घोषणा की कि स्त्री मज़दूरों ने उसके आह्वान पर उत्साहपूर्वक अमल किया। इस यादगार बैठक में बोलने वाले नये वक्ताओं ने उन पर किये गये काम और उनसे लगायी गयी उम्मीदों को सही साबित किया।

प्राव्दा ने लिखा :

"श्रोताओं को स्त्री मज़दूरों के वर्ग की एक मुग्ध कर देने वाली तस्वीर देखने को मिली, ऐसी स्त्रियाँ जो आधुनिक समाज में सभी अधिकारों से वंचित थीं। इसी के साथ वक्ताओं ने, इस बात पर ज़ोर देते हुए कि इस आन्दोलन से आम सर्वहारा का मोर्चा बिखरना नहीं चाहिए बल्कि और मज़बूत होना चाहिए, स्पष्ट शब्दों में अपनी बात रखते हुए मज़दूर वर्ग की स्त्रियों के आन्दोलन और पूँजीवादी स्त्री संगठनों के हितों और कामों के बीच तीखे अन्तर पर, और मज़दूर वर्ग की स्त्रियों के आन्दोलन के समूचे मज़दूर वर्ग के हितों और कार्यों के साथ नज़दीकी जुड़ाव पर अत्यधिक बल दिया। अगर मज़दूर आन्दोलन प्रचण्ड वेग वाली नदी है तो स्त्री आन्दोलन उसकी ताक़त को सशक्त और समृद्ध करने वाली एक सहायक नदी है।"

कलाश्निकोव एक्सचेंज पर हुई बैठक के अलावा "साइण्टिफ़िक मैटिनी" के आयोजन बोल्शेविक संगठनों द्वारा नियन्त्रित क्लबों और दूसरी समितियों में भी हुए।

प्राव्दा ने सिलसिलेवार कई अंकों में पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के

आयोजन के तौर-तरीक़ों के ब्योरे छापे। भाषणों के सारांश और वक्ताओं के नाम दिये गये ताकि सभी मज़दूर स्त्रियाँ उनको जान सकें क्योंकि वे नये काडर थे जिन्होंने पहली बार दुनिया के सामने घोषणा की कि रूसी स्त्री मज़दूर दमन और दमनकारियों के ख़िलाफ़ संघर्ष करने वालों की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ा रही हैं।

यह आह्वान सुना गया। अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन को मेहनतकश स्त्रियों का ज़बरदस्त समर्थन मिला। *प्राव्दा* ने टेलीफ़ोन ऑपरेटरों, घरेलू नौकरों, अस्पतालों के मज़दूरों, धोबिनों की टेलीफ़ोन वार्ताएँ प्रकाशित कीं। उसने पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन पर विभिन्न शहरों से आये शुभकामना सन्देश छापे।

सर्वहारा की क्रान्तिकारी माँगों को हल्का करने और उनके विकृतिकरण के ख़िलाफ़ लेनिनवादी दर्शन की लड़ाई को आगे बढ़ाना, मेहनतकश वर्ग को एकजुट करना और उसे क्रान्तिकारी सेनाओं के रूप में संगठित करना उसके सबसे अहम कार्यभारों में से एक था।

समोइलोवा ने विभिन्न सवालों पर *प्राव्दा* में सिलसिलेवार कई लेख लिखे। वह विवादों में भी पड़ीं लेकिन उनके तीरों का निशाना हमेशा मेंशेविकों का अख़बार 'लुच' हुआ करता था, जिसने दावा कर रखा था कि वर्गचेतना सम्पन्न स्त्री मज़दूरों के नब्बे फ़ीसदी का मुखपत्र *प्राव्दा* नहीं, बल्कि वह है, और यह भी कि *प्राव्दा* सिर्फ़ पिछड़े तबकों को आकर्षित करता है। समोइलोवा का हमला इतना ज़ोरदार और सटीक था कि लेनिन ने उनके एक लेख का विशेष रूप से उल्लेख किया जो *प्राव्दा* के 12 मार्च के अंक में प्रकाशित हुआ था।

स्त्री आन्दोलन स्थिर गति से आगे बढ़ता रहा लेकिन लेनिन ने दिसम्बर 1913 में अपनी बहन अन्ना एलिज़ारोवा को एक विशेष पत्र भेजा। उस पत्र में उन्होंने संघर्ष के लिए जागरूक हो रही स्त्री मज़दूरों का हवाला देते हुए नयी शक्तियों को संगठित करने के लिए *वूमन वर्कर* नाम से स्त्रियों के एक विशेष अख़बार के प्रकाशन की आवश्यकता बतायी। उन्होंने सुझाव दिया कि उसका संयोजन उन्हें ही करना चाहिए। लेनिन मज़दूर स्त्रियों के आन्दोलन के विकास पर विशेष रूप से नज़र रखते थे और जिसे वह विशेष महत्त्व देते थे।

अपनी पुस्तक 'द इपोक ऑफ़ ज़्वेस्दा' और *प्राव्दा* में कॉमरेड एलिज़ारोवा ने लिखा है कि उनके भाई ने उन्हें जो काम सौंपा था उन्होंने उसे किस तरह पूरा किया। इसका वर्णन करते हुए वह कहती हैं :

"दिसम्बर 1913 में मुझे व्लादीमिर इल्यीच का अंग्रेज़ी में लिखा पत्र मिला, जिसमें उन्होंने लिखा था कि मुझे स्त्री मज़दूरों के लिए एक अख़बार शुरू करना

ही चाहिए, और मुझे सम्पादक मण्डल के लिए उपयुक्त लोगों का चुनाव करने और फ़िलहाल उसे गुप्त ही रखने का सुझाव दिया। आगे चलकर अख़बार के प्रकाशन के विचार को उन्हीं दिनों विदेश से लौटे रोज़्मिरोव और समोइलोवा ने सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया।

"उन दिनों समोइलोवा *प्राव्दा* की सचिव थीं और उन पर काम का अत्यधिक बोझ था। उन्होंने इस बाबत मुझे बताया भी था। और मैंने सोचा कि शायद वह इस समय नया काम हाथ में लेने पर राजी नहीं होंगी लेकिन उन्होंने इसे बड़े ही उत्साह से किया। पाँचवें सम्पादक के रूप में हमने मेंजिंस्काया को आमन्त्रित किया, और तुरन्त अख़बार *वूमन वर्कर* के पहले संस्करण के लिए लेख जुटाने शुरू कर दिये, जिसे अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस, 23 फ़रवरी (पुराने कैलेण्डर के अनुसार) तक आ जाना था। हमने इसे लोकप्रिय अख़बार बनाने का फ़ैसला किया। धनाभाव सबसे बड़ी अड़चन था। हमने *प्राव्दा* में एक चन्दा सूची जारी कर दी और धन जुटाना शुरू किया। मज़दूरों ने कोपेकों में, शब्दश: कोपेकों में, धन भेजना शुरू किया। लम्बे समय तक हम सम्पादकीय कार्यालय के लिए कमरे नहीं तलाश सके।"

अन्तत: सम्पादकीय मण्डल की पहली बैठक 6 फ़रवरी, 1914 को समोइलोवा के आवास पर हुई और कामयाब रही। मगर सम्पादक मण्डल – रोज़्मिरोविच, ड्रेप्किना, समोइलोवा और निकोलेयेवा को गिरफ़्तार कर लिया गया और उसी दिन शाम को मेंजिंस्काया भी गिरफ़्तार कर ली गयीं। अकेली एलिज़ारोवा बची रह गयी थीं। फिर भी, काफ़ी मुश्किलों के बाद अख़बार का पहला अंक आ ही गया। उसने ज़बरदस्त प्रभाव छोड़ा और फ़ैक्टरियों में चर्चा का अकेला विषय यही था। सम्पादक मण्डल के पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो जाने और फ़ैक्टरियों में बड़े पैमाने पर मज़दूरों की गिरफ़्तारी की वजह से अख़बार की स्थिति गम्भीर हो गयी। और सच पूछिये तो हालात बहुत ही कठिन थे – पैसे नहीं थे, काम करने वाले लोग नहीं थे और कोई सम्पर्क नहीं बचे रह गये थे। इस समय समोइलोवा जेल में थीं, जो यह काम करने के लिए अत्यन्त व्यग्र थीं।

लेकिन पुलिस के आड़े आने के बावजूद काम जारी रहा। कॉमरेड एलिज़ारोवा अपनी कहानी जारी रखते हुए लिखती हैं :

"जब मैं याम्सकाया स्ट्रीट पर पहुँची जहाँ *वूमन वर्कर* का कार्यालय था, मुझे नये अख़बार के नाम पत्रों और बधाइयों का अम्बार लगा मिला, उनसे इतना उत्साह और साहस मिला और इतनी ख़ुशी हुई कि मेरा मूड फौरन बदल गया। रूस के दूर-दराज के हिस्सों से भेजे गये पत्रों में इतनी प्रसन्नता, नये लक्ष्य की

सफलता में ऐसी अनन्य आस्था, त्याग की ऐसी तत्परता व्यक्त की गयी थी कि मैं फूली न समायी। सामूहिक रूप से भेजे गये चन्दे की रक़मों का अम्बार लग गया। ये रक़में एक-एक कोपेक जुटाकर जमा की गयी थीं। मैं महसूस कर सकती थी कि अपना मंच पाने की भावना आम जनमानस में गहरे तक उतर गयी थी। मैं उन लोगों के उत्साह और उनकी आकांक्षा को महसूस कर रही थी।

"उसके बाद स्त्री मज़दूर दफ़्तर में आने लगीं, हालाँकि शुरुआत में संकोच करती हुई ही, लेकिन बाद में वे *प्राव्दा* के दफ़्तर में भी आने लगीं। मुझे अपनी सबसे जीवन्त सहायक ऐवास फ़ैक्टरी की एमिल्या सोल्निन अच्छी तरह याद हैं। सबने अपने अख़बार को लेकर एक-सा उत्साह व्यक्त किया, एक-सी अनन्य आस्था व्यक्त की कि हर रुकावट के बावजूद, यह अपने पैरों पर खड़ा होगा, इसे अपने पैरों पर खड़ा होना ही है।

"स्त्री मज़दूरों ने फ़ैक्टरियों में नये सिरे से सम्पर्क बनाने शुरू किये। अख़बार के वितरण में विश्वास अनुभव करना शुरू किया। एक छापाख़ाना मिल गया और मैंने दूसरे अंक की तैयारियाँ शुरू कर दीं। आमुख कथा की जगह ऐवास फ़ैक्टरी की स्त्री मज़दूरों के नाम यह कहते हुए एक अपील जारी की गयी कि 'साथी स्त्री मज़दूरो, बड़े बलिदान और काफ़ी प्रयासों के बाद हमने अपना अख़बार, *वूमन वर्कर* शुरू किया है। पहला अंक आ चुका है। स्त्री मज़दूरो, अख़बार की मदद करना हमारा कर्त्तव्य है। स्त्री मज़दूरों से बड़े पैमाने पर अख़बार का प्रसार करने का आह्वान करें। लगातार चन्दे जुटायें। धन जुटायें और सबसे बड़ी बात यह कि हमें पत्र लिखें।'"

इस तरह समोइलोवा का सपना साकार हो गया।

अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के प्रोत्साहकों और संयोजकों को पुलिस ने, ज़ार के एजेण्टों ने उनके पदों से हटा दिया। लेकिन जो ज़ोरदार लहर उमड़ पड़ी थी उसे रोका नहीं जा सकता था।

23 फ़रवरी, 1914 के *प्राव्दा* के अंक में समोइलोवा ने अपनी आसान, भावप्रवण और संक्षिप्त शैली में अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस का मुद्दा उठाया जिसने लाखों मेहनतकश स्त्रियों को जगाया था। उन्होंने लिखा :

"दिनों-दिन पूँजीवाद का बढ़ता प्रसार न सिर्फ़ पुरुषों बल्कि उनकी पत्नियों, बहनों और बेटियों को भी औद्योगिक जीवन के चक्रवात में खींच रहा है। उद्योगों की तमाम शाखाओं में धातु उद्योग समेत दसियों हज़ार स्त्रियाँ काम करनी हैं। पूँजी ने उन सब पर ठप्पा लगा दिया है और उन सबको श्रम बाज़ार में फेंक दिया है। वह युवाओं की, स्त्रियों की शारीरिक कमज़ोरी की और मातृत्व के उत्साह की

उपेक्षा करती है। जब स्त्रियाँ फ़ैक्टरियों में जाती हैं और उन्हीं मशीनों पर काम करती हैं जिन पर मर्द करते हैं, तो वे एक नयी दुनिया का सन्धान करती हैं। उद्योग की प्रक्रिया में लोगों के नये सम्बन्धों का सन्धान करती हैं। वे मज़दूरों को अपने हालात सुधारने के लिए संघर्ष करते देखती हैं। और हर आने वाले दिन के साथ स्त्री मज़दूरों का इसका अधिकाधिक विश्वास होता गया कि काम की स्थितियों ने उन्हें फ़ैक्टरियों के पुरुष मज़दूरों के साथ जोड़ दिया है, कि उन सबके हित साझा हैं, और स्त्री मज़दूरों ने यह महसूस करना शुरू किया कि वे औद्योगिक परिवार का हिस्सा हैं, कि उनके हित समूचे मेहनतकश वर्ग के साथ जुड़े हैं।

"यह सच है कि ऐतिहासिक और पारिवारिक हालात वग़ैरह के चलते उनकी वर्ग चेतना का विकास बहुत धीमा है, फिर भी स्त्री मज़दूरों की चेतना की जागृति ऐसी सच्चाई है जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता। स्त्री मज़दूर बड़ी से बड़ी तादाद में हड़तालों, मज़दूर संगठनों के आन्दोलनों और बीमा अभियान में शामिल हो रही हैं। वे दूसरे देशों की स्त्री मज़दूरों के जीवन में रुचि लेती हैं और अन्तरराष्ट्रीय दृष्टिकोण रखती हैं। अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस अत्यन्त सांगठनिक महत्त्व का आयोजन है।"

उसके बाद उन्होंने मई 1 के आयोजन के साथ अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के आयोजन की तुलना की। 1913 में रूस में पहले अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस का आयोजन एक उत्तेजक अभियान था जिसने जनता के सामने स्त्री मज़दूरों की दोहरी गुलामी के कारण और उनकी मुक्ति के तरीक़े पेश किये। लेकिन उसने सर्वहारा स्त्री मज़दूरों के लिए सांगठनिक आधार नहीं तैयार किया। इसलिए 1914 में आरएसडीएलपी की केन्द्रीय कमेटी ने व्यापक और गहन स्तर पर गतिविधियाँ चलाने का निश्चय किया। साल के प्रारम्भ में केन्द्रीय कमेटी के तत्त्वावधान में सर्वहारा ज़िलों में कई हॉलों में स्त्री दिवस सभाओं के आयोजन के लिए एक विशेष कमेटी का गठन किया गया। उन्हें सभाओं के आयोजन और 'वूमन वर्कर' के सम्पादकीय मण्डल में काम करने के लिए भी फ़ैक्टरियों और कारख़ानों से प्रतिनिधियों की सूची तैयार करने का काम सौंपा गया।

तेज़ी से काम चलता रहा। व्याख्यानों की व्यवस्था करने के लिए अनुमति ली गयी, हॉल तलाशे गये। मीटिंगों के चेयरमैन नियुक्त किये गये और फ़ैक्टरियों के जीवन के विस्तृत ब्योरों के साथ मुख्य व्याख्यानों के पूरक के तौर पर स्त्री मज़दूरों के बीच से वक्ता चुनी गयीं जो व्याख्यानों में व्यक्त किये गये मुख्य विचारों की व्याख्या और पुष्टि करतीं। व्याख्यानों के विषय पर न सिर्फ़ कमेटी में बल्कि

फ़ैक्टरियों के विभिन्न बोल्शेविक सेलों में भी चर्चा की गयी जो कमेटी की बैठकों में प्राय: अपने प्रतिनिधि भेजते रहते थे। विशेष रूप से ऐवास फ़ैक्टरी से प्राय: प्रतिनिधि निकोलेयेवा, एमिल्या सोल्निन आते रहते थे। ऐवास फ़ैक्टरी उस समय काम करने की अगली क़तारों में थी।

लेकिन काम की व्यापकता और उसकी गहनता के अपने प्रतिकूल प्रभाव भी थे। प्रतिकूल इस मामले में कि उन्होंने 23 फ़रवरी के आने के काफ़ी पहले ही उसकी ओर पुलिस का ध्यान खींच लिया। एक दिन पुलिस ने दफ़्तर में मौजूद सारे लोगों को अचम्भे में डालते हुए वहाँ छापा मार दिया। मण्डल की बैठक पूरी तरह क़ानूनी थी क्योंकि अख़बार 'स्वीकृत' अख़बारों की सूची में था लेकिन यह स्वीकृति पुलिस के लिए महज़ काग़ज़ का एक टुकड़ा थी। सम्पादक मण्डल को आधिकारिक आदेश दिखाया गया जिस पर ये अपशगुनी शब्द लिखे थे : "जगह की तलाशी लो और तलाशी में कुछ मिले या न मिले, वहाँ मौजूद सभी प्रतिनिधियों को गिरफ़्तार कर लो।" नयी शामिल हुई स्त्री मज़दूरों समेत कुल मिलाकर तीस लोग गिरफ़्तार किये गये।

'द कम्युनिस्ट वूमन' ने 1923 में समोइलोवा का एक लेख छापा जिसमें उन्होंने इसका जीवन्त ब्योरा दिया था कि कैसे गिरफ़्तार लोगों ने जेल में अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस मनाया। उसका कोलाहल सुनकर समूचा जेल प्रशासन भयभीत हो गया और वह कोलाहल सड़कों पर भी सुना गया।

लेकिन अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस केवल जेल में ही नहीं मनाया गया। यह सच है कि सेण्ट पीटर्सबर्ग में हर तरह की सभाओं पर रोक लगी हुई थी। सिर्फ़ बोल्शेया ग्रेबेत्स्काया स्ट्रीट पर स्थित फ़्योदोरोवा हॉल में एक आयोजन हुआ। लेकिन बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष उन हॉलों पर भी पहुँचे जहाँ सभाएँ होनी थीं, इससे सड़कों पर भारी भीड़ जमा हो गयी। फ़्योदोरोवा हॉल पर इतने सारे लोग आये कि उनमें से आधे हॉल में पहुँच ही नहीं सके। हॉल में पाँच सौ लोग जमा थे। वक्ताओं में मेंज़िंस्काया और पोवलोवा नाम की एक स्त्री मज़दूर शामिल थी। दूसरी सभाएँ इसलिए नहीं हो सकीं कि वक्ताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया था। पुलिस ने फ़्योदोरोवा हॉल की सभा में भी खलल डाला – पुरुषों की क्रुद्ध भीड़ सड़क पर आ गयी और *मार्सईएज* गाने लगी। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर कर दिया। बहरहाल पुरुषों का विशाल मोर्चा विभिन्न सड़कों पर से होकर *मार्सईएज* और दूसरे क्रान्तिकारी गीत गाते हुए नेव्स्की प्रॉस्पेक्ट तक गया। दूसरे अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस समारोह के आयोजन में स्त्रियों में बेहतर वर्ग चेतना और ज़्यादा एकजुटता

देखने को मिली।

अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस सिर्फ़ पीटर्सबर्ग में ही नहीं बल्कि मास्को और दूसरे कई शहरों में भी मनाया गया। सारी रूसी मज़दूर स्त्रियाँ इसके बारे में जान गयी थीं। दमन के बावजूद *वूमन वर्कर* बहुत तेज़ी से बिका, बार-बार एक हाथ से दूसरे हाथ में, एक पाठक से दूसरे पाठक तक पहुँचा और संघर्ष के लिए लगातार नयी ताक़तों को उत्तेजित करता रहा।

इस अख़बार ने रबड़ उद्योग में घटी त्रासद घटनाओं के मामले में बड़ी भूमिका निभायी, जिसमें उत्पादकों के लालच और ज़ारवादी निरीक्षकों की लापरवाही के चलते बड़ी तादाद में स्त्री-पुरुष विषाक्तता के शिकार हुए थे। एलिज़ारोवा ने "वे नाराज़ हैं" शीर्षक से एक बड़ा ही विचारोत्तेजक लेख लिखा जिसके लिए वूमन वर्कर का तीसरा अंक ज़ब्त कर लिया गया।

वूमन वर्कर बोल्शेविक अख़बार बन गया जिसकी स्थापना स्त्री मज़दूरों के कोपेकों की बदौलत हुई थी और उन्हीं का समर्थन उसे चला रहा था।

नताशा, स्त्री मज़दूर और अक्टूबर क्रान्ति

"हमें यूरोप की मौजूदा श्मशान-जैसी नीरवता के धोखे में नहीं आना चाहिए," लेनिन ने कहा। "यूरोप क्रान्तिकारी भावना से आवेशित है। साम्राज्यवादी युद्ध की राक्षसी भयावहता, महँगाई से पैदा हुई बदहाली, हर जगह क्रान्तिकारी भावना को जन्म दे रही है। और सत्ताधारी वर्ग, अपने चाकरों के साथ बुर्जुआ वर्ग, सरकारें अधिकाधिक एक अन्धी गली की तरफ़ बढ़ रही हैं, जहाँ से ज़बरदस्त उथल-पुथल के बिना वे कभी भी बाहर नहीं निकल सकतीं।

"ठीक वैसा ही जैसाकि 1905 में रूस में एक जनवादी गणराज्य की स्थापना के लक्ष्य के साथ सर्वहारा के नेतृत्व में ज़ारशाही शासन के ख़िलाफ़ एक आम बग़ावत हुई थी, आने वाले वर्षों में, यूरोप में भी, इसी परभक्षी युद्ध की वजह से सर्वहारा के नेतृत्व में वित्तीय पूँजी की शक्ति के ख़िलाफ़, बड़े बैंकों के ख़िलाफ़, पूँजीपतियों के ख़िलाफ़ आम बग़ावतें होंगी और समाजवाद की विजय के बिना, बुर्जुआ वर्ग के स्वामित्वहरण के बिना इन विप्लवों का अन्त नहीं होगा।"

(*1905 की क्रान्ति पर लेनिन का भाषण, लेनिन, संकलित रचनाएँ, खण्ड 19*)।

लेनिन ने ये बातें 1917 की जनवरी में कही थीं। उसी साल 23 फ़रवरी को मेहनतकश जनता का एक आन्दोलन शुरू हुआ – एक ऐसा आन्दोलन जिसे 1914 में अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद ने बाधित कर दिया था। युद्ध ने मामले को

सिर्फ़ टाल दिया था, और इस देरी से बेड़ियाँ और भी कस गयीं। आन्दोलन की शुरुआत एक उच्चतर धरातल, एक व्यापक आधार पर हुई। 12 मार्च को जब लेनिन अभी जेनेवा में ही थे, आगामी घटनाक्रमों के बारे में उनका निम्न आकलन था :

"उन समाजवादियों की भविष्यवाणी सच साबित हुई जो युद्ध की नृशंस और पाशविक भावना से अप्रभावित रहकर समाजवाद के प्रति वफ़ादार बने रहे। विभिन्न देशों के पूँजीपतियों के बीच छिड़ गये विश्वव्यापी परभक्षी युद्ध के चलते पहली क्रान्ति फूट पड़ी। साम्राज्यवादी युद्ध, यानी पूँजीपतियों द्वारा लूट के माल के बँटवारे के लिए, कमज़ोर जनता को कुचलने के लिए छिड़ा युद्ध, गृहयुद्ध में, अर्थात एक ऐसे युद्ध में तब्दील होने लगा जो पूँजीपतियों के ख़िलाफ़ मज़दूरों का, ज़ारों और राजाओं, ज़मींदारों और पूँजीपतियों के ख़िलाफ़ मेहनतकशों और उत्पीड़ितों का युद्ध था, युद्धों से मानवता की, ग़रीबी से जनता की और इन्सान के हाथों इन्सान के शोषण से सम्पूर्ण मुक्ति का युद्ध था।

"क्रान्ति का, यानी अकेला विधिसंगत, न्यायोचित और महान युद्ध का, उत्पीड़कों के ख़िलाफ़ उत्पीड़ितों के युद्ध का, प्रणेता होने का गौरव और सौभाग्य रूसी मज़दूरों को मिला है।

"पेत्रोग्राद के मज़दूरों ने ज़ारशाही को उखाड़ फेंका है। पुलिस और ज़ार की सेनाओं के ख़िलाफ़ अपने साहसिक युद्ध में, मशीनगनों के सामने निहत्थे मज़दूरों ने बग़ावत की शुरुआत कर पेत्रोग्राद की दुर्ग सेना के अधिकांश सिपाहियों को अपनी तरफ़ कर लिया। मास्को और दूसरे शहरों में भी यही हुआ। अपनी सेनाओं द्वारा ठुकराये गये ज़ार को आत्मसमर्पण करना पड़ा – उसने अपने और अपने बेटे के राजगद्दी छोड़ने के काग़ज़ पर हस्ताक्षर किये। उसने प्रस्ताव रखा कि राजगद्दी उसके भाई माइकल के हवाले कर दी जाये।

"विद्रोह की अत्यन्त द्रुतगति के चलते, अंग्रेज़-फ़्रांसीसी पूँजीपतियों की सीधी मदद के चलते, पेत्रोग्राद के मज़दूरों, जनता के बीच पर्याप्त वर्गीय चेतना के अभाव के चलते, तथा रूसी ज़मींदारों और पूँजीपतियों के संगठन और तैयारी के चलते पूँजीपति राजसत्ता पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब रहे।"

(*लेनिन, रूस में क्रान्ति और सभी देशों के मज़दूरों के कार्य, संकलित रचनाएँ, खण्ड 20, पृष्ठ 64*)।

1917 में ज़ारशाही का तख़्ता पलटे जाने के बाद बनी केरेंस्की की अन्तरिम सरकार को लेनिन ने इसी तरह परिभाषित किया था।

दरअसल, मज़दूर इस तरह की सरकार पर विश्वास नहीं कर सके। मज़दूरों ने

रोटी, अमन और आज़ादी की ख़ातिर लड़ते हुए राजतन्त्र को उखाड़ फेंका था। पेत्रोग्राद के मज़दूरों ने ज़ारशाही को पराजित करने के फ़ौरन बाद, स्वयं अपना संगठन – मज़दूर प्रतिनिधियों की सोवियतें – बनाया और उसे तत्काल संगठित व विस्तारित करना तथा सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की स्वतन्त्र सोवियतों का गठन करना शुरू कर दिया।

इत्तेफ़ाक़ से फ़रवरी क्रान्ति का पहला दिन अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस का दिन भी था। युद्ध ने स्त्री मज़दूरों और किसानों की भारी आबादी को रूसी जीवन की वास्तविकता के रू-ब-रू कर दिया था। रूसी स्त्रियों का घरेलू जीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया था और उन्हें देश के आर्थिक जीवन के भँवर में घसीट लिया गया था। मज़दूर स्त्रियाँ युद्ध में गये अपने पतियों की जगह मशीनों पर काम कर रही थीं। जबकि किसान स्त्रियाँ खेत में हल चला रही थीं (युद्ध के लिए उनके पति और घोड़े अक्सर बलात् भरती कर लिये जाते थे)।

1916-17 की सर्दियों के दिन बहुत विकट थे। खाद्य पदार्थों के दाम तेज़ी के साथ आसमान छूने लगे। खाने-पीने की चीज़ों की क़िल्लत थी और दूकानों पर लम्बी क़तारें लगी रहतीं।

फ़रवरी 1917 के अन्त में "युद्ध मुर्दाबाद," "राजशाही मुर्दाबाद" के नारे के साथ पेत्रोग्राद और मास्को की तमाम बड़ी फ़ैक्टरियों में एक के बाद एक हड़तालें होती गयीं। इस आन्दोलन का मार्गदर्शन बोल्शेविक कर रहे थे। स्त्री मज़दूरों ने, जिनकी तादाद फ़ैक्टरियों में काफ़ी बढ़ गयी थी और जिनके कन्धों पर अपने परिवारों के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी आ पड़ी थी, इस आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। स्त्रियों का आन्दोलन स्वतःस्फूर्त ढंग से शुरू हो गया। अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस ने उन्हें संगठन के कुछ बुनियादी तत्त्वों से परिचित करा दिया था और वे स्त्रियाँ "रोटी और अमन," तथा "हमारे पतियों को मोर्चे से वापस लाओ" के नारे के साथ सड़कों पर उतर पड़ीं।

फ़रवरी क्रान्ति के पहले दिन अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस का संयोगवश होना कोई बड़ी घटना नहीं थी। युद्ध के पहले ही इस दिन की सांगठनिक और शैक्षणिक अहमियत स्पष्ट हो चुकी थी। युद्ध के भी पहले स्त्री मज़दूर यह समझने लगी थीं कि वे समग्रता में मेहनतकश वर्ग के आन्दोलन में भाग लेकर ही मुक्ति पा सकती हैं। युद्ध के दौरान देश के आर्थिक जीवन में स्त्रियों की भूमिका बढ़ जाने के साथ महिला आन्दोलन उच्चतर मंज़िल में पहुँच गया।

23 फ़रवरी को पेत्रोग्राद में पुरानी सरकार ने स्त्रियों को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने से रोकने की कोशिश की। इससे पुतिलोव कारख़ाने में विवाद खड़ा

हो गया जो बढ़कर विरोध प्रदर्शन और क्रान्ति में तब्दील हो गया। इस प्रकार जीवन की भीषण परिस्थितियों से जन्मे एक स्वत:स्फूर्त आन्दोलन ने अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस में अपना सांगठनिक आधार हासिल किया – जो बोल्शेविकों के पार्टी कार्य की शृंखला की एक कड़ी था।

लेनिन अप्रैल में आये और बोल्शेविक शक्तियों को एकजुट करने, संगठित करने, उन्हें कार्य बाँटने, तथा आने वाली लड़ाइयों के लिए उन्हें प्रशिक्षित करने के काम ने लम्बे डग भरे। समोइलोवा जो उन दिनों पेत्रोग्राद में थीं, लेनिनवादी बोल्शेविक क़तारों के साथ अपनी समस्त स्वाभाविक ऊर्जा और उत्साह से काम करने लगीं। वह महिला कार्यकर्त्ताओं के बीच चल रहे आन्दोलन का वर्णन इन शब्दों में करती हैं : "शुरू में हमारे पास अगुवा स्त्री मज़दूरों का एक छोटा-सा समूह था जो 1913-14 में *वूमन वर्कर* के पहले प्रकाशन के समय से ही उसके इर्द-ग़िर्द इकट्ठा हो गया था।"

उसके बाद वह स्त्री मज़दूरों की राजनीतिक शिक्षा के लिए युद्ध के क्रान्तिकारी प्रभाव के बारे में प्रचार करती हैं। यह 23 फ़रवरी, 1917 की एक ऐसी स्वत:स्फूर्त कार्रवाई थी, जिसने सैनिकों के दिलों में घर कर लिया और उन्होंने लोगों पर, जो बग़ावत करने के लिए उठ खड़े हुए थे, गोलियाँ चलाने की जगह अपनी संगीनों का मुँह ज़ारशाही राजतन्त्र की ओर मोड़ दिया और तीन दिनों के भीतर ज़ारशाही के सड़े-गले तख़्तोताज को नेस्तनाबूद कर दिया। फ़रवरी क्रान्ति ने स्त्री मज़दूरों के मन में संगठन के प्रति गहरी दिलचस्पी जगायी। वे पार्टी का सदस्य बनने के लिए लालायित हो पार्टी में आने लगीं और उसमें से कई ट्रेड यूनियनों में शामिल हो गयीं।

लेनिन ने जब 21 अप्रैल, 1917 की कार्रवाई को "दुश्मन की स्थिति की टोह लेने" के रूप में निरूपित किया तब उनका यह मानना था कि क्रान्ति के पहले चरण से दूसरे चरण में संक्रमण के दौरान कार्रवाई के लिए उपयुक्त नारा "क्रान्ति के दूसरे चरण में जीत के लिए तैयार रहो" ही होगा।

और अचानक आज़ाद देश धोबिनों की आर्थिक हड़ताल से भौंचक्का रह गया – यह स्त्री मज़दूरों की क़तार में सबसे पिछड़ा तबक़ा था। लेकिन यह हैरत तब और बढ़ गयी जब पता चला कि उन्होंने जो माँगें रखी हैं उनमें लॉण्ड्रियों के राष्ट्रीयकरण और उनको स्थानीय दूमा (नगरपालिकाओं) के हवाले करने की माँग पहली माँग है। यह माँग पूँजीवादी सरकार में मज़दूर वर्ग के हितों के "प्रतिनिधि" श्रम मन्त्री सामाजिक-जनवादी ग्वोज़्देव के सामने तौरिदा पैलेस (अन्तरिम सरकार के मुख्यालय) में रखी गयी।

लेकिन मज़दूर वर्ग के हितों के "संरक्षक" ने इन माँगों को "अपरिपक्व" बताया।

पेत्रोग्राद की स्त्री मज़दूरों में, जो "तौरिदा पैलेस पर बारीक़ी से नज़र रख रही थीं" और जो वहाँ बैठे अपने "संरक्षकों" की राय से सहमत नहीं थीं, क्रान्तिकारी भावना के बढ़ने से लॉण्ड्री हड़ताल को समर्थन मिला। मज़दूर स्त्रियों ने लिखा कि "अप्रैल 21 का अन्त असन्तोषजनक रहा" लेकिन इसने हमारी आँखें खोल दीं। पूँजीपतियों के ख़िलाफ़ भरी नफ़रत और बढ़ गयी और मेंशेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों से भरोसा उठ गया।"

स्त्री मज़दूरों में बढ़ती क्रान्तिकारी भावना ऊर्जस्वी अक्टूबर क्रान्ति के महान संगठनकर्ता की नज़रों से छिपी नहीं रही, बोल्शेविक केन्द्रीय कमेटी के फ़ैसले के अनुरूप *वूमन वर्कर* का पुनर्प्रकाशन (10 मई) शुरू किया गया और इस पत्रिका ने पेत्रोग्राद की स्त्री मज़दूरों के बेहतरीन तत्त्वों को अपने इर्द-गिर्द फ़ौरन एकजुट कर लिया।

सम्पादक मण्डल में क्रुप्सकाया, इनेसा आरमाँ, स्ताल, कोल्लोन्ताई, एलिज़ारोवा, कुदेली, समोइलोवा, निकोलेयेवा और पेत्रोग्राद की बहुत-सी मज़दूर स्त्रियाँ शामिल थीं।

वूमन वर्कर के सम्पादकों ने अपने इर्द-गिर्द स्त्री मज़दूरों को एकजुट किया, सभाओं के ज़रिये व्यापक आन्दोलनात्मक काम किये, युद्ध के ख़िलाफ़, बढ़ी क़ीमतों के ख़िलाफ़ पर्चे बाँटे।

चिनीजेली सर्कस में जून में आयोजित सभा ने विशेष रूप से युद्ध के ख़िलाफ़ एक बड़ी भूमिका निभायी। जिस समय मोर्चे पर युद्ध अपने चरम पर था, जंग के ख़िलाफ़ यह अन्तरराष्ट्रीय सभा थी, जिसके विरोध में केरेंस्की और समूचे पूँजीवादी प्रेस ने ज़बरदस्त मुहिम चला रखी थी। सभा में इतनी बड़ी तादाद में मज़दूर शामिल हुए कि वहाँ पहुँचने वाले सभी स्त्री-पुरुष इमारत में समा न सके। यह तख़्ता पलटने के लिए की गयी सभा थी, जिसमें समोइलोवा ने भाषण दिया। इस सभा ने पूँजीवादी अख़बारों को बहुत क्षुब्ध किया।

वूमन वर्कर के सम्पादकों ने कारख़ानों में भी काफ़ी सांगठनिक काम किये। समोइलोवा और निकोलेयेवा इस काम में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं। हर फ़ैक्टरी ने *वूमन वर्कर* के सम्पादक मण्डल में अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर रखे थे। हर सप्ताह यह अकेली "सोवियत" एकत्र होती थी और विभिन्न इलाक़ों की रिपोर्टों पर चर्चा करती थी। इस तरह सम्पादक मण्डल फ़ैक्टरियों में चल रही हर चीज़ के बारे में जानता था और पेत्रोग्राद के सर्वहारा के

बीच उठ रही क्रान्तिकारी लहर को पहचान सकता था।

क्रान्ति अपने क्रान्तिकारी रूप खुद पैदा करती है और कारख़ानों की ये महिला प्रतिनिधि भावी महिला संगठनकर्ताओं का आदि रूप थीं, जिन्हें मज़दूर स्त्रियों के बीच काम करने के लिए कारख़ाना सेल द्वारा नियुक्त किया गया।

1917 के "जुलाई के दिनों" में, जब *प्राव्दा* के कार्यालयों को ध्वस्त कर दिया गया था, *वूमन वर्कर* ने अपने जुलाई अंक में बोल्शेविक केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों के लेख प्रकाशित किये। इन लेखों में मज़दूरों को "जुलाई के दिनों" का आशय समझाया गया था और उस रास्ते के बारे में इंगित किया गया था जिसे भविष्य में अपनाया जाना था। उसके बाद सरकार ने *वूमन वर्कर* पर भी दमन का पाटा चलाने का फ़ैसला किया। अंक निकलने के दूसरे दिन जब केरेंस्की की पुलिस सम्पादकीय कार्यालय पर पहुँची तो वहाँ कोई भी नहीं था। मज़दूर स्त्रियाँ रात ही में अख़बार की प्रतियाँ फ़ैक्टरियों में उठा ले गयी थीं।

यह सच है कि बोल्शेविक प्रेस के दमन के बाद बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ जो उन्मादी अभियान चलाया गया उसने स्त्री मज़दूरों के आन्दोलन में कुछ दुविधा पैदा कर दी। उनमें से कुछ तो बोल्शेविक विरोधी अख़बारों के उस कुत्सा प्रचार से भी प्रभावित होती जान पड़ीं जिसमें लेनिन पर जर्मन जासूस होने का आरोप लगाया गया था।

अपने एक पर्चे में समोइलोवा ने कटुता से (और साथ ही साथ इस बात पर ज़ोर देते हुए कि हमें आलोचनाओं और ग़लतियों के सामने आने से नहीं डरना चाहिए) कहा कि "जुलाई के दिनों" के बाद कुछ स्त्री मज़दूर जो बोल्शेविक पार्टी में पहले ही शामिल हो चुकी थीं, डाँवाडोल होने लगीं। उनमें से एक-दो ने 'वूमन वर्कर' के कार्यालय में आकर यह कहते हुए अपने पार्टी कार्ड फेंक दिये कि "वे जर्मन जासूसों की पार्टी में नहीं बने रहना चाहतीं।"

लेकिन इन उतारों-चढ़ावों ने समोइलोवा और निकोलेयेवा को अपने सांगठनिक, आन्दोलनात्मक और प्रचारात्मक कार्यों को और तेज़ करने की प्रेरणा दी।

समोइलोवा की पहल पर उन्होंने स्त्री कार्यकर्त्ताओं के अध्ययन के लिए छोटी अवधि वाले पाठ्यक्रम आयोजित किये और कारख़ानों की हमारी अधिकतर संगठनकर्ता इन पाठ्यक्रमों में शामिल हुईं। समोइलोवा इन पाठ्यक्रमों का निर्देशन करतीं और उनमें पढ़ाती भी थीं। उसके बाद मज़दूर स्त्रियों के बीच काम का एक नया तरीक़ा सोचा गया यानी स्त्री मज़दूर कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाना।

निश्चित रूप से यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह विचार समोइलोवा की

निर्विवाद संगठनात्मक प्रतिभा से प्रेरित था या इस क्षेत्र में काम कर रहे उन सभी साथियों के दिमाग़ में स्वत:स्फूर्त ढंग से आया था जो अक्टूबर क्रान्ति की ज़बरदस्त तैयारियों में लगे हुए थे। चाहे जिस भी वजह से यह हुआ हो, जनसंगठन के इस नये रचनात्मक रूप की तैयारियों का काम जल्दी ही ज़ोर-शोर से शुरू हो गया। सभी फ़ैक्टरियों में चुनाव कराये गये जिससे पिछड़ी चेतना की स्त्री मज़दूर कार्यकर्त्ताओं को जागृत करने और साहसी हरावल के स्तर तक उनका उन्नयन करने में मदद मिली जिन्होंने लाल अक्टूबर की सर्जना की। यह चुनाव सक्रिय काम का, सक्रिय क्रान्तिकारी संघर्ष का आह्वान था।

वे बैठकें, जिनमें स्त्री मज़दूरों की प्रतिनिधि अपनी जुझारू सहायक – समोइलोवा और निकोलेयेवा से विचार-विमर्श करतीं, खेरसन स्ट्रीट के "यूनिटी" क्लब में शनिवार के दिन होती थीं। मज़दूरों की आम क़तारों को रिपोर्टें दी जातीं और सम्मेलन में चुनावों के नतीजों की रिपोर्टें भी होतीं। ये रिपोर्टें पेत्रोग्राद के सर्वहारा में व्याप्त आम जज़्बे का वास्तविक बैरोमीटर होतीं।

समोइलोवा अच्छी तरह जानती थीं कि बैरोमीटर "तूफ़ान" का संकेत दे रहा है। सम्मेलन अक्टूबर के अन्त में बुलाया गया था। यह शुरू हो गया, परन्तु इसके शुरू होने के साथ "दस दिन जब दुनिया हिल उठी" की भी शुरुआत हो गयी। तब सम्मेलन को किसी भावी तिथि तक के लिए स्थगित कर देने का निर्णय लिया गया ताकि वे प्रतिनिधि, जो अपनी-अपनी फ़ैक्टरियों में जनता के संगठनकर्ता थे, इन निर्णायक दिनों में अपनी तैनाती वाली जगहों पर बने रहने और अक्टूबर क्रान्ति के संघर्ष में अपना कर्त्तव्य निभाने में सक्षम हो सकें। अक्टूबर क्रान्ति के सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने के बाद नवम्बर में सम्मेलन दोबारा शुरू हुआ। निकोलेयेवा अध्यक्ष और समोइलोवा उसके अध्यक्षीय मण्डल की सदस्य थीं। सम्मेलन में पेत्रोग्राद की सभी सक्रिय महिला कार्यकर्त्ता थीं – ऐवास संयन्त्र की एमिल्या सोल्निन, बेसली आइलैण्ड पाइप फ़ैक्टरी की विनोग्रेदोवा, वायवोर्ग स्थित "नित्का" फ़ैक्टरी की स्पिनर वासिना, एरिक्सन फ़ैक्टरी की मिआश (जो बाद में युदेनिच के मोर्चे पर वीरगति को प्राप्त हुईं) वग़ैरह।

बिलकुल शुरुआत से ही, सम्मेलन ने सभी मौजूद लोगों की उन्नत वर्गीय चेतना को प्रकट किया। सम्मेलन स्वयं को मज़दूर वर्ग की सत्ता का अंग महसूस करता था। अध्यक्ष मण्डल पर टिप्पणियों की झड़ी लग गयी। यह पूछा गया कि जिनोविएव और कामेनेव ने पार्टी की कन्द्रीय कमेटी क्यों छोड़ी थी, राइकोव और लुनाचार्स्की ने जनकमिसार की परिषद से इस्तीफ़ा क्यों दिया था? (जिनोविएव और कामेनेव अक्टूबर क्रान्ति शुरू करने के निर्णय से असहमत थे। राइकोव और

लुनाचार्स्की तथाकथित जनवादी पार्टियों के ख़िलाफ़ पार्टी द्वारा अख़्तियार किये गये सख़्त रुख़ से असहमत थे।) उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए पार्टी ने क्या किया? सम्मेलन ऐसे क्षणों में निष्क्रिय नहीं रहना चाहता था, जब निष्क्रियता मज़दूर वर्ग की सत्ता को कमजोर कर सकती थी।

समोइलोवा के भाषण के फ़ौरन बाद निम्न प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया :

"स्त्री मज़दूर कार्यकर्त्ताओं की यह बैठक माँग करती है कि सदस्यगण पार्टी अनुशासन का पालन करें और यह भी कि क्रान्तिकारी सर्वहारा की पार्टी की अखण्डता और एकता को बनाये रखने के लिए – जो इस समय अन्तरराष्ट्रीय सर्वहारा के क्रान्तिकारी आन्दोलन के हरावल का द्योतक है – मौजूदा हालात से निकलने का कोई रास्ता निकाला जाये। सिर्फ़ सुनिश्चित क्रान्तिकारी लाइन पर डटे रहकर ही रूस का सर्वहारा समाजवाद के लिए अन्तरराष्ट्रीय सर्वहारा के क्रान्तिकारी आन्दोलन को मज़बूती प्रदान कर सकता है।"

डाँवाडोल होने वाले साथियों को उन स्त्री मज़दूरों की जुझारू भावनाओं से अवगत कराने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल स्मोल्नी भेजा गया, जहाँ पेत्रोग्राद में संघर्ष कर रहे क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं का आम मुख्यालय था। उन स्त्री मज़दूरों ने उनके आचरण की कठोर शब्दों में निन्दा की। देर रात यह फ़ैसला लिया गया। समय गँवाने का अवसर नहीं था। प्रतिनिधिमण्डल रातोरात स्मोल्नी रवाना हो गया।

स्त्री मज़दूर कार्यकर्त्ता इस सम्पूर्ण विश्वास के साथ बैठक से विदा हुईं कि बतौर स्त्री मज़दूर प्रतिनिधि वे पार्टी अनुशासन भंग करने वाले कॉमरेडों को प्रभावित कर लेंगी। मज़दूर स्त्रियाँ इस बात से आक्रोश में थीं कि ऐसे वक़्त जब सारी दुनिया की नज़रें रूस पर टिकी हुई थीं, हमारी क़तारों में कोई फूट पड़े, जिसके चलते वह ख़तरा जो हम पर मँडरा रहा है, हमारे दुश्मनों की निगाहों में आ जाये। स्मोल्नी पहुँचकर वे सबसे पहले लेनिन से मिलने गयीं। उन्होंने यह कहकर उन्हें शान्त करा दिया कि ऐसे कॉमरेडों का भ्रम जल्द ही दूर हो जायेगा, जो यह मानते हैं कि तथाकथित जनवादी संगठनों के साथ समझौते की अभी भी कोई गुंजाइश बची है।

"सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लें, कॉमरेड लेनिन, हम मज़दूर स्त्रियाँ बस यही चाहती हैं," प्रतिनिधिमण्डल ने लेनिन से कहा। इसके जवाब में उनका कहना था : "मुझे नहीं बल्कि आप मज़दूरों को सत्ता अपने हाथ में ले लेनी चाहिए। अपनी-अपनी फ़ैक्टरियों में वापस जाइये और मज़दूरों से यही बताइये।"

पेत्रोग्राद की स्त्री मज़दूर हर परिस्थिति में साथ रहीं। वे एकजुट होकर लेनिन के पीछे चल रहे पेत्रोग्राद के सर्वहारा वर्ग के साथ, कन्धे से कन्धा मिलाकर

चलीं। सही नेतृत्व और कम्युनिस्ट पार्टी के महान कार्यों की वजह से (समोइलोवा इस काम में पहली क़तार के लोगों में से एक थीं) मज़दूर स्त्रियाँ पेत्रोग्राद के उन तमाम क्रान्तिकारी मज़दूरों के कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ीं, जिनके हाथों में उस वक़्त अक्टूबर क्रान्ति का भविष्य था।

स्त्री श्रमिकों और माताओं व नवजात शिशुओं की सुरक्षा के सवाल पर सम्मेलन ने कई प्रस्ताव पारित किये, जो आगे चलकर सोवियत सरकार द्वारा इस क्षेत्र में बनाये गये क़ानूनों का आधार बने। उसने कॉमरेड निकोलेयेवा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमण्डल किसान प्रतिनिधियों की सोवियतों के अधिवेशन में भेजने का निर्णय किया, जिसका सत्र उस समय चल रहा था। यह प्रतिनिधिमण्डल जनकमिसार परिषद को, जिसे हाल ही में बोल्शेविकों ने मज़दूर वर्ग की सरकार के एक अंग के रूप में संगठित किया था, समर्थन देने के पेत्रोग्राद की स्त्री मज़दूरों के फ़ैसले की सूचना देने के लिए भेजा गया था।

समोइलोवा ने अक्टूबर क्रान्ति में अपनी तमाम क्रान्तिकारी सक्रियता को, क्रान्ति की जीत में सहभागी बनी मज़दूर स्त्रियों के इस सशक्त सर्जनात्मक उभार के साथ एकरूप कर दिया। आगे चलकर उन्होंने पार्टी के और प्रेस के क्षेत्र में सोवियतों के काम में सक्रिय भूमिका निभायी, पर साथ ही उन्होंने एक सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूप में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का भी परिचय दिया और स्त्री मज़दूरों तथा बाद में किसान स्त्रियों को कम्युनिस्ट पार्टी की क़तारों तक, सोवियत सत्ता के लिए संघर्षरत योद्धाओं की क़तारों तक, सोवियत सत्ता के निर्माताओं की क़तारों तक लाने में अपनी मेहनत लगा दी। उन्होंने जनता के बीच आन्दोलन, संगठन और प्रचार के नये रूप लागू किये। ये सारे नये रूप सम्भवत: उनके सुझाये हुए नहीं थे, लेकिन वे हमेशा उन पर विस्तार से काम करतीं और लोगों के बीच उन्हें लागू करतीं। नतीजा हमेशा एक ही रहा, जनता संघर्ष और रचनात्मक क्रान्तिकारी काम के लिए जागृत, संगठित और उद्वेलित हो जाती।

1918। लेनिन ख़तरे से आगाह करते हैं, "अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद ने रूस पर हमला कर दिया है। वह हमारे देश को लूट रहा है।"

यह हस्तक्षेप की शुरुआत थी, गृह युद्ध की शुरुआत थी। नयी समस्याएँ उठ खड़ी हुईं, मसलन दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिए स्त्री मज़दूरों को कैसे प्रोत्साहित, संगठित और आन्दोलित किया जाये। ये समस्याएँ हल कर ली गयीं। अक्टूबर क्रान्ति के दौरान हुए पेत्रोग्राद महिला सम्मेलन की याद उसके आयोजकों के दिमाग़ में अभी तक ताज़ा थी। उन्होंने समूचे युवा रूसी गणराज्य की स्त्री

मज़दूरों का ग़ैर-पार्टी सम्मेलन बुलाने का निर्णय लिया। आगे चलकर इस सम्मेलन में न केवल स्त्री मज़दूरों बल्कि किसान स्त्रियों को भी शामिल करने के लिए इसके दायरे को और विस्तारित किया गया। इसकी शुरुआत करने वालों में निस्सन्देह समोइलोवा भी थीं।

कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने, अपने सचिव स्वेर्दलोव के ज़रिये, इस प्रस्ताव का समर्थन किया। उन्होंने न केवल इसका समर्थन किया बल्कि इसे भारी मदद भी दी। उन्होंने इस नये और कठिन काम में कई ठोस उपाय सुझाये। इलाक़े की पार्टी कमेटियों से उन्होंने सहयोग का आह्वान किया। इस अधिवेशन की तैयारी के लिए एक आयोजक समूह का गठन किया गया। उसके सदस्य अधिवेशन के लिए आन्दोलन चलाने, क्रान्ति की कगार पर खड़े उस विशाल देश के सभी हिस्सों से अधिवेशन के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव कराने निकल पड़े जो खुद अपने अस्तित्व के लिए अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष कर रहा था। हर तरफ़ युद्ध का मोर्चा खुला हुआ था, ज़िले के ज़िले तबाह-बर्बाद हो रहे थे, मार-काट मची हुई थी।

समोइलोवा ने सांगठनिक समस्याओं पर काम किया और '**कम्युनिस्ट पार्टी और स्त्री मज़दूर**' पर एक रिपोर्ट तैयार की। सोवियत सत्ता के संघर्ष और इस सत्ता को सुदृढ़ करने के संघर्ष के इतिहास में इस अधिवेशन का विशिष्ट स्थान है। लेनिन ने इस कांग्रेस में बोलते हुए इसके महत्त्व को यदि रेखांकित किया, तो ऐसा करने का पर्याप्त कारण उनके पास मौजूद था।

इस अधिवेशन में आये प्रतिनिधियों के प्रामाणिक काग़ज़ात, जो अभिलेखागारों में सुरक्षित रखे हुए हैं, बताते हैं कि इसके आयोजन के लिए किस हद तक जाकर काम किया गया था और कितनी बड़ी तादाद में स्त्री मज़दूर इसमें शामिल हुई थीं। उस समय जब देश में गृह युद्ध चल रहा था, जब अन्तरराष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग के दलाल मेहनतकशों के नवजात गणराज्य का जन्मते ही गला घोंटने की कोशिशों में लगे हुए थे, कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के आह्वान पर हर जगह की फ़ैक्टरियों के पुरुष और स्त्री मज़दूर संघर्ष के लिए कार्यकर्त्ताओं की नयी क़तार में शामिल होने के लिए आगे आये। समूची पार्टी और सभी फ़ैक्टरियों ने इस आह्वान का जवाब दिया और इसकी अहमियत को समझा था।

उदाहरण के लिए, उन प्रामाणिक काग़ज़ातों के धुँधले पड़े पन्ने पलटने पर हम देखते हैं कि किस प्रकार कपड़ा उद्योग के मज़दूर कार्यकर्त्ताओं की क़तार में शामिल हो गये थे। उनमें अधिकांश स्त्रियाँ कपड़ा मज़दूर थीं। फ़ैक्टरियों में पुराने

नामों के साथ-साथ, जो पूँजीवादियों के ख़िलाफ़ पहले के संघर्षों के चलते जाने जा चुके थे, नये नाम भी दिखायी पड़े। इस प्रकार, ओरेखोवो जुएवो स्थित मोरोज़ोव फ़ैक्टरी ने, जिसमें 16,214 महिला मज़दूर थीं, कांग्रेस में अपने प्रतिनिधि भेजे; उनके बाद ताम्बोव गुबेर्निया स्थित रेजोरोनोव, वाख़रोमेयेव, देदोव और रेज्काजोव फ़ैक्टरियों की प्रतिनिधि आयीं। पर्म और समारा से कई प्रतिनिधियों को भेजा गया। फ़ैक्टरियों के पुराने नामों के अलावा नये क्रान्तिकारी नाम भी देखने को मिलते हैं, जैसेकि दी रशियन रिपब्लिक फ़ैक्टरी, दी फ़िफ़्थ पीपुल्स टोबैको वर्क्स। प्रामाणिक कागज़ात पार्टी संगठनों, फ़ैक्टरी कमेटियों, ट्रेड यूनियनों, ज़िला कार्यकारी समितियों द्वारा जारी किये गये हैं। सभी मज़दूर स्त्रियाँ थीं, सिर्फ़ एक स्कूल अध्यापिका और एक किसान स्त्री पेलेजेया पर्फिल्येवा के अपवाद को छोड़कर, जो कोसिलोवो गाँव की थी और ग़रीब किसानों की कमेटी का प्रतिनिधित्व करती थी। आगे चलकर मास्को में स्त्रियों की कांग्रेस की ख़बर पाकर किसान स्त्रियाँ स्वेच्छा से आयीं।

इस अधिवेशन ने, जिसमें यातायात सुविधाओं की भारी किल्लत के बावजूद विभिन्न ज़िलों से थोड़े समय में ही ग्यारह सौ महिला प्रतिनिधि आ पहुँची थीं, संगठन और शिक्षा के महान और जुझारू काम को अंजाम दिया। इसने क्रान्तिकारी अनुभवों के आदान-प्रदान में पहल की। दूरदराज के इलाक़ों की मज़दूरों ने जाना कि पेत्रोग्राद की मज़दूर स्त्रियाँ किस प्रकार एक नयी जीवनशैली का आगाज़ कर रही हैं। इसने संघर्ष और निर्माण कार्य के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। समोइलोवा लिखती हैं : "इस अधिवेशन ने सक्रिय मेहनतकश स्त्रियों के बीच कई कार्यकर्त्ताओं को पैदा किया।"

लेनिन ने, जो अब भी अपनी चोटों के चलते अस्वस्थ थे, इस अधिवेशन को सम्बोधित किया और इस दायरे में काम करने के बुनियादी सिद्धान्त प्रस्तुत किये। वह वहाँ उस समय पहुँचे जब एक खेतिहर स्त्री मज़दूर कुलक (धनी किसान) द्वारा शोषण की परेशानियों का ज़िक्र कर रही थी। उस खेत मज़दूर को यह अहसास हो चुका था कि शोषकों के ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए सभी मेहनतकशों के साथ संगठित होकर ही जीवन की कठिनाइयों से निजात पायी जा सकती है। उसने इस बात का ऐलान किया कि अनपढ़ होने के बावजूद वह समझ गयी है कि उसके इर्द-ग़िर्द क्या चल रहा है, और ज़रूरत पड़ी तो वह बन्दूक़ उठाकर मोर्चे पर जा पहुँचेगी। उसने कहा कि "जिनके दिल कमज़ोर हैं और जो बन्दूक़ नहीं उठा सकतीं, उन्हें नर्सों की हैसियत से जाना चाहिए और अपनी बातों से साथियों का हौसला बढ़ाना चाहिए।"

लेनिन ने इशारा किया कि उसे बीच में न टोका जाये। वे तब तक उसकी बात सुनते रहे जब तक कि वह बोलती रही। उन्होंने अधिवेशन का अपना स्वागत भाषण इस तरह तैयार किया कि इस किसान स्त्री की बातों का जवाब दिया जा सके। उन्होंने कहा कि पिछली क्रान्तियाँ इसलिए पराजित हो गयीं क्योंकि गाँवों ने क़स्बों का साथ नहीं दिया था। लेकिन अगर एक बार गाँवों के ग़रीब शहरी मज़दूरों का साथ दें और कुलकों के ख़िलाफ़ ख़ुद को संगठित कर लें, तो हम सच्ची समाजवादी क्रान्ति के नये दौर में पहुँच जायेंगे। कुलकों के ख़िलाफ़ चलने वाला संघर्ष किसान स्त्रियों को भी आकर्षित करेगा।

"साथियो," उन्होंने कहा, "कुछ अर्थों में सर्वहारा सेना की स्त्री आबादी का यह अधिवेशन विशेष रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इसलिए है, क्योंकि अन्य सभी देशों की स्त्रियाँ बड़ी ही मुश्किल से सक्रिय होती हैं। तमाम मुक्ति आन्दोलनों का अनुभव यह बताता है कि उनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उनमें स्त्रियाँ किस हद तक भाग लेती हैं। सोवियत सत्ता यह सुनिश्चित करने की हरचन्द कोशिश कर रही है कि स्त्रियाँ अपने सर्वहारा समाजवादी कार्य को स्वतन्त्रतापूर्वक अंजाम दे सकें।

"मेहनकश स्त्रियों के बड़े हिस्से की व्यापक भागीदारी के बिना कोई भी समाजवादी क्रान्ति नहीं हो सकती।

"अभी तक कोई भी गणतन्त्र स्त्री को मुक्त नहीं कर सका है। सोवियत सत्ता उसकी मदद करेगी। हमारा लक्ष्य अपराजेय है क्योंकि सभी देशों में एक अपराजेय मज़दूर वर्ग आन्दोलित हो रहा है। इस आन्दोलन का अर्थ है अपराजेय समाजवादी क्रान्ति का उदय।

"हमें अवश्य याद रखना चाहिए," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "कि क्रान्ति की सफलता इस बात पर निर्भर है कि उसमें स्त्रियाँ किस हद तक भागीदारी करती हैं। चूँकि वे सिर्फ़ अपनी मुक्ति के लिए ही नहीं बल्कि समाजवाद (समाजवादी अर्थव्यवस्था) के लिए भी संघर्ष में उतरने लगी हैं, इसलिए समाजवादी क्रान्ति का लक्ष्य हासिल करने के बारे में हम आश्वस्त हो सकते हैं।"

अन्त में उन्होंने कहा :

"स्त्रियाँ जाग रही हैं, समाजवाद की जीत सुनिश्चित है।"

आगे चलकर लेनिन के विचार अख़बारों और स्त्रियों के अन्य सम्मेलनों, जैसेकि 1919 में मास्को में आयोजित हुए सम्मेलन, में विस्तार से रखे गये। उन्हें नारों के रूप में देशभर में प्रचारित-प्रसारित किया गया, जिससे और स्त्रियाँ भी

प्रेरित हुईं। क्रान्तिकारी कामों और राजनीतिक जीवन में अपनी भूमिका तय करने के लिए लेनिन ने उनका आह्वान किया था।

समोइलोवा ने बार-बार अपने लेखों में इस अधिवेशन की चर्चा की है। उन्होंने इस पर अलग से एक पुस्तिका लिखी। उन्हीं की पहल पर 1920 में इस अधिवेशन के प्रस्तावों को खारकोव में पुनः प्रकाशित किया गया। बाद में जब किसान स्त्रियों के बीच काम करने का सवाल आया, तो उनकी स्मृति में उस किसान स्त्री की जीती-जागती तस्वीर उभर आयी जिसने युद्ध में अपना पति खो दिया था और यह सुनकर कि स्त्री और पुरुष मज़दूर गाँवों में ग़रीबों की मदद के लिए जा रहे हैं, उसने घोषणा की थी कि वह अपने बच्चों को छोड़ जायेगी और बन्दूक़ उठाकर इन तमाम "ज़मीन हड़पने वालों" के ख़िलाफ़ लड़ने जायेगी।

इस अधिवेशन का प्रभाव सिर्फ़ उन ग्यारह सौ प्रतिनिधियों पर ही नहीं पड़ा जो इसमें शामिल हुई थीं बल्कि उन दसियों हज़ार और कई जगह तो सैकड़ों हज़ार मज़दूरों पर भी पड़ा जिन्होंने उन प्रतिनिधियों को भेजा था।

कांग्रेस में समोइलोवा ने सांगठनिक सवालों पर चर्चा की। प्रतिनिधियों के साथ उनकी अनगिनत बार बातचीत हुई और उन्होंने उनके सामने स्पष्ट किया कि महिला मज़दूरों और किसानों को किस तरह निर्माण-कार्य में भाग लेना चाहिए। कांग्रेस में उपलब्ध प्रचुर सामग्री के आधार पर उन्होंने स्त्रियों के बीच उन बहुआयामी कामों की शुरुआत की जिससे हमारी पार्टी मज़बूत हुई और जनकार्य के उसके तौर-तरीक़ों का विकास हुआ। अधिवेशन की समाप्ति के बाद रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने स्त्रियों के बीच काम करने के लिए केन्द्रीय समिति और सभी स्थानीय पार्टी संगठनों, दोनों, के मार्गदर्शन में विशेष मशीनरी संगठित करने का निर्णय लिया।

इस अधिवेशन के परिणाम क्या रहे? इसे सोवियत सत्ता के इतिहास से जाना जा सकता है, उसके निर्माण-कार्य के उस सर्वतोमुखी विकास से जाना जा सकता है जो गृहयुद्ध के बावजूद जारी था, जो उन तमाम मोर्चों के खुल जाने के बावजूद जारी था जिनकी हिफ़ाज़त की जानी थी – पूरब में, उत्तर में, दक्षिण में और साइबेरिया में, यूराल्स में और कॉकेशस में; जबकि यूदेनिच पेत्रोग्राद के और देनीकिन ओरेल के ऐन दरवाज़े पर आ पहुँचा था । हर जगह महिला मज़दूरों और किसान स्त्रियों ने सोवियत सत्ता के लिए संघर्ष किया, खुद को निर्माण-कार्यों में झोंक दिया और उस समय चल रहे संगठन के महान काम में भागीदारी की।

लाल सेना की मदद हेतु लाल नर्सों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किये गये थे (लाल सेना के कितने ही जवान अपने जीवन के लिए इन स्त्रियों

की निष्ठा के ऋणी हैं।) लाल सेना और मज़दूरों को रसद पहुँचाने में मदद के लिए, स्त्रियों ने उन रसद टुकड़ियों में काम किया जिन्हें खाद्यान्न और दूसरे उत्पादों के कोटे में जमा करने के लिए भेजा गया था। परन्तु इन सबसे बढ़कर वे मज़दूर स्त्रियाँ थीं, जिन्हें बच्चों की देखभाल करने, नर्सरियाँ और बाल गृह चलाने, स्कूलों में गर्म भोजन की व्यवस्था करने, सिलाई केन्द्रों का संचालन आदि करने के लिए भेजा गया था। आज की युवा पीढ़ी जो दूसरी पंचवर्षीय योजना के तहत समाजवाद का निर्माण कर रही है, अपने जीवन और अपनी ऊर्जा के लिए पहले महिला अधिवेशन की सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की ऋणी है।

स्त्रियों ने सिर्फ़ पीछे के मोर्चे पर रहकर, सिर्फ़ चिकित्सीय दल का काम करके ही लाल सेना की मदद नहीं की थी। सोवियत सत्ता के पहले तीन साल का संक्षिप्त ब्योरा देते हुए *कोम्मुनिस्तका* (*कम्युनिस्ट स्त्री*) नामक पत्रिका साहस से भरपूर उन पलों का उल्लेख करती है जब देश की रक्षा के लिए मज़दूर स्त्रियों ने युद्ध में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जैसे 1919 में लुगान्स्क, और तुला का युद्ध, जब मज़दूर स्त्रियों ने यह कसम खायी थी कि अगर देनिकिन तुला के रास्ते मास्को पहुँचना चाहता है, तो वह उनकी लाशों पर से गुज़रकर ही वहाँ पहुँच पायेगा। और अन्त में लेनिनग्राद की वे मज़दूर स्त्रियाँ थीं जिन्होंने पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर अपने क्रान्तिकारी केन्द्र की हिफ़ाज़त की।

पेत्रोग्राद में 1917 में हुए ग़ैर-पार्टी स्त्री सम्मेलन और समूचे सोवियत गणराज्य की मज़दूर और किसान स्त्रियों की ग़ैर-पार्टी कांग्रेस ने साबित किया कि संगठन के ये रूप मेहनतकश स्त्रियों के जन-आन्दोलन में प्राण संचार के लिए आयोजित किये जाते हैं। समोइलोवा ने अपनी ओर से यह सुनिश्चित कराने की हरचन्द कोशिश की कि ग़ैर-पार्टी सम्मेलन को जनता के पिछड़े तबक़ों के बीच पार्टी कार्यशैली के रूप में स्वीकार किया जाये। इन सभी सम्मेलनों में कॉमरेड समोइलोवा ने हर किसी को अपनी अद्वितीय क्षमता से प्रभावित किया। वह दृढ़, अधिकारपूर्वक काम करने वाली और साथ ही सहानुभूति रखने वाली चेयरमैन थीं। इन्हीं सम्मेलनों में समोइलोवा की सांगठनिक और आन्दोलनात्मक क्षमता का भरपूर इस्तेमाल हुआ। और यहीं उन्होंने स्त्री मज़दूरों से कार्यकर्त्ता तैयार किये। वह ग़ैर-पार्टी सम्मेलनों को एक तरह का सांगठनिक और आन्दोलनात्मक कार्य मानती थीं, जिसका उपयोग तब किया जाना चाहिए जब आम जनता को सीधी कार्रवाई के लिए प्रेरित और निर्देशित करने की ज़रूरत हो। 1919 में आयोजित मास्को का ग़ैर-पार्टी सम्मेलन इसका उदाहरण है। मास्को में उन दिनों कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी और भुखमरी का आलम था। मज़दूर और किसान स्त्रियों का ग़ैर-पार्टी

सम्मेलन आयोजित हुआ लेकिन उनके बीच कामों की शुरुआत शायद ही हो पायी थी। और इन कठिन परिस्थितियों में ही ग़ैर-पार्टी स्त्री मज़दूर ज़ेव्यालोवा की दमदार आवाज़ स्वागत भाषण में गूँज उठती है : "हम मज़दूर स्त्रियाँ फ़ौलादी दीवार की तरह हैं जिसे कोई भी भेद नहीं सकता।" किसान स्त्रियों ने अभाव और तंगी के बारे में शिकायत करने के बजाय इस बात का विरोध किया कि कुलक उन्हें काम करने का मौक़ा नहीं देते। उन्होंने कहा, "हमारे पास कॉमरेडों को भेजिये जो ग़रीब जनता का साथ देंगे, और सोवियत सत्ता का हम स्वागत करेंगे।" या यूक्रेन में मज़दूर और किसान स्त्रियों के सम्मेलन को ही लीजिये जहाँ कई बार मज़दूर विजयी रहे हैं और फिर अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद के नेतृत्व में जहाँ प्रतिक्रान्ति के ज़रिये निर्दयतापूर्वक प्रतिशोध लिया गया है। उस दौरान स्त्रियों ने वहाँ क्या-क्या दु:ख नहीं झेले – वे बर्बर आततायियों के उन गिरोहों से घिरी हुई थीं जो कम्युनिस्टों का शिकार करते, स्त्रियों को प्रताड़ित करते, तथा स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े किसी को भी नहीं बख़्श रहे थे। यूक्रेन की पार्टी की अग्रणी संगठनकर्ता कॉमरेड होपनर उन दिनों के यूक्रेन की तस्वीर कुछ इस तरह पेश करती हैं :

"जब हम लाल सेना के साथ यूक्रेन लौटे, तो हमें ऐसा नज़ारा देखने को मिला, जिससे सख़्त से सख़्त लोगों का दिल दहल उठा था। सर्दी में नंगे पाँव, चीथड़ों में लिपटी, बदहाल कम्युनिस्ट स्त्रियों का रेला, कम्युनिस्टों की बहन और बेटियाँ या साधारण मज़दूर और किसान स्त्रियाँ – ये सभी सोवियत या पार्टी संगठनों की ओर बढ़ती जा रही थीं।

"कोई भी सोच सकता था कि उनकी यातनाएँ राजनीतिक काम के आड़े आयेंगी, कि हमें सिर्फ़ उन्हें खाना, कपड़ा और सिर छिपाने की जगह वग़ैरह ही देनी चाहिए, कि दूसरे सवालों में अब उनकी कोई ख़ास रुचि नहीं होगी।..."

वह आगे कहती हैं कि उनके खारकोव पहुँचने के छह हफ़्ते बाद कॉमरेड समोइलोवा खारकोव आयीं और ग़ैर-पार्टी स्त्री सम्मेलन बुलाया। वहाँ ऐसे सन्देहवादी भी थे जिन्हें ग़लतफ़हमी और शत्रुता से सामना होने की आशंका सता रही थी।

"लेकिन पहले ही सत्र ने," कॉमरेड होपनर कहती हैं, "साबित कर दिया कि हम कितना ग़लत समझ रहे थे। स्वागत और शुरुआती भाषणों ने सोवियत सत्ता और कम्युनिस्ट पार्टी में ग़ैर-पार्टी स्त्रियों की सम्पूर्ण आस्था को प्रकट कर दिया। बाद में, सम्मेलन के दौरान जब उन्होंने उन ज़ुल्मों के बारे में बताना शुरू किया जो उन्हें झेलने पड़े थे तो यह स्पष्ट हो गया कि यह वर्गीय चेतना उन कड़वे सबक़ों

का नतीजा थी। दु:स्वप्न के उन यातनाप्रद वर्षों ने हर सर्वहारा के दिल में इस चेतना की लौ जगा दी थी। बिना किसी शिकायत के, और उसी दृढ़ता के साथ उन्होंने श्वेत आतंक की बात की। एक का भाई फाँसी पर लटका दिया गया था, दूसरे के पति को गोली मार दी गयी थी, तीसरे का बेटा उसकी आँखों के सामने काट डाला गया था। उन परिवारों को कोड़े मारे गये और छड़ों से पीटा गया, जिन पर कम्युनिस्टों से सम्बन्ध होने का सन्देह था। कई प्रतिनिधियों के शरीर पर मार के निशान अभी तक मौजूद थे – उनके सिर, हाथ और पैरों पर चोटें थीं।"

सम्मेलन के बाद आम जनता के बीच सघन कामों की शुरुआत हुई। सैकड़ों की संख्या में ग़ैर-पार्टी मज़दूर स्त्रियाँ 'वर्कर्स एण्ड पीज़ेण्ट्स इंस्पेक्शन' से, शैक्षणिक विभागों से और स्वास्थ्य सम्बन्धी विभागों से जुड़ीं। सभाएँ, व्याख्यान कक्ष और पार्टी स्कूल स्त्रियों से ठसाठस भरे होते थे। "सोवियत के चुनावों में," कॉमरेड होपनर लिखती हैं, "जब मेंशेविक और उग्रराष्ट्रवादी उम्मीद कर रहे थे कि अकाल के चलते सोवियत सरकार का पतन हो जायेगा, और जब वे अपने कुत्सा-प्रचार में इस अकाल के लिए कम्युनिस्टों को ज़िम्मेदार ठहरा रहे थे, उस वक़्त मज़दूर स्त्रियाँ, लाल सेना से जुड़ी स्त्रियाँ, जो हमारी अर्थव्यवस्था की एकाएक गिरावट की मार सबसे ज़्यादा झेल रही थीं, कम्युनिस्ट पार्टी का एक मज़बूत दुर्ग साबित हुईं, और इसका श्रेय उन्हीं को जाता है कि हमारी सोवियतें कम्युनिस्ट हैं।"

अन्त में, वोल्गा के ग़ैर-पार्टी सम्मेलन को लें, जहाँ 1920 में सबसे ज्वलन्त और सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल अनाज के कोटे का था। सूखे की सम्भावना आसन्न लग रही थी और कुलकों ने अपना अनाज दबा रखा था। समोइलोवा ने 1920 में सरातोव में ग़ैर-पार्टी मज़दूर सम्मेलन बुलाया, और इसमें अपने सक्षम मार्गदर्शन के बूते वह मज़दूर स्त्रियों से स्वेच्छापूर्वक तीन सौ पचास स्त्रियों के गाँव जाने और पैदावार की जाँच करने के वास्ते उन्हें आपूर्ति दस्ते में भेजने के पक्ष में वोट दिलाने में कामयाब रहीं। "क्योंकि कुलक अकाल के हड़ीले हाथों द्वारा नवजात सोवियत सत्ता का गला घोंटना चाहते हैं।" एक सौ मज़दूर स्त्रियाँ स्थायी रूप से देहातों में काम करने चली गयीं। समोइलोवा ने अख़बारों में इसकी झलकियों के बारे में लिखा, केन्द्रीय समिति और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के स्त्री विभाग को इसकी सूचना दी और अपने पर्चों में इस सम्बन्ध में लिखा। वह सरातोव की स्त्रियों द्वारा प्रदर्शित इस पहलक़दमी का और व्यापक प्रचार करना चाहती थीं, ताकि दूसरे क़स्बों की मज़दूर स्त्रियाँ उनके उदाहरण पर अमल कर सकें।

सरातोव सम्मेलन के बाद समोइलोवा ने पार्टी के तमाम सक्रिय कार्यकर्त्ताओं

को एकत्रित किया और सम्मेलन के फ़ैसलों को कैसे अमल में लाया जाये – इस पर उनके साथ विस्तार से चर्चा की, क्योंकि उन्हें इसका पूरी तौर से अहसास था कि जिन स्त्री प्रतिनिधियों को आपूर्ति कार्य में मदद के लिए सम्मेलन भेज रहा है, उनके कामों के इर्द–गिर्द वर्ग संघर्ष संगठित हो सकेगा।

कई सिलसिलेवार ग़ैर–पार्टी सम्मेलनों के आयोजन के बाद समोइलोवा इस नतीजे पर पहुँचीं कि स्त्रियों के बीच पार्टी–कार्य जारी रखने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही है। उन्होंने लिखा :

"ग़ैर–पार्टी सम्मेलन कम्युनिज़्म के जन–स्कूल और एक ऐसी आरक्षित सेना हैं, जहाँ से नये जीवन के निर्माण के लिए हम कार्यकर्त्ताओं की फ़ौज निकाल सकते हैं। सम्मेलनों में आने वाले प्रतिनिधि अपने अगुआ कॉमरेडों के अनुभव को पिछड़े ज़िलों तक ले जाते हैं।"

उन्होंने ऐसे सांगठनिक रूप विकसित करने के नज़रिये से, जो कम्युनिज़्म के लक्ष्य के लिए पिछड़ी जनता को राजनीतिक जीवन में खींच सके, हर सम्मेलन का विशेष रूप से अध्ययन किया। साथ ही, इन सम्मेलनों ने उन्हें यह देखने का मौक़ा भी दिया कि उनके भाषणों, उनके पर्चों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में लिखे उनके लेखों को आम जनता ने किस रूप में लिया है। आलोचनाओं से बिना डरे वे लगातार उन बिन्दुओं को स्पष्ट करती रहीं, जहाँ जनता ने उनके सही आशय को समझा नहीं था। जिस दूसरे तरह के काम को समोइलोवा काफ़ी महत्त्व देती थीं, वह था अख़बारों में "स्त्री मज़दूरों का पन्ना"। ऐसे पन्ने अपने जन्म के लिए पूर्णतः उन्हीं के ऋणी हैं। वह पहली व्यक्ति थीं जिन्होंने 1918 में 'लेनिनग्राद *प्राव्दा*' में "स्त्री मज़दूरों के पन्ने" के लिए जगह निकलवायी थी और उसे इस ढंग से संगठित किया था कि "वह पन्ना" पार्टी के अन्य अख़बारों के लिए मॉडल बन गया। पर यही एकमात्र मूल्यवान विचार नहीं था, जिससे समोइलोवा ने इस काम में योगदान किया था। वह इस "पन्ने" को स्त्री मज़दूरों के पिछड़े तबक़े के बीच प्रयोग में आने वाली विशेष प्रद्धति के रूप में देखती थीं, स्त्री मज़दूरों के सक्रिय समूह बनाने के उपाय के रूप में देखती थीं।

"स्त्रियों का पन्ना" पुरानी पत्रिका *वूमन वर्कर* की तरह सर्वोपरि तौर पर एक ऐसा स्थान था, जहाँ मज़दूर स्त्रियाँ ख़ुद को व्यक्त कर सकती थीं, अपने कार्यकर्त्ता–बलों की समीक्षा कर सकती थीं और अपने कार्यभारों को पहचान सकती थीं। वह स्त्री विभाग के प्रेस को "मज़दूर और किसान स्त्रियों" के लिए प्रेस के अंग के रूप में नहीं, बल्कि ख़ुद मेहनतकश जनता के अपने अख़बार के रूप में देखती थीं। वह स्त्री मज़दूरों से लगातार कहतीं कि "यह आपका अपना

अख़बार है, इसमें आप अपनी ख़ुद की राय व्यक्त कर सकती हैं।"

कॉमरेड समोइलोवा स्त्री प्रतिनिधियों की बैठकों को भी काफ़ी महत्त्व देती थीं। समूचे सोवियत संघ में प्रतिनिधिमण्डलों की बैठकों को स्त्रियों में कामों का सबसे उल्लेखनीय रूप माना जाता है। सीपीएसयू की तेरहवीं कांग्रेस में पार्टी के नेता कॉमरेड स्तालिन ने उनके महत्त्व का उल्लेख करते हुए उन्हें पार्टी और स्त्री समुदाय के बीच की "कन्वेयर बेल्ट" कहा था। इस तरह के कामों में समोइलोवा ने कई नयी बातों की शुरुआत की। उन्होंने इसकी सांगठनिक-शैक्षणिक सम्भावनाओं का अध्ययन किया और इसे पूरी गहराई से उद्घाटित किया।

समोइलोवा ने गाँवों में प्रतिनिधिमण्डलों, किसान स्त्रियों के प्रतिनिधिमण्डलों की बैठकों को संगठित करने पर विशेष रूप से कड़ी मेहनत की। उस समय यह काम अभी बस अस्तित्व में आया ही था और इसके अच्छी तरह से संगठित होने की शुरुआतभर हुई थी, लेकिन इसका सारा सांगठनिक स्वरूप - इसके कार्यभार, नियम, दिशा-निर्देश सब कुछ समोइलोवा ने तय किये थे और प्रान्तीय स्त्री विभागों के प्रमुखों के तीसरे सम्मेलन में उन्हें व्यक्त किया था - यह एक तरह से विधायी संस्था का सम्मेलन था, जिसे पार्टी ने मज़दूर वर्ग के स्त्री तबक़े के बीच ज़िम्मेदारी के कामों का दायित्व सौंपा था।

सांगठनिक सवालों पर समोइलोवा ही रिपोर्टें तैयार करती और उन पर काम करती थीं। पार्टी की केन्द्रीय समिति के संयोजन ब्यूरो के माध्यम से जब भी स्त्री विभाग से सम्बन्धित कोई मामला उठाने की ज़रूरत होती तब हमेशा कॉमरेड समोइलोवा को ही यह काम सौंपा जाता। महज़ उनकी उपस्थिति ही प्राय: किसी विवादास्पद सवाल के समाधान को आसान बना देती।

कॉमरेड समोइलोवा की पहल पर पार्टी के नौवें अधिवेशन में एक प्रस्ताव को मंज़ूरी दी गयी थी, जिसने स्त्री सम्बन्धी विभागों की और स्त्रियों के बीच काम को तेज़ करने की आवश्यकता को एक बार फिर से पुष्ट किया।

समोइलोवा ने स्त्री सम्बन्धी विभागों की अग्रणी कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण देने में, ख़ासकर जनपदीय स्त्री प्रभागों के संगठनकर्ताओं को प्रशिक्षण देने में काफ़ी मेहनत की। उन्होंने मज़दूर आबादी के बीच से युवा प्रतिभाओं को तलाशने, मज़दूर और किसान स्त्रियों के मन में स्वयं अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास जगाने, उन्हें काम का तरीक़ा सिखाने, योद्धाओं और नये समाज के निर्माताओं के रूप में उन्हें प्रशिक्षित करने में विलक्षण क्षमता का परिचय दिया। ऐसी प्रतिभा कुछ ही लोगों में होती है। समोइलोवा के अनेक शिष्य (स्त्री और पुरुष दोनों) रूस में चारों तरफ़ फैले हुए हैं और महत्त्वपूर्ण कामों को अंजाम दे रहे हैं।

समोइलोवा को प्रकृति का एक और वरदान हासिल था अर्थात उनमें अद्‌भुत रूप से सहज, स्पष्ट और सीधे-सादे लोकप्रिय पर्चे लिखने की योग्यता थी। स्त्री मज़दूरों और किसानों के लिए लिखे गये ये पर्चे, 'कम्युनिस्ट वूमन' और *वूमन वर्कर* के "स्त्रियों के पन्ने" में उनके लेखों की ही तरह, जनता के लिए लेखन के बेहतरीन नमूने हैं। वह दृढ़ कम्युनिस्ट नज़रिये के साथ-साथ सरलता से पेश आना और जनता के जीवन के क़रीब की साधारण घटनाओं को लेकर उनसे उन अहम मुद्दों के रूप में निष्कर्ष निकालना जानती थीं जो मज़दूर वर्ग को उसके संघर्ष में चुनौती दे रहे थे। उन्हें अलंकृत और लच्छेदार जुमले पसन्द नहीं थे। उनकी शैली सरल और उनके पाठकों के अनुरूप होती थी। वह ईमानदारी और गर्मजोशी से हमेशा विषय के उपयुक्त बोलती थीं। समोइलोवा द्वारा शिक्षित कार्यकर्त्ताओं ने उनके पर्चों से रिपोर्टें तैयार करना और उन कठिन परिस्थितियों में, जिनमें ये ग्रामीण संगठनकर्ता ख़ुद को उलझा हुआ पाते थे, समाधानमूलक वार्ताएँ आयोजित करना सीखा। वे विशाल सोवियत संघ के कोने-कोने में भेजे गये, अधिकांश को कोई वेतन नहीं मिलता, रिहाइश की कोई जगह नहीं होती, पन्द्रह-पन्द्रह, बीस-बीस मील पैदल चलना होता, और जहाँ जो मिल जाये खा लेना पड़ता, ऐसे में अपनी निरन्तर जारी यात्राओं में सुनियोजित पार्टी नेतृत्व से वंचित होकर ये संगठनकर्ता आन्दोलनपरक सामग्री के लिए समोइलोवा के पर्चों का सहारा लेते थे।

गृह युद्ध समाप्त हो गया। पार्टी ने फ़ौरन मोर्चा बदलने का आह्वान किया – श्वेतों के ख़िलाफ़ युद्ध के मोर्चे से बदलकर आर्थिक बर्बादी से संघर्ष का मोर्चा खोलने का आह्वान किया। पार्टी की क़तारों और महिला विभागों के काम में अनिश्चय और ऊहापोह की स्थिति से संक्रमण का दौर और भी जटिल हो गया था। लेकिन समोइलोवा, हमेशा की अपराजेय बोल्शेविक नताशा, किसी भी तरह के ऊहापोह से मुक्त थीं, उनके सामने मार्ग स्पष्ट था और उन्होंने महिला विभागों को समाप्त करने की किसी भी कोशिश का डटकर प्रतिरोध किया। इस काम में पार्टी की केन्द्रीय समिति ने उनका साथ दिया।

अब मज़दूर फ़ैक्टरियों में वापस लौट आये थे, और किसान गाँवों में, स्त्रियों के बीच दो लाइनों पर कामों को आगे बढ़ाना था : पहला, प्रतिनिधिमण्डलों की बैठकों के शैक्षणिक कार्यों को बढ़ाकर, स्टडी सर्किल और छोटी अवधि के कोर्स चलाकर, मज़दूरों के कॉलेजों के लिए बेहतरीन कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति आदि करने का काम कर स्त्रियों को अध्ययन की सुविधाएँ उपलब्ध कराना; और दूसरा, उन स्त्री मज़दूरों की, जो अभी भी फ़ैक्टरियों में थीं, अपने नये कामों के

साथ तालमेल बिठाने, उत्पादन बढ़ाने और उत्कृष्टता में अपने पुरुष कॉमरेडों से पीछे न छूट जाने देने में उनकी मदद करना।

समोइलोवा ने जल्दी ही इन समस्याओं के समाधान का रास्ता खोज लिया। जैसेकि स्त्री मज़दूरों को सम्बन्धित उद्योग में उत्पादन की प्रक्रिया, कारख़ाने की तकनीक आदि से अवगत कराने के लिए उद्योग की विभिन्न शाखाओं मसलन कपड़ा उद्योग, सुई उद्योग के उत्पादन सम्मेलन और उत्पादन चक्र आयोजित करना। अब इन कामों को ट्रेड यूनियन से ज़्यादा घनिष्टता के साथ जोड़ने का प्रश्न उठा और तब ट्रेड यूनियन की महिला संगठनकर्ताओं की नियुक्ति हुई।

समोइलोवा ने लाखों स्त्रियों – मज़दूर और किसान स्त्रियों और तमाम मेहनतकशों को आर्थिक तबाही विरोधी संघर्ष में खींचने के लिए ज़बरदस्त आन्दोलनात्मक काम किये। उन्होंने सिलसिलेवार पर्चे लिखे, भाषण दिये, ग़ैर-पार्टी सम्मेलन आयोजित किये और ख़तरे से आगाह करते हुए, और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की तबाही के ख़िलाफ़ आम जनता को संघर्ष के लिए प्रोत्साहित करते हुए आन्दोलनपरक स्टीमर 'रेड स्टार' से वोल्गा और कामा के किनारे-किनारे लम्बी यात्राएँ कीं। अपने आन्दोलनपरक भाषणों में वह सटीक आँकड़े देने, सभी सवालों का गहन अध्ययन करने और देश के आर्थिक जीवन को संचालित करने वाली सोवियत संस्थाओं को इस काम से जोड़ने में कभी नहीं चूकती थीं। उन्होंने अपने काम में ज़बरदस्त आर्थिक और प्रशासनिक क्षमता का प्रदर्शन किया।

स्त्री मज़दूरों ने उनके आह्वान का जवाब दिया : "औद्योगिक मोर्चे पर आगे बढ़ो! पढ़ो, अपनी योग्यता बढ़ाओ।"

नताशा के जीवन का व्यक्तिगत पहलू और एक सच्चे बोल्शेविक की शहादत

समोइलोवा की शादी बोल्शेविक क्रान्तिकारी अर्कांडी अलेक्सान्द्रोविच समाइलोव से हुई थी। उनकी जोड़ी असाधारण रूप से एक-दूसरे के अनुरूप थी, एक साथ काम करने और अपने काम से सीखने वाली जोड़ी। उनकी पहली मुलाक़ात ओदेस्सा में हुई थी और रोस्तोव-ऑन-दोन के मज़दूर तबक़ों के बीच दोनों ने प्रचारक के रूप में एक साथ काम किया था। वे मास्को में साथ-साथ रहे, जहाँ एक ज़माने में समोइलोव मास्को ज़िला पार्टी संगठन के भूमिगत अख़बार 'द स्ट्रगल' के सम्पादक थे। "वर्कर्स क्रॉनिकल" सेक्शन का कार्यभार सँभालकर

समोइलोवा ने भी इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। इसके लिए उन्होंने बहुत-सी सामग्री अपनी यात्राओं के दौरान जुटायी थी। वे साथ-साथ लुगान्स्क गये। वह "अन्तोन" के नाम से काम करते थे और समोइलोवा ने अपना नाम "नताशा" ही बहाल रखा। वे न सिर्फ़ प्यार से बल्कि साझा दृष्टिकोण और प्रयासों से भी परस्पर जुड़े हुए थे। बाद में, 1913 और 1914 में दोनों ने *प्राव्दा* के सम्पादकीय कार्यालय में काम किया। उनके पति "ए. यूरिएव" के उपनाम से लिखते थे।

वकील की हैसियत से समोइलोव ने बहुत-से राजनीतिक मुक़दमों में कॉमरेडों की पैरवी की और वे ट्रेड यूनियनों के क़ानूनी सलाहकार थे।

बहुसंख्य कॉमरेड जो समोइलोवा को उनके काम से जानते थे, हमेशा उनका बहुत सम्मान करते थे और उन्हें "सख़्त नताशा," "दृढ़ निश्चयी बोल्शेविक," "साम्यवाद की अडिग समर्थक," वग़ैरह कहते थे। वह हमेशा आत्मसंयमी रहीं। लेकिन अगर कोई काम उन्हें गम्भीरता से प्रभावित करता था तो वह अपनी सामर्थ्यभर पूरी गहनता से उसे पूरा करती थीं। वह संवेदनशील स्वभाव की थीं, लेकिन भावुक नहीं थीं। वह प्रायः अन्दर तक भावविभोर हो जातीं और उनका चेहरा ओज से दमक उठता और आँखें आसुँओं से भर जातीं।

उनके स्वभाव की यह विशेषता थी कि वह बहुत गहरे तक आन्दोलित हो जाती थीं, सामाजिक घटनाओं से विक्षुब्ध हो उठती थीं और उनकी यही विशेषता उन्हें दूसरे बहुत-से कॉमरेडों से अलग कर देती थी। ये भावनाएँ इतनी गहरी होती थीं कि कभी-कभी उनके अंश सारी ज़िन्दगी बने रह जाते। इसी तरह 1897 में वह वेत्रोवा नामक छात्रा की क़ैद में हुई मृत्यु से विचलित हो गयीं और इस घटना पर समोइलोवा के पहले भाषण ने उनका भविष्य तय कर दिया – उन्होंने क्रान्तिकारी बनने का फ़ैसला कर लिया।

दूसरी घटना जिसने उन्हें अन्दर तक आन्दोलित किया, वह ओदेस्सा का आन्दोलन था। ओदेस्सा की घटनाओं और उनके अपने कटु अनुभवों ने इस तथ्य की ओर से उनकी आँखें खोल दीं कि मेंशेविक लेबर पार्टी के आकाओं के एजेण्ट हैं, कि वे मज़दूरों के दुश्मन हैं। इस अनुभूति ने मेंशेविकों और बिचौलियों के प्रति उनकी रणनीति तय कर दी। वह कभी विचलित नहीं हुई और लेनिन की रणनीतियों की सटीकता को लेकर हमेशा आश्वस्त रहीं। उस समय जबकि अभी समोइलोवा अख़बार की मामूली और अशिक्षित कर्मचारी ही थीं, लेनिन ने विसर्जनवादियों के ख़िलाफ़ उनके वाद-विवाद को स्वीकृति दे दी थी।

हमें 1921 में अस्त्राख़ान में उनके काम की चर्चा अवश्य करनी चाहिए, जिसका समापन उनकी मौत के साथ हुआ।

अस्त्राख़ान के मत्स्य क्षेत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे, क्योंकि ऐसे वक़्त में वे मज़दूरों और लाल सेना के लिए भोजन आपूर्ति के अक्षय स्रोत थे, जबकि कुलकों के वर्गीय प्रतिरोध ने देश की मांस आपूर्ति रोक रखी थी। चरम आर्थिक तनाव के इस दौर में जब 1921 के आसन्न अकाल की छाया तैर रही थी – पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने इन मत्स्य क्षेत्रों के महत्त्व को पहचाना और समोइलोवा को पोत के राजनीतिक विभाग की मुखिया बनाकर, प्रतिरोध स्टीमर, *रेड स्टार* को अस्त्राख़ान भेजा गया।

स्टीमर वसन्त के प्रारम्भ (अप्रैल 1921) में रवाना हो गया ताकि मछलियाँ पकड़ने के वसन्त के मौसम में समय से पहुँच सके, जो वोल्गा के नौचालन योग्य होने, यानी बर्फ के पिघलने और वसन्त की बाढ़ आने के साथ शुरू होता था। अपनी रवानगी से पहले समोइलोवा ने उस ज़िले की आर्थिक क्षमता सम्बन्धी तमाम उपलब्ध आँकड़ों का अध्ययन किया। उससे भी पहले 1918 में जब पूरे रूस में सोवियत सत्ता का संघर्ष चल रहा था, उन्हें अपने कॉमरेड और पति से इन मत्स्य क्षेत्रों के बारे में कुछ बहुत ही सटीक सूचनाएँ मिली थीं, जो 1918 के मछलियाँ पकड़ने के मौसम यानी पतझड़ में वहाँ काम करने गये थे और जिनकी वहीं पर मृत्यु हो गयी थी।

उनकी मृत्यु ने समोइलोवा को बहुत ही गहराई से प्रभावित किया। यह साम्यवाद के लिए एक ऐसे लड़ाके की मृत्यु का अनकहा दृष्टान्त था, जो दुनिया की सबसे बड़ी क्रान्ति का प्रत्यक्ष गवाह रहा था और जिसके लिए उसने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। अजनबियों के बीच, गुप्त शत्रुओं के बीच या उदासीन लोगों के बीच सेमोयलोव अकेले थे। उन्हें पहले पेचिश हो गयी, और उसके बाद जब वह अस्पताल के बिस्तर पर थे, वहाँ उन्हें मीयादी बुखार हो गया और उसी के चलते उनकी मृत्यु हो गयी। और अब अपने ग़म को कलेजे में छिपाये समोइलोवा खुद भी उसी मोर्चे पर रवाना हो रही थीं।

समोइलोव ने मृत्यु से पहले अपने पत्रों में लिखा था कि मछुआरों के बन्दरगाह पर ऐसे लोगों की भरमार है जो हमारे और हमारे निर्माण कार्य के दुश्मन हैं, और ये सभी विभिन्न प्रकार के "विशेष खाद्य संगठनों," "आपूर्ति समितियों" वग़ैरह के निदेशक होने के "प्रमाणपत्रों" से लैस हैं।

स्टीमर के रवाना होते ही समोइलोवा सांगठनिक कार्यों में व्यस्त हो गयीं। उनकी पहल पर स्टीमर पर मौजूद स्त्री कम्युनिस्टों की बैठक बुलायी गयी, एक पार्टी प्रकोष्ठ का गठन किया गया और एक कमेटी चुनी गयी। कमेटी के चुनाव के लिए स्टीमर के कर्मी दल की भी एक आम सभा बुलायी गयी। उन्होंने प्रस्ताव

रखा कि ट्रेड यूनियन कमेटी की मदद से पार्टी प्रकोष्ठ को स्टीमर के कर्मी दल और उस पर मौजूद तमाम लोगों के बीच व्यापक स्तर पर राजनीतिक शिक्षा का काम करना चाहिए।

रेड स्टार ने पहली मई से अपना आन्दोलनात्मक काम शुरू किया। तय किया गया कि सिम्बीर्स्क कारतूस फ़ैक्टरी पर रुका जाये और पार्टी की क्षेत्रीय और ज़िला कमेटियों की ओर से आयोजित हो रहे समारोहों में हिस्सा लिया जाये और शाम को *रेड स्टार* पर एक मीटिंग और संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया जाये। मनोरंजन के लिए *नया मोर्चा* नाम का एक नाटक विशेष रूप से लिखा गया था।

लगभग तीन सौ मज़दूर स्त्री-पुरुष कारतूस फ़ैक्टरी के पास चौराहे पर जमा हुए जहाँ ताज़ा हरी घास बिछायी गयी थी और जिसे बिजली के लैम्पों से सजाया गया था।

इस अवसर पर विशेष रूप से बनाये गये मंच से एक वक्ता ने भाषण दिये। छुट्टी के दिन के कपड़े पहने बहुत-से मज़दूर उदासीन भाव से और बेमन से खड़े थे। अचानक वे भीड़ बनाकर पास आ गये और उनके चेहरे दोस्ताना भाव से दमक उठे, हर्षध्वनि गूँज उठी। समोइलोवा आर्थिक तबाही के ख़िलाफ़ संघर्ष पर अपना पहला भाषण दे रही थीं। ऐसा भाषण जिसे उन्होंने इस यात्रा के दौरान कई बार दुहराया, लेकिन हर बार नये तथ्यों, नयी ऊर्जा, जोश और शक्ति के साथ। शाम को जहाज़ पर भी उन्होंने भाषण दिया जहाँ उन्होंने कारतूस कम्पनी की स्त्री मज़दूरों को सम्बोधित किया। उन्होंने उनमें अपना विश्वास जताया, वह उन्हें आर्थिक तबाही के ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए जगाना चाहती थीं।

सिम्बीर्स्क से रवाना होकर स्टीमर बिना रुके ज़ारित्सिन (बाद में स्तालिनग्राद) पहुँचा। यह पड़ाव विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था क्योंकि अस्त्राख़ान में काम करने वाले मज़दूरों में से बहुत-से ज़ारित्सिन क्षेत्र से आते थे – मुख्यत: कुशल स्त्री मज़दूर। लिहाज़ा, समोइलोवा ने वहाँ एक ग़ैर-पार्टी स्त्री सम्मेलन बुलाने की योजना बनायी थी और ज़ारित्सिन के कॉमरेडों को फोन पर पहले ही इसकी सूचना दे दी गयी थी। ज़ारित्सिन की मज़दूर स्त्रियाँ उनकी पिछली यात्रा के समय से ही उन्हें जानती थीं और एक बार फिर उन्हें सुनने के लिए बड़ी ही उत्सुकता से जमा हुईं। "राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में स्त्री मज़दूर," शीर्षक उनके भाषण ने श्रोताओं में सनसनी भर दी, उनका उत्साह जगा दिया। और बहुत-सी स्त्री मज़दूरों ने मंच पर आकर घोषणा की कि वे संघर्ष में मदद करने के लिए तैयार हैं।

अस्त्राख़ान में "फ़ोरपोस्ट" (मेहनतकशों की आबादी वाला अस्त्राख़ान का

एक उपनगर) से फ़िशरी में काम करने वाली स्त्रियों की प्रतिनिधि आयी थीं। उन्होंने अपनी कठिन कामकाजी परिस्थितियों के बारे में बताया और कहा कि उनके लिए कुछ भी कर पाना नामुमकिन है क्योंकि उन्हें पार्टी की क्षेत्रीय कमेटी से बिल्कुल समर्थन नहीं मिलता। गुस्से से भरकर समोइलोवा ने प्रशासनिक कामकाज के नेता कॉमरेड एरेमेयेव को बुलवाया और उनसे कहा कि इस तरह की काहिली बरतने वालों के साथ "सख़्ती से पेश आयें" और इस बात पर ज़ोर दें कि मछली उद्योग में अपने कामकाज को संगठित करने में स्त्री विभाग की मदद की जाये। वोल्गा के मुहाने के टापुओं में फैली बहुत-सी फ़िशरी में पचास-साठ फ़ीसदी मज़दूर स्त्रियाँ काम करती थीं। स्टीमर ने फ़िशरी वाले इलाक़े का एक चक्कर लगाया।

अस्त्राख़ान में या यह कहना बेहतर होगा कि अस्त्राख़ान की फ़िशरियों में, समोइलोवा ने आन्दोलनात्मक कार्य के साथ एक और काम किया, स्त्री-पुरुष मज़दूरों के हालात की जाँच-पड़ताल का काम, जो उस समय बड़ी तादाद में (लगभग चालीस हज़ार) मत्स्य क्षेत्र में काम करते थे। उन्होंने जी-जान से खुद को इस काम में खपा दिया। हालाँकि मास्को में ही उन्हें वहाँ की मज़दूर स्त्रियों की दुर्दशा और उनके काम की कठिन स्थितियों से आगाह किया गया था लेकिन वहाँ उन्हें जो कुछ देखने को मिला उससे वह हतप्रभ रह गयीं। बीते युग ने, इन दूरदराज़ के द्वीपों में उस दौर की भयावह विरासत छोड़ी थी जब वहाँ पूँजीवादी लोलुपता राज करती थी।

उन्होंने कामकाजी स्त्री-पुरुषों की जीवन परिस्थितियाँ सुधारने के काम में कोताही बरतने के लिए फ़िशरियों के प्रबन्धन और उनकी कमेटियों के साथ-साथ आपूर्ति मज़दूरों की ट्रेड यूनियन के संगठनों पर बार-बार हमला बोला।

शाम की बैठकों में उनकी बातें और भी ज़्यादा असरदार होती थीं जब वे स्त्री और पुरुष मज़दूरों से संगठित होने, सोवियत सत्ता और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मिलकर आर्थिक तबाही के ख़िलाफ़ संघर्ष करने का आह्वान करती थीं।

वह बैरकों में अत्यन्त अस्वास्थ्यकर स्थितियों में रहने वाले बच्चों की स्थिति को लेकर विशेष रूप से चिन्तित थीं। वह बच्चों की संगीत सभाओं या छुट्टियों के लिए कुछ घण्टे निकालने के लिए हमेशा तैयार रहतीं। कभी-कभी हज़ार या इससे भी अधिक बच्चे जमा हो जाते। वह उन्हें कहानियाँ सुनातीं, उनसे बातें करतीं। बच्चों के साथ उनके व्यवहार में ज़बरदस्त धैर्य और उदारता झलकती थी। वह बच्चों की दुर्दशा देखकर नाराज़ थीं और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं और प्रबन्धन के साथ बैठकों में इस मुद्दे पर बहुत ज़ोर देती थीं। बच्चों और मातृत्व की रक्षा के

सवाल पर उन्होंने लाल फ़ीताशाही के प्रति किसी तरह के धैर्य का प्रदर्शन नहीं किया और ठोस क़दम उठाये जाने की माँग की। पूरे मत्स्य क्षेत्र में जहाँ कहीं भी पार्टी प्रकोष्ठ थे वहाँ नर्सरियों और बच्चों की कालोनियों के गठन के प्रयास किये गये। *रेड स्टार* ने कई जगहों पर उनके गठन में मदद की।

लेकिन उपयुक्त जगह और उपकरण और सबसे बढ़कर आवश्यक कर्मचारियों का अभाव इन चीज़ों के लिए लड़ने वालों के सामने सबसे बड़ी बाधा थे। क्षेत्रीय मत्स्य क्षेत्र परिषद उनकी माँगों की अनसुनी करता रहा। केन्द्र का प्रभाव इस दूर-दराज के इलाक़े में अब तक नहीं पहुँचा था। नेतृत्वकारी संगठनों के साथ सम्पर्क के अभाव में पार्टी के सेल और मत्स्य क्षेत्र कमेटियाँ क्षेत्रीय मत्स्य क्षेत्र परिषद के मातहत बनी हुई थीं।

समोइलोवा ने *रेड स्टार* के राजनीतिक विभाग में हुई बैठकों और *रेड स्टार* से छपने वाले अख़बार में लिखे लेखों में भी अपना रोष व्यक्त किया। स्टीमर वोल्गा के मुहाने में जितना आगे बढ़ता गया ये लेख उतने ही अधिक जीवन्त होते गये।

15 मई को वे "ओरेंजरी फ़िशरी" पर पहुँचे। अपने लेख 'स्त्री मज़दूरों ने अपना फ़र्ज़ निभाया है" में समोइलोवा ने लिखा :

"श्वेत गार्ड के दस्युओं ने हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तहस-नहस कर दी, उसे पतन के कगार पर ला खड़ा किया, खेती और उद्योगों को तबाह कर दिया है, मत्स्य क्षेत्रों के कामकाज को अस्त-व्यस्त कर दिया है। हमारे लिए मत्स्य क्षेत्रों में, कीचड़ और पानी में काम करना कठिन है। लाल सेना के लिए भी अपने परिवारों से दूर खन्दकों में डटे रहना आसान नहीं था। लेकिन लाल सेना के सिपाहियों ने समाजवादी पितृभूमि के प्रति अपना फ़र्ज़ पूरा किया और हमारे दुश्मनों को हराया। हम उनके पदचिह्नों पर चलेंगे।"

20 मई को निकितिना फ़िशरी से उन्होंने एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था "ज्ञान ही हमारी शक्ति और हमारी जीत के संकल्प की बुनियाद है।" उन्होंने लिखा :

"स्त्री और पुरुष मज़दूर नये समाजवादी आधार पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को संगठित कर सकें, इसके लिए न सिर्फ़ उनका शिक्षित होना ज़रूरी है बल्कि इसके लिए उनको व्यावसायिक-तकनीकी शिक्षा भी मिलनी चाहिए। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए सोवियत सरकार तकनीकी कोर्स और स्कूलों की व्यवस्था कर रही है। हमें अशिक्षा का ख़ात्मा करना ही होगा जो पुरानी व्यवस्था की अभिशप्त विरासत है। ज्ञान हासिल करके ही हम अपने तमाम दुश्मनों को परास्त कर सकते हैं और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को उसके पैरों पर खड़ा कर सकते हैं।"

उन्होंने अपना आख़िरी लेख 31 मई को फ़्योदोरोव फ़िशरी से लिखा। "जहाँ शिक्षा की दरकार है (राजनीतिक शिक्षा विभाग की आज्ञप्ति)" शीर्षक लेख में वह लिखती हैं :

"अस्त्राखा़न के बहुत-से मत्स्य क्षेत्र शैक्षणिक-सांस्कृतिक कार्य की दृष्टि से रेगिस्तान जैसे हैं। वोल्गा के मुहाने के पास बिखरे, शहर के शैक्षणिक हलक़ों से अलग-थलग इन इलाक़ों को न तो शैक्षणिक हलक़ों से कोई मदद मिलती है और न ही राजनीतिक शिक्षा विभागों से। लेकिन मेहनतकश जनता में हर जगह शिक्षा की प्यास देखी जा सकती है। समूचे मत्स्य क्षेत्र में वयस्कों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए खुद मज़दूरों की पहल पर स्कूल खुल रहे हैं। स्थानीय क्लबों का गठन किया जा रहा है। लेकिन वे बस किसी तरह अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं क्योंकि उनके पास किताबें नहीं हैं, क्लबों में कोई अख़बार नहीं आते और मत्स्य क्षेत्रों के मज़दूरों को पता नहीं रहता कि दुनिया में क्या चल रहा है। यह सच है कि किताबों की कमी का कारण आम आर्थिक तंगी है जिससे हम गुज़र रहे हैं। राजनीतिक शिक्षा विभाग के पास निश्चित तादाद में स्कूली किताबें हैं और वह स्कूलों में कुछ किताबें मुहैया भी कराता है। आज चालीस हज़ार स्त्री-पुरुष मज़दूरों को व्यापक सांस्कृतिक-शैक्षणिक काम की दरकार है, ख़ासकर तब जबकि मत्स्य क्षेत्र गणराज्य की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए इतने महत्त्वपूर्ण हो गये हैं।

"पार्टी, ट्रेड यूनियनों और शैक्षणिक संस्थानों को इस मेहनतकश अवाम की शिक्षा पर सबसे ज़्यादा ध्यान देना चाहिए।"

यह उनका अन्तिम लेख था।

मई 31 को समोइलोवा ने अपना आख़िरी भाषण दिया। वह फ़्योदोरोव फ़िशरी में गयीं और स्त्रियों से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका की चर्चा की। उसी दिन शाम को वह बीमार पड़ गयीं और दो दिन बाद उनकी मृत्यु हो गयी।

अस्त्राखा़न में समोइलोवा को एक और दिल तोड़ देने वाला अनुभव हुआ था। एक सम्मेलन में उनके पास भेजी गयी चिटों में से एक कॉमरेड श्पाकोवा की थी जिन्होंने उनसे व्यक्तिगत मुलाक़ात का अनुरोध किया था। श्पाकोवा उस समय पेत्रोग्राद की एक सक्रिय स्त्री मज़दूर हुआ करती थीं, जब समोइलोवा ने संघर्ष के शुरुआती दिनों में वहाँ स्त्रियों को संगठित किया था। समोइलोवा ने उन्हें फ़ौरन *रेड स्टार* पर आमन्त्रित किया जहाँ श्पाकोवा ने उन्हें अपनी कहानी सुनायी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी से सम्बद्ध स्त्री मज़दूरों के केन्द्रीय संगठन की ओर से कुछ और कॉमरेडों के साथ श्पाकोवा को मत्स्य क्षेत्र में काम करने के लिए भेजा गया था। इन सभी को वहाँ अनजानी और कठिन

परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। वे अस्त्राख़ान की क्षेत्रीय पार्टी कमेटी से अलग-थलग पड़ गये थे। वे वोल्गा के मुहाने के विभिन्न सुनसान द्वीपों में बिखरे हुए थे, जो पार्टी कार्य की दृष्टि से सचमुच वीरान ही थे; और चारों ओर से शत्रुतापूर्ण तत्त्वों से घिरे हुए थे; जल्द ही उनके समूह के भीतर नेतृत्व नाम की कोई चीज़ नहीं बची। उनकी क़तारों की आपसी एकजुटता कमज़ोर पड़ गयी। वे सब ओर से कट-से गये और आपसी सम्पर्क की कमी से बिखराव के शिकार हो गये। समोइलोवा के सरोकार और कॉमरेडाना ध्यान से प्रभावित होकर श्पाकोवा ख़ुद को रोक न सकीं। वह सब कुछ कह देना चाहती थीं, सारी कहानी सुना देना चाहती थीं। वह अपनी हालत का बयान करते हुए रो पड़ीं। उनके पास वास्तव में कुछ भी नहीं था। समोइलोवा दंग रह गयीं। उन्होंने श्पाकोवा को *रेड स्टार* पर साथ ले चलने का फ़ैसला कर लिया लेकिन जब तक स्टीमर आया तब तक श्पाकोवा के लिए काफ़ी देर हो चुकी थी। समोइलोवा से मिलने के अगले ही दिन उनकी मृत्यु हो गयी। वह अस्त्राख़ान में हैज़े का पहला शिकार थीं। उनकी मौत से समोइलोवा को भारी सदमा लगा। लेकिन समोइलोवा को ख़ुद भी हैज़ा हो गया और 2 जून को उनकी मृत्यु हो गयी।

ज़ारशाही की देन तीन महाविपत्तियों – ग़रीबी, अज्ञान और दमन – पर पलने वाले दुश्मन के ख़ूनी पंजे ने पेत्रोग्राद की स्वस्थ, युवा और उत्साही स्त्री कार्यकर्त्ता श्पाकोवा को छीन लिया। उसी दुश्मन ने दिल से हमेशा युवा और क्रान्तिकारी ऊर्जा से भरपूर अदम्य योद्धा समोइलोवा की भी जान ले ली।

कम्युनिस्ट पार्टी ने अस्त्राख़ान के मत्स्य क्षेत्र के सोवियतीकरण की कठिन लड़ाई को जारी रखा।

समोइलोवा और उनके पति ने सहज वर्गीय बोध से सही मूल्यांकन किया था कि अस्त्राख़ान मत्स्य क्षेत्र के काम में "विरोधी तत्त्व" घुस आये हैं। अतीत में यही मत्स्य क्षेत्र अपने पूँजीवादी मालिकों को ज़बर्दस्त मुनाफ़ा देता था। पुराने मालिकों के वफ़ादार कारिन्दों ने केन्द्र से लम्बी दूरी और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर मत्स्य क्षेत्र में अपनी जड़ें जमा लीं और सोवियत सरकार के निर्माण कार्यों को तबाह कर डाला।

वर्ष 1926 में जाकर कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सोवियत सरकार व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बहाल करने और फिर उसका पुनर्निर्माण करने के काम को ठीक तरह से सम्भाल सकी। अस्त्राख़ान से तोड़-फोड़ करने वालों को उखाड़ फेंका गया और सम्पूर्ण आर्थिक-सामाजिक पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ।

अस्त्राख़ान मत्स्य क्षेत्र के विनाशकारियों के मामले की गूँज पूरे सोवियत संघ में सुनी गयी; लेकिन तोड़-फोड़ की इस कार्रवाई के अन्तिम स्रोत अस्त्राख़ान में नहीं तलाशे जा सकते थे।

जब बड़े अन्तरराष्ट्रीय मुक़दमे शुरू हुए, 'इण्डस्ट्रियल पार्टी' और मेंशेविकों के ख़िलाफ़ मुक़दमे चले तब यह तथ्य सामने आया कि अस्त्राख़ान मत्स्य क्षेत्र में चल रही तोड़-फोड़ के तार विदेश में, रूसी पूँजीपतियों तक फैले हुए हैं, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग पनाह दिये हुए था।

लेकिन मेहनतकश वर्ग, यानी समाजवाद का निर्माण कर रहे करोड़ों स्त्री-पुरुष मज़दूर विजयी भाव से सभी पुरानी चीज़ों को, जिनके दिन लद चुके हैं, झाड़ू मारकर परे हटा रहे हैं। उन्होंने इस समृद्ध क्षेत्र में द्नीप्रोस्त्रोय और कुज़्बास की टक्कर का मज़दूरों का शहर खड़ा कर लिया है, और यह शहर उस कॉमरेड का सबसे उपयुक्त स्मारक है जो इस संघर्ष में शहीद हो गयी, यह शहर अदम्य बोल्शेविक वीरांगना नताशा की सर्वश्रेष्ठ यादगार है।

• • •

परिशिष्ट

अक्टूबर क्रान्ति के दिनों की वीरांगनाएँ

अलेक्सान्द्रा कोल्लोन्ताई

वे कौन स्त्रियाँ थीं, जिन्होंने महान अक्टूबर क्रान्ति में हिस्सा लिया था? क्या वे अलग-अलग व्यक्ति थीं? नहीं, उनकी संख्या बहुत बड़ी थी; दसियों, सैकड़ों-हज़ारों अनाम नायिकाएँ जिन्होंने लाल झण्डे और सोवियतों के नारे के पीछे मज़दूरों और किसानों के कन्धे से कन्धा मिलाकर मार्च करते हुए धर्मकेन्द्रित ज़ारशाही के ध्वंसावशेषों के ऊपर से गुज़रकर एक नूतन भविष्य में प्रवेश किया...।

यदि कोई पीछे मुड़कर अतीत पर नज़र डाले तो वह उन्हें देख सकता है – इन अनाम नायिकाओं की आबादी को, जिन्हें अक्टूबर ने भूख से मरते शहरों और लड़ाई में लूटे गये ग़रीब गाँवों में पाया था... सिर पर रूमाल बाँधे (हालाँकि इनमें लाल रूमाल अभी बहुत कम ही थे), घिसा हुआ घाघरा और रूई भरा जाड़े का जैकेट पहने... जवान और वृद्ध, मज़दूरिनें और सिपाहियों की पत्नियाँ, किसान स्त्रियाँ और शहर के ग़रीबों की गृहणियाँ। इनमें दफ़्तरों में काम करने वाली या अन्य पेशों में लगी स्त्रियाँ, शिक्षित और सुसंस्कृत स्त्रियाँ कम, ख़ासतौर पर इन दिनों में, बहुत ही कम थीं। लेकिन लाल झण्डे को अक्टूबर की विजय तक पहुँचाने वालों में बुद्धिजीवी वर्ग से आयी स्त्रियाँ भी थीं – अध्यापिकाएँ, दफ़्तरों में काम करने वाली स्त्रियाँ, हाई स्कूलों और विश्वविद्यालयों की तरुण छात्राएँ, चिकित्सकाएँ। वे खुशी-खुशी, निस्स्वार्थ भाव से और निश्चित उद्देश्य के साथ चलती गयीं। जहाँ भी उन्हें भेजा गया, वे गयीं। मोर्चे पर? उन्होंने सिपाही की टोपी लगायी और लाल सेना की योद्धा बन गयीं। अगर उन्होंने बाँहों पर लाल पट्टियाँ लगा लीं तो वे गात्विना (लेनिनग्राद के पास का एक उपनगर) में केरेंसकी के विरुद्ध लाल सेना की मदद के लिए प्राथमिक चिकित्सा स्टेशनों की ओर लपक रही होती थीं। वे सेना की संचार व्यवस्था में काम करती थीं। वे बेहद ज़िन्दादिली के साथ काम करती थीं। इस विश्वास से भरी हुई कि कोई भारी महत्त्व की चीज़ घटित हो रही है और हम सब एक ही क्रान्तिकारी कार्रवाई के हिस्से हैं।

गाँवों में किसान स्त्रियों ने, जिनके पति मोर्चे पर भेज दिये गये थे, भूस्वामियों से ज़मीन छीन ली और अभिजातों को उनके घोंसलों से बाहर खदेड़ दिया जिनमें वे सदियों से पल रहे थे।

जब भी अक्टूबर की घटनाओं का स्मरण किया जाता है तो अलग-अलग चेहरे नहीं, बल्कि जनसमूह दिखायी पड़ते हैं। असंख्य जनसमूह, मानवता की लहरों की तरह। पर जहाँ भी नज़र डाली जाये स्त्रियाँ दिखायी देती हैं – बैठकों में, सभाओं में, प्रदर्शनों में...। अभी वे निश्चित नहीं हैं कि वे ठीक-ठीक क्या चाहती हैं, किसके लिए वे प्रयासरत हैं। लेकिन वे एक चीज़ जानती हैं : वे अब युद्ध को और बर्दाश्त नहीं करेंगी। और न ही वे भूस्वामियों और अमीरों को चाहती हैं... 1917 के वर्ष में मानवता का महासमुद्र उफनता और हिलोरें लेता है, और उस महासमुद्र का एक भारी हिस्सा स्त्रियों से बना हुआ है...

एक दिन इतिहासकार क्रान्ति की उन अनाम नायिकाओं के कारनामों के बारे में लिखेगा जो मोर्चे पर मारी गयीं, जिन्हें श्वेत गार्डों ने गोली से उड़ा दिया, जिन्होंने क्रान्ति के बाद आने वाले पहले वर्षों के अनगिनत अभावों को झेला, लेकिन सोवियत सत्ता और कम्युनिज़्म के लाल निशान को ऊँचा उठाये रखा। इन्हीं अनाम नायिकाओं के प्रति, जो मेहनतकश लोगों के लिए एक नया जीवन हासिल करने के लिए अक्टूबर क्रान्ति के दौरान शहीद हुईं, युवा गणतन्त्र सम्मान में अपना सिर झुकाता है, जबकि इसके ज़िन्दादिल और उत्साही युवा लोग समाजवाद के आधारों के निर्माण में लग रहे हैं।

आज से कई साल बाद जब इतिहासकार अक्टूबर क्रान्ति और इसके नेता लेनिन के बारे में लिखेंगे तो स्काफ़ों और घिसी टोपियों से ढँके स्त्रियों के सिरों के इस समुद्र में से उभरने वाली छवियों पर अनिवार्यत: उनका विशेष ध्यान जरूर जायेगा।

सबसे पहले जो छवि उभरती है, वह है लेनिन की वफ़ादार संगिनी **नादेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना क्रूप्सकाया** की – अपनी सादी, स्लेटी पोशाक पहने हुए, हमेशा पृष्ठभूमि में रहने का प्रयास करते हुए। वे बिना किसी का ध्यान आकर्षित हुए, चुपचाप किसी बैठक में प्रवेश कर जातीं और किसी खम्भे के पास खड़ी हो जातीं। पर वे एक-एक चीज़ देखती और सुनती थीं, जो कुछ भी हो रहा होता, उसका अध्ययन करते हुए, ताकि फिर वे व्लादीमिर इल्यीच को पूरा विवरण दे सकें, अपनी सटीक टिप्पणियाँ जोड़ सकें और कोई युक्तिपूर्ण, उपयुक्त और उपयोगी विचार सुझा सकें। उन दिनों नादेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना उन ढेरों तूफ़ानी बैठकों में नहीं बोलती थीं जिनमें लोग इस महान प्रश्न पर बहस करते थे कि सोवियत सत्ता जीतेगी या नहीं? परन्तु वे अनथक रूप से व्लादीमिर इल्यीच के

दाहिने हाथ की तरह काम करती थीं और कभी-कभी पार्टी बैठकों में कोई संक्षिप्त पर प्रभावकारी वक्तव्य देती थीं। भयंकर विपत्ति और ख़तरे के क्षणों में भी, जब अनेक मज़बूत कॉमरेड हिम्मत हार बैठे और संशय के शिकार हो गये, नादेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना हमेशा वैसी ही बनी रहीं – लक्ष्य की सत्यता और इसकी निश्चित विजय के प्रति पूर्ण आश्वस्त। वे अडिग आस्था का स्रोत थीं, और जो कोई भी अक्टूबर क्रान्ति के महान नेता की इस सहचरी के सम्पर्क में आता था, उस पर विनम्रता के आवरण में ढँकी व्यक्तित्त्व की यह दृढ़ता हमेशा ही एक स्फूर्तिदायक प्रभाव छोड़ती थी।

एक दूसरी छवि उभरती है – और वह है लेनिन की एक और वफ़ादार साथी, भूमिगत कार्य के कठिन वर्षों की विश्वस्त दोस्त, पार्टी की केन्द्रीय समिति की सेक्रेटरी – **येलेना द्मीत्रियेव्ना स्तासोवा** की। स्पष्ट, बुद्धिमत्तापूर्ण और अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक काम करने की असाधारण क्षमता, और किसी काम के लिए सटीक आदमी ढूँढ़ निकालने की विशिष्ट योग्यता। उनकी लम्बी, मूर्तिवत आकृति पहले ताव्रिचेस्की प्रासाद (1917 में मज़दूरों और सिपाहियों की पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक जहाँ हुई थी) की सोवियत में, फिर क्शेसिन्स्काया (फ़रवरी क्रान्ति के बाद बोल्शेविक पार्टी की पीटर्सबर्ग कमेटी की बैठक बैले नर्तकी क्शेसिन्स्काया के घर पर हुई थी) के घर में और अन्ततः स्मोल्नी में देखी जा सकती थी। अपने हाथों में वे एक नोटबुक लिये होती थीं और उनके चारों तरफ़ मोर्चे से आये कॉमरेडों, मज़दूरों, लालगार्डों, महिला श्रमिकों और पार्टी तथा सोवियतों का समूह किसी तेज़, स्पष्ट उत्तर या निर्देश की प्रतीक्षा में जमा रहता था। स्तासोवा अनेक महत्त्वपूर्ण मामलों की ज़िम्मेदारी सँभालती थीं, किन्तु यदि उन तूफ़ानी दिनों में कोई साथी किसी विपत्ति या परेशानी में होता था तो वे तत्काल ध्यान देती थीं। वे तत्काल ही उसका कोई संक्षिप्त, ऊपर से रूखा-सा लगने वाला जवाब देती थीं और खुद भी जितना बन पड़े करती थीं। वे कामों के बोझ से दबी रहती थीं और हमेशा अपनी जगह पर चुस्त रहती। हमेशा अपनी जगह पर... कभी भी अगली क़तार में और प्रतिष्ठा के घेरे में आने का प्रयास न करते हुए। वे कभी भी लोगों के ध्यान के केन्द्र में होना पसन्द नहीं करती थीं। उनकी सारी चिन्ता खुद के लिए नहीं, बल्कि उद्देश्य के लिए थी। कम्युनिज़्म के महान और लम्बे समय से संजोये हुए उद्देश्य के लिए, जिसके लिए येलेना स्तासोवा ने निर्वासन और ज़ारशाही जेलों की क़ैद भोगी जिसने उनके स्वास्थ्य को बुरी तरह तोड़ डाला... उद्देश्य के नाम पर वे वज्र की तरह कठोर थीं, किन्तु अपने साथियों के प्रति वे ऐसी संवेदनशीलता और सहानुभूति प्रदर्शित करती थीं, जो

केवल एक स्नेही और उदारहृदय नारी में ही हो सकती है।

क्लॉदिया निकोलायेवा बहुत साधारण घर से आयी एक मज़दूर थीं। वे 1908 में ही, प्रतिक्रिया के वर्षों में बोल्शेविकों के साथ हो गयी थीं, और निर्वासन और क़ैद झेल चुकी थीं। 1917 में वे लेनिनग्राद लौट आयीं और मेहनतकश स्त्रियों की पहली पत्रिका 'कम्युनिस्तका' का हृदय बन गयीं। वे अभी भी युवा थीं और आवेग तथा अधैर्य से भरी हुई थीं। किन्तु उन्होंने लाल झण्डे को मज़बूती से थामा और निडरतापूर्वक घोषणा की कि मज़दूर स्त्रियों, सिपाहियों की पत्नियों और किसान स्त्रियों को पार्टी में लाना चाहिए। स्त्रियो! काम पर चलो! सोवियतों और कम्युनिज़्म की रक्षा के लिए चलो!

जब वे बैठकों में भाषण देती थीं तो कुछ अधीर और खुद के प्रति पूर्ण आश्वस्त नहीं होती थीं, किन्तु फिर भी दूसरों को अपना अनुसरण करने के लिए आकर्षित करती थीं। वे उन लोगों में से एक थीं, जिन्होंने क्रान्ति में स्त्रियों की व्यापक सामूहिक हिस्सेदारी का रास्ता तैयार करने में आने वाली सारी कठिनाइयाँ अपने कन्धों पर झेली थीं। वे उनमें से एक थीं जो एक साथ दो मोर्चों पर लड़े – सोवियतों और कम्युनिज़्म के लिए और उसी समय स्त्रियों की मुक्ति के लिए भी। क्लॉदिया निकोलायेवा और **कांकोर्दिया समोइलोवा**, जो क्रान्ति के कामों के दौरान हैजे से मर गयीं, के नाम मेहनतकश स्त्रियों के आन्दोलन के पहले और सर्वाधिक कठिन क़दमों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। कांकोर्दिया समोइलोवा अद्वितीय निस्स्वार्थता वाली पार्टी कार्यकर्त्ता थीं। वे एक बढ़िया, व्यावहारिक वक्ता थीं और मज़दूर स्त्रियों का दिल जीतना चाहती थीं। जिन्होंने उनके साथ काम किया है, वे लम्बे समय तक कांकोर्दिया समोइलोवा को याद रखेंगे। वे बिल्कुल सादी पोशाक पहनती थीं और सरल व्यवहार करती थीं, किन्तु निर्णयों का कार्यान्वयन पूरी निष्ठा के साथ करती थीं – खुद के साथ और दूसरों के साथ भी पूरी सख़्ती बरतते हुए।

इनेस्सा आरमाँ की सौम्य और मोहक छवि विशेष रूप से ध्यान खींचती है, जिन पर अक्टूबर क्रान्ति की तैयारी में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पार्टी कार्य सौंपा गया था और जिन्होंने उसके बाद स्त्रियों के बीच चलाये गये काम में अनेक रचनात्मक विचारों का योगदान किया। अपने व्यवहार की समस्त नारी सुलभ कमनीयता और सौम्यता के बावजूद इनेस्सा आरमाँ अपने विश्वासों पर अटल थीं और जिसे सही समझती थीं उसकी रक्षा विकट विरोधियों के सामने भी कर सकने में समर्थ थीं। क्रान्ति के बाद इनेस्सा आरमाँ ने खुद को स्त्रियों का व्यापक आन्दोलन संगठित करने में समर्पित कर दिया और स्त्रियों की प्रतिनिधि सभा उन्हीं की रचना है।

मास्को में अक्टूबर क्रान्ति के कठिन और निर्णायक दिनों में **वार्वरा निकोलायेवा** ने भारी काम किया था। बैरिकेडों की लड़ाई में उसने पार्टी हेडक्वार्टर के नेता के योग्य दृढ़संकल्प का परिचय दिया। बहुत सारे साथियों ने बताया कि उस समय उनके दृढ़ संकल्प और अडिग साहस ने उन्हें हिम्मत बँधायी जो विचलित हो रहे थे और हिम्मत हार बैठे लोगों को प्रेरित किया – 'आगे बढ़ो!' विजय तक।

महान अक्टूबर क्रान्ति में भाग लेने वाली स्त्रियों को याद करते हुए मानो जादू से स्मृति से एक के बाद एक नाम और चेहरे उभरते आते हैं। क्या आज हम **वेरा स्लुत्स्काया** की स्मृति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने में चूक सकते हैं जोकि निस्स्वार्थ भाव से क्रान्ति की तैयारी में काम करती रहीं और पेत्रोग्राद के निकट लाल मोर्चे पर कज़्ज़ाकों की गोली से मारी गयीं।

क्या हम **येव्गेनिया बॉश** को, उसके आग्नेय मिजाज को भूल सकते हैं, जो हर समय लड़ाई के लिए उत्सुक रहती थीं। वे भी क्रान्ति में अपने नियत स्थान पर लड़ती हुई मरीं।

क्या हम लेनिन के जीवन और कार्यों से नज़दीकी से जुड़े दो नामों – उनकी दो बहनों और विश्वस्त साथियों – **आन्ना इलिनिच्ना येलिज़ारोवा** और **मारिया इलिनिच्ना उल्यानोवा** का उल्लेख यहाँ छोड़ सकते हैं?

और मास्को की रेलवे वर्कशापों की **कॉमरेड वार्या**? हमेशा जीवन्त, हमेशा जल्दी में। और लेनिनग्राद की कपड़ा मज़दूर **फ़्योदोरोवा**, उसके खुशनुमा चेहरे और बैरिकेडों पर लड़ने के समय उसकी निर्भयता को क्या हम भूल सकते हैं?

उन सबके नाम गिनाना असम्भव है। और न जाने कितनी तो अनाम हैं। अक्टूबर क्रान्ति की नायिकाएँ एक पूरी सेना के बराबर थीं और नाम भले ही भूल जायें पर उस क्रान्ति की जीत में और आज सोवियत संघ में और स्त्रियों को मिली उपलब्धियों और अधिकारों के रूप में उनकी निस्स्वार्थता जीवित रहेगी।

यह एक स्पष्ट और निर्विवाद तथ्य है कि स्त्रियों की हिस्सेदारी के बिना अक्टूबर क्रान्ति में लाल झण्डे की विजय नहीं हो सकती थी। अक्टूबर क्रान्ति में लाल झण्डे के नीचे मार्च करने वाली स्त्रियाँ ज़िन्दाबाद! स्त्रियों को मुक्ति दिलाने वाली अक्टूबर क्रान्ति ज़िन्दाबाद!

• • •